PRINTED BOOK–POST
MANAVTA MANDIR, HOSHIARPUR
(REGD. 26265/ 74 PB.–HSP./ 7/ 2015–17)

परमसंत परमदयाल पंडित फकीर चंद जी महाराज
का आध्यात्मिक संकल्प

MANAVTA MANDIR
Manavta Mandir Road, Hoshiarpur–146001, Punjab
Contact : +91 1882–243154, 502154

मानव मन्दिर

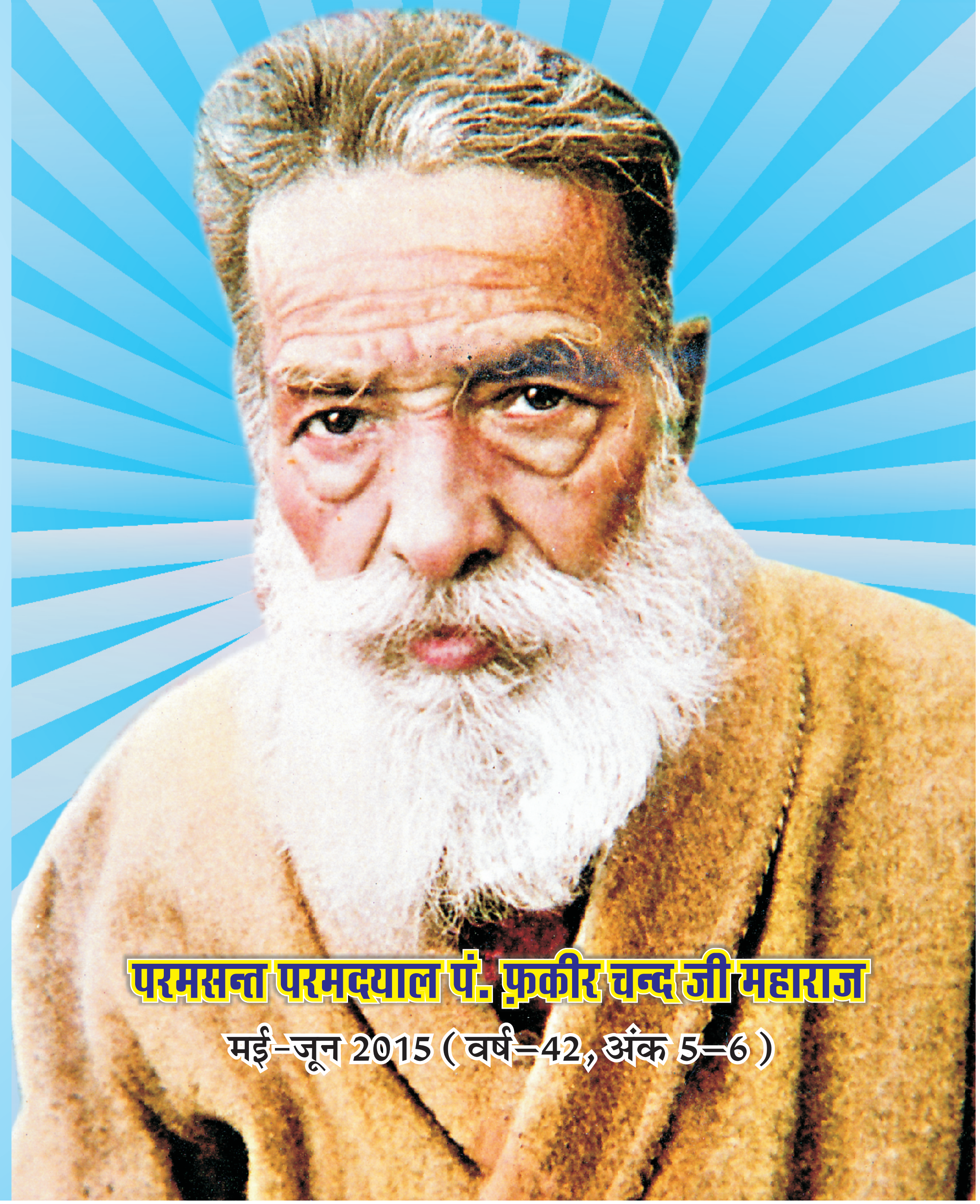

परमसन्त परमदयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज

मई–जून 2015 (वर्ष–42, अंक 5–6)

मानवता मन्दिर की संत-परम्परा

परमसंत दातादयाल डॉ. शिवब्रत लाल जी महाराज

परमसंत परमदयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज

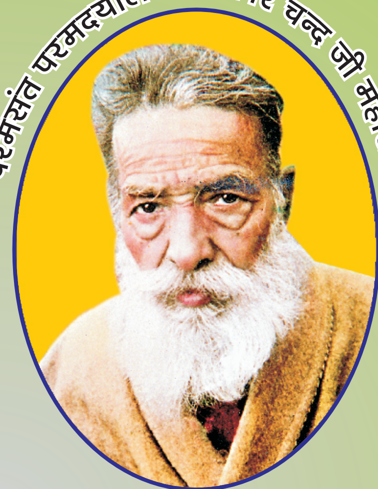

परमसंत मानवदयाल डॉ. आई. सी. शर्मा जी महाराज

हजूर श्री दयाल कमल जी महाराज

वैशाखी पर्व 2015, पर दयाल कमल जी महाराज सत्संग देते हुए।

वैशाखी पर्व 13-4-2015 को सत्संग का आनन्द उठाते हुए सत्संगी जन।

मन्दिर के कर्मचारी गुरूप्रशाद को उनकी बेटी की शादी के लिए मानवता-मन्दिर
द्वारा 13-4-2015 को सहायता प्रदान करते हुए दयाल कमल जी महाराज

मानव मन्दिर

मई-जून, 2015 (वर्ष–42, अंक 5–6)

विश्व में मानव-मात्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक कल्याए और विकास की सेवा में संलग्न पत्रिका

संस्थापक : परमसन्त परमदयाल पं. फ़कीरचन्द जी महाराज

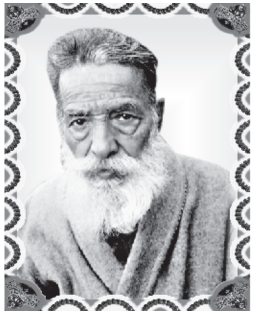

● प्रबन्धक सम्पादक :

श्री ब्रह्मशंकर जिम्पा (प्रधान)

(+91 94177-66913)

● प्रकाशक :

श्री राणा रणबीर सिंह

(जनरल सैक्रेटरी)

+91 94631-15977, +91 97791-05905

E–MAIL : ranbirrahal@outlook.com

अनुक्रमणिका

1.	मानवता मन्दिर में वैशाखी महोत्सव	2
2.	दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महराज : अपनी दौलत को बढ़ाओ	5
3.	परमसन्त हज़ूर परमदयाल पं. फकीर चन्द जी महाराज	13
4.	परम सन्त परम दयाल पं० फ़कीर चन्द जी महाराज : मेरा अनुभव	32
5.	सत्संग : परमसन्त हज़ूर मानव दयाल डा. ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज	61
6.	सत्संग : सत्संग दयाल कमल जी महाराज	73
7.	आभार प्रदर्शन	91

संपादक एवं ट्रस्ट अपनी पूर्व सन्त-परम्परा के विचारों के प्रति समर्पित है। शेष आचार्यों के विचार उनके व्यक्तिगत हैं, उनसे सहमति अनिवार्य नहीं।

FAQIR LIBRARY CHARITABLE TRUST (REGD.)

Manavta Mandir, Manavta Mandir Road,
Hoshiarpur–146001 (Pb.) Ph.: 01882–243154
e–mail : manavtamandirhsp@gmail.com
web : www.manavtamandirhsp.com
facebook.com/manavtamandirhsp

मानवता मन्दिर में
वैशाखी महोत्सव

सद्गुरू के द्वारा बतलाए गए मार्ग पर नित्य की जीवन-यात्रा में चलते हुए साधक के सामने अनेक शंकाएँ और कठिनाईयाँ आ जाती हैं जिनके निवारण और अपने उत्साह को बल देने के लिए सद्गुरु के साक्षात् सत्संग और समीपता की आवश्यकता होती है। उसे ध्यान में रखते हुए परम सन्त हजूर परमदयाल पंडित फकीर चन्द जी महाराज ने वर्ष में एक बार उल्लास के पर्व वैशाखी पर मानवता मन्दिर, होशियारपुर में वार्षिक उत्सव की परम्परा आरम्भ की, जो निरन्तर आज तक चल रही है। 'मानव-मन्दिर' पत्रिका में प्रकाशित खुले निमन्त्रण पर हर वर्ष देश-विदेश के विभिन्न भागों से भारी संख्या में साधक सत्संगी और श्रद्धालु मानवता-मन्दिर, होशियारपुर में 12 अप्रैल से 14 अप्रैल तक एकत्रित होते हैं।

यह दिन सभी साधकों, भक्तों के लिए संध्यावन्दन का दिन है, पूजा और अर्चना का दिन है, संकल्प-समर्पण का दिन है, दर्शन और प्रबोधन का दिन है, नामदान की कृपा का दिन है, गुरु के प्रति प्रेम प्रकट करने का दिन है और आत्मलाभ के लिए श्रद्धा का दिन है, भावना और भक्ति का दिन है।

जाति, पंथ, वर्ण, वर्ग तथा किसी भी भेदभाव से रहित '**मनुष्य बनो**' का युगान्तरकारी सन्देश मानवता-मन्दिर का मुख्य उद्देश्य है जो सभी धर्माचार्यों-हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध या किसी भी मत में हों- के कल्याणकारी विचारों का समान आदर करता है तथा विश्व-बन्धुत्व की चिन्तन-धारा को मज़बूत करते हुए मानवता को विश्व का एकमात्र धर्म घोषित करता है।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष का महासम्मेलन दयाल कमल जी महाराज की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इसमें अनेक अन्य मानवता मन्दिर केन्द्रों से आदरणीय आचार्यगण पधारे। दयाल कमल जी महाराज ने मानव-एकता और आध्यात्मिक स्वतंत्रता पर विचार प्रकट करते हुए आशीर्वाद के रूप में परमदयाल जी महाराज के शब्दों को दोहराया **''सच्चे दिल से दुआ देता है यह फकीर खुश रहो, बासेहत रहो और अमीर दिल में रहो''।**

''एक आस और विश्वास तेरे अन्तर है हर वक्त जाते फकीर।'' श्री गुरु नानक देव जी की वाणी का उदाहरण देते हुए उन्होंने मानव एकता का सन्देश फरमाया-

घट में है सुझत नहीं, लानत ऐसी जिंद।
नानक इस संसार को, हुआ मोतिया बिंद॥

हमस बम ानवह ैं,उ सकेब ादक, छअ ार,म ानवताक ाइ ांडा मानवता मंदिर में लहराते हुए यही सन्देश देता है।

श्री ब्रह्मशंकर जिम्पा (प्रधान F. L. C. T.), राणा रणबीर सिंह (सचिव) व समस्त ट्रस्टीगणों के अथक परिश्रम व दिशा-निर्देशों के अनुसार वैशाखी पर्व का प्रबन्ध सुनिश्चित किया गया। ट्रस्ट की वार्षिक रिपोर्ट का ब्यौरा सभी सत्संगियों को सुनाया गया व उसकी लिखित प्रति सभी के ध्यान हेतू सूचना पट्ट पर लगाई गई। परमदयाल जी महाराज की शिक्षा के अनुसार मानवता-मन्दिर में गरीब कन्याओं की शादी के लिए सहायता, विधवाओं की मासिक सहायता, गरीब बच्चों की आर्थिक सहायता जैसे कि फीस माफी, मुफ्त School Uniforms का वितरण, होनहार विद्यार्थियों के लिए मासिक अनुदान व गरीब रोगियों के लिए दवाई आदि की तरफ विशेष ध्यान दिया जाता है।

सत्संगियों के लाभ के लिए सन्तमत से सम्बन्धित साहित्य तथा सत्संगों की MP3 तथा Video CDs के साथ-साथ साधना में सहायक सामग्री के विक्रय के लिए भी स्टाल लगाए गए। आये हुए अतिथियों

की सेवा में मानवता-मन्दिर होशियारपुर के अधिकारी और सेवक दिन-रात जुटे रहे। होम्योपैथिक डिस्पैंसरी के इंचार्ज तथा शिव देव राव स्कूल की अध्यापिकाओं तथा विद्यार्थियों ने भी इस रूहानियत महोत्सव में निरन्तर सेवा की। तीन दिन तक सभी सत्संगियों के रहने और भोजन की व्यवस्था की गई।

वैशाखी पर जैसे वसंत ऋतु का उल्लास पंजाब के जन-जीवन तथा संस्कृति को अनूठा रंग देता है, उसी प्रकार मानवता-मंदिर, होशियारपुर में वैशाखी पर्व आध्यात्म, सत्संग, ध्यान, शंका-समाधान तथा सामूहिक सेवा जैसे सुमधुर पुष्पों की बहार लेकर आया। अगामी वर्ष में भी यह सन्त-समागम और साधना-संकल्प का महापर्व स्मृति बनकर जीवन में उत्साह और उल्लास का सौरभ बिखेरता रहे-ऐसी कामना है।

●

गुरू पूर्णिमा महोत्सव

हजूर दयाल कमल जी महाराज की अध्यक्षता में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी मानवता मन्दिर, होशियारपुर में गुरू पूर्णिमा महोत्सव दिनाँक 2 जुलाई, 2015 दिन वीरवार को हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है। इस महोत्सव में देश के कोने-कोने से मानवता धर्म के अनुयायी पधार रहे हैं, जो अपने अनुभवों से उपस्थित जनसमूह को कृतार्थ करेंगे।

सभी सत्संगी इस महोत्सव पर सादर आमंत्रित हैं।

(M) : 094631-15977 **— जनरल सैक्रेटरी**

सत्संग

दाता दयाल
महर्षि शिवव्रत लाल जी महराज

अपनी दौलत को बढ़ाओ
(सत्संग अक्तूबर 3,1930)

लेना हो सो जल्द ले, कही सुनी मत मान।
कही सुनी युग- युग चले, आवागमन बंधान॥
लेना हो सो जल्द ले, अगमा पाई देह।
आगे हाट न वाणिया, लेना हो सो ले॥
लेना हो सो जल्द ले, वाद-विवाद को छोड़।
लेने को चित्त दे सदा, बातों से मुँह मोड़॥

मुन्नी , ठाकुर हनुमान सिंह सहिब की लड़की है। उसकी उमर ढ़ाई साल या इससे कुछ अधिक होगी। छः सात महीने हुये जब मैं जालन्धर में आया था, मैंने उसे अपनी ओर लगाना चाहा परन्तु वह मेरी ओर आकर्षित नहीं हुई और मुझसे दूर भागती थी। इस बार जब मैं दोबारा यहाँ आया वह स्वयं मेरी आँखों को देखकर, मेरे पास आई

मैंने पूछा 'तू कौन है' ? उसने कहा, 'मैं मुन्नी हूँ।' मैंने फिर पूछा, 'मुन्नी कहाँ रहती है?'

उसने अपने अंगूठे के पास की ऊँगली अपने सीने के बीच रख कर जबाव दिया, 'मुन्नी यहाँ रहती है।'

मैं मुन्नी का जबाव सुनकर हैरान रह गया। मेरे दिल में तरह - तरह के विचार आये। सोचा क्या कारण है कि पहले मुन्नी मेरे बुलाने पर भी मेरे पास नहीं आती थी और अब वह मेरे बिना बुलाए ही मेरे पास दौड़ी चली आई। आज मुझे यहाँ आए हुए दूसरा दिन है। वह घूम-फिर कर मेरे पास आ जाती है।मैं उसे देख कर खुश होता हूँ और वह मुझे देख कर खुश होती है।

यह दो बातें विचार करते योग्य है -

पहले जब मुन्नी मेरे पास नहीं आती थी, उसका कारण क्या था? कारण था कि इस दुनिया में पैदा होने के कारण, उसके अन्दर एहतियात की जोरदार ताकत मौजूद थी। इस एहतियात में निम्नलिखित तीन बातें मौजूद होती है:-

क) शर्म ख) दुचिताई

ग) भय।

यह तीनों एहतियातें बच्चें तथा जानवरों में अधिक होती है। अविश्वास इस बात का होता है कि वह आदमी जो मुझ को अपने पास बुला रहा है वह विश्वास करने के योग्य है कि नहीं। शर्म इस बात की होती है कि मैं किस हद तक उस व्यक्ति का विश्वास करूँ। भय इस बात का होता है कि यह व्यक्ति है तो अजनबी, इस पर विश्वास करना ठीक होगा या नहीं ।

सारीब ाात ाि दर्ल मलनेक ाह ातीह ै ाज बत क ि दलन हीं मिलता, उस समय तक दो व्यक्तियों में समानता नहीं आती। हम लोगों को भी हर प्रकार के कारोबार में एहतियात के इस कुदरती जज्बे

से काम लेने की आवश्यकता है । यदि कोई ऐब की बात नहीं है, बल्कि अपनी रक्षा का एक विश्वसनीय शस्त्र है। जो लोग इस एहतियात के जज्बे को अपने अन्दर पैदा करने लगते हैं और अपने अनुभव से काम लेते हुए , उसे निखारते रहते हैं, वह संसार में सांसारिक दृष्टि से बहुत बड़े आदमी हो जाते हैं और उनके सारे काम नपे-तुले होते हैं। नौजवानों को विशेष कर एहतियात से काम लेने की सख्त आवश्यकता है।

जो लोग इस जज्बे का नहीं उभारते वह गुमराह हो कर गड्डे में गिरते हैं। बच्चों के अन्दर यह एहतियात सराहनीय है और बालिग आदमियों के अन्दर यदि एहतियात का जज्बा पनपाया नहीं जाता तो वह पाप करने लगता है। पाप की तीन किस्मे हैं:-

क) लज्जा ख) दुचिताई

ग) भय

मुन्नी ने लज्जा इसलिए की थी कि मैं विश्वास करने योग्य व्यक्ति हूँ या नहीं। फिर वह स्वयं ही बिना बुलाए मेरे पास आने लगी क्यों? क्यों कि उसे पक्का हो गया था कि मैं विश्वास के योग्य व्यक्ति हूँ। उसकी दुचिताई जाती रही, उसका भय जाता रहा।

तुम समझते हो कि बच्चे यों ही खेल- कूद में अपना समय गँवाते हैं। तुम्हारा यह ख्याल एकदम गलत है। बच्चे तो अपनी छुपी हुई , दबी हुई, ताकत को उभारने की फिक्र में रहते हैं और वह जो भी काम करते हैं उनमें उनका उद्देश्य अपने-आपको शक्तिशाली बनाना है। बच्चों के द्वारा यह काम उसी तरह से किया जाता है जिस तरह से बुद्धिमान व्यापारी थोड़ी राशि रखते हुए भी लेन- देन के कारोबार में अपनी दौलत धीरे- धीरे बढ़ाने लगता है और आखिर में धनी हो जाता है, वह गुण उसके अन्दर पहले ही मौजूद होते हैं। दुनिया के अन्दर कोई भी ऐसी ताकत नहीं है जो इन्सानी बच्चे के अन्दर मौजूद न हो।

हाँ उस ताकत को पनपाने के लिए जरुरत है अनुकूल साधन तथा अनुकूल परिस्थितियों के मिलने की जरूरत है।

बच्चा पैदा होते ही खाट पर पड़ा हुआ अपने हाथ पाँव को इस तरह हरकत देता रहता है जिस तरह कि एक पहलवान कसरत करता है। उसका हर समय हाथ- पाँव मारते रहना इसी ही गरज़ से होता है।

जब बच्चा थोड़ा बड़ा होता है, उसमें थोड़ी ताकत आ जाती है तो वह उठने-बैठने का इच्छुक होता है। वह गिरता है , पड़ता है , ठोकर खाता है, गिरते ही रो देता है। रोता इसलिए नहीं कि उसे दर्द होता है बल्कि इसलिए कि उसे अपनी कमज़ोरी का अफसोस होता है। आपने कभी देखा होगा, अनुभव किया होगा कि जब कोई बच्चा गिरता है, यदि उसे कोई देख नहीं रहा हो तो वह चुपचाप उठ कर फिर चलने की कोशिश करता है, जैसे कि वह गिरा ही न हो, वह रोता नहीं है। परन्तु यदि कोई उसे गिरता देख ले, उसे चोट आई है या नहीं वह जोर- जोर से रोना शुरु कर देता है, क्यों? क्योंकि उसे अपनी कमज़ोरी का एहसास होता है, वह अपने-आप को अपमानित महसूस करता है यदि आप बच्चे को कभी गिरता हुआ देखो तो भूलकर भी उसके साथ हमदर्दी मत करो और न ही आपकी जुबान से अफसोस का कोई शब्द निकलना चाहिए।

उस समय आप बच्चे की तरफ से अपनी आँख दूसरी तरफ फेर लो और ऐसी शक्ल बनाओ कि बच्चे को मालूम ही न होने पाये कि आपने उसे गिरते हुये देख लिया है। जब उसे पक्का विश्वास हो जाता है कि उसे गिरते हुए किसी ने भी नहीं देखा तो वह हिम्मत करके जोर लगाकर फिर खड़ा हो जायेगा। अगर आपने भूलकर भी अफसोस किया तो आपने अनजाने में बच्चे की उभरती हुई ताकत को ठेस पहुँचाई है। बच्चे को गिरने पड़ने दो। खिलखिला कर हँसने तथा जोर-जोर से रोने दो। अपने पाँव पर उसे खड़ा होने दो। आप तो

केवल उसके साथ जरुरी हमदर्दी और मोहब्बत का सलूक करो ताकि उसकी ताकत को उभरने का मौका मिलता रहे।

दोस्तो ! यह सबक है ,जो हमको इन छोटे – छोटे बच्चों से सीखना चाहिए। जिन्दगी नाम है उतार – चढ़ाव का, जिंदगी नाम है गिरने-पड़ने का। जिस तरह छोटे – छोटे बच्चे गिरते पड़ते आगे बढ़ जााते है, उसी तरह बालिग आदमियों को जिन्दगी में भी ऐसे मौके आते रहते हैं।

उदाहरणता तुमने कोई काम शुरु किया उसमें असफलता मिली। परन्तु इस असफलता से तुमको हौसला हिम्मत हारना नहीं चाहिए बल्कि जिस तरह बच्चा गिर कर उठता है उसी तरह तुमको भी हिम्मत और हौसले से काम लेते हुए दोबारा उठने और उभरने के लिए काम करना चाहिए। तुम्हे अवश्य सफलता प्राप्त होगी। कुदरत की तमाम ताकतें तुमको सहारा देंगी। केवल हिम्मत से काम लेने की जरुरत है। जैसे नन्हे बच्चे के साथ तमाम दुनिया रक्षा का बर्ताव करती है यहाँ तक कि सभी पशु-पक्षी और जंगली जानवर भी इन्सानी बच्चों की रक्षा करते हैं , वैसे ही दुनिया की तमाम हमदर्द ताकतें हमेशा तुम्हारी सहायता को तैयार रहती हैं और चाहती हैं कि तुम इस कमज़ोरी की हालतों से उन्नति करके खुशहाली की तरफ कदम बढ़ाते चले जाओ। सहायता सदैव कुदरत से मिला करती है और हर एक व्यक्ति अपनी विशेष जिन्दगी के हालत पर गौर करके अपने लिए खास नतीजा निकाल सकता है। लेकिन भ्रम और गलती में पड़ कर या किसी की गलत सलाह मान कर तुम गिर जाते हो और उभरने का नाम नहीं लेते यह तुम्हारा अपना ही कसूर है।

गिरना – पड़ना कोई शर्म की बात नहीं है, कमज़ोर और पापी होने में भी कोई ऐब नहीं है। क्योंकि ये सीढ़ियाँ है, जिन पर कदम जमा कर तुमको ऊँचे चढ़ना है। अगर यह न हों तो फिर कोई कैसे पुण्यात्मा, धर्मात्मा या कामल पुरुष बनेगा –

मारग चलते जो गिरे, ताहि न लागे दोष।
कहे कबीर बैठा रहे, वा सिर करड़े कोस॥

प्रत्येक व्यक्ति की जिन्दगी का उद्देश्य प्राकृतिक तौर पर उन्नति की ओर होता है । परन्तु कोई भी इन्सान कभी अपनी वर्तमान स्थिति पर सन्तुष्ट नहीं होता , वह अपनी उन्नति अधिक से अधिक चाहता है। हर इंसान को चाहिए कि हमेशा अच्छी हालत का इच्छुक रहे और अपने आप को उभारता हुआ, जिस तरह भी हो सके अपने उद्देश्य को ओरब ढ़ताच ले।अ पाहिजपनेक ाज ीवनघ ृणामयह ोताहै ।य ह दुनिया कर्मक्षेत्र है, जिसमें नेकी- बदी और धर्म- अधर्म दोनों एक दूसरे के समक्ष होकर हाथापाई करने को तैयार रहते हैं। एक तरफ धर्म है , जो ऊँचे विचार , खुशहाली और सुख का नमूना है। उसका चित्र धर्मराज युधिष्ठिर की शक्ल में दिखाया गया है। इसलिए युधिष्ठिर को धर्म अवतार भी कहते हैं। दूसरी तरफ बदी है, जिसकी तस्वीर दुर्योधन की शक्ल में दिखाई गई है। अर्थात् युधिष्ठर (युद्ध के स्थिर) धर्म है और दुर्योधन (युद्ध में दुष्ट या बुरा) अधर्म है। इन दोनों जज्बातों के युद्ध क्षेत्र का नाम महाभारत है। भगवान कृष्ण बहादुर तथा शूरवीर है, जो दोनों को लड़ाते हुए धर्म के साथी और अधर्म के दुश्मन बने हुए हैं।

जो काम भगवान कृष्ण ने किया, वही तुमको जीवन में करना है। यदि तुम कामिल पुरुष या सोलह कला का पूर्ण अवतार बनना चाहते हो तो इस लड़ाई के लड़े बगैर उस ऊँची श्रेणी को प्राप्त नहीं कर सकते।

मानवीय जीवन के दर्जे होते हैं और हर दर्जे में परीक्षाएँ और आजमाइशें पेश आती है। जब तक यह जीवन सम्पूर्ण नहीं हो जाता तब तक यह हाथापाई बराबर चली रहती है। यह न समझो कि किसी बूढे ने अपना जीवन पूरा कर लिया बस यही समाप्ति है। नहीं, इसके आगे चल कर फिर नई परिस्थितियों से गुजरना पड़ेगा।

अगर उसने जीवनकाल में अपनी दिली-ताकतों को उभार कर नेकी का सरमाया इकट्ठा कर लिया है तो फिर वह नया चोला बदल कर उस नेकी के कर्मों का फल भोगेगा जिसने बदी का सरमाया इकट्ठा कर लिया है , उसको कर्मों का फल भुगतने के लिए मुसीबतें तथा कष्ट झेलने पड़ेंगे। जब वह कर्म भोग लेता तो फिर नये सिरे से उसे नेक कमाई करने पड़ेगी। जब वह हर तरह से नेक बन जायेगा, उस समय उसका जीवन पूर्णता में आयेगा और उसे जीवन के असली उद्देश्य का पता चलेगा, इससे पहले यह सम्भव नहीं ।

मैंने तुमको बता दिया कि छोटे बच्चे में कुदरत की सभी शक्तियाँ पहले से ही मौजूद रहती हैं। नेकी उनको उभारती है तथा बदी उनको दबाती है। लेकिन जिन्दगी दोनों से गुजरती हुई चली जाती है।

एक अंग्रेज शायर ने लिखा है :-

"Child is the father of Man"

अर्थात् बचपन की अवस्था मानवीय जीवन का पिता बच्चे के पेट में बूढ़ा पैदा होता है। जो शख्स आज बच्चा है वही आगे चल कर बूढ़ा होगा। तुम अपनी कमजोरियों, पापों और गुनाहों को परे फेंकते हुए अपने जीवन के असली उद्देश्य को पूरा करने में लग जाओ। नेकी और पुण्य को अपना साथी बनाओ ताकि तुम्हारा जीवन खुल खेले। यह भी याद रखो कि पाप और पुण्य में से कोई भी तुम्हारे जीवन का उद्देश्य नहीं है। दु:ख और सुख में से कोई असली चीज़ नहीं है। हाँ नेक बनने की कोशिश करो फिर धीरे-धीरे यह नेकी और बदी दोनों ही तुमसे जुदा हो जायेंगी और तुम असली इन्सान बन जाओगे।

Not enjoyment and not sorrow,
Is our destined end or way,
But to act that each tomorrow,
Finds us farther than today

तुम जीवन के मैदान में आये हो उसे परिश्रम से गुजारो औरों की तरफ मत देखो। पहले अपनी तरफ देखो, तब दूसरे की तरफ देखो।

मैंने मुन्नी को पान खिलाया, फल दिए, मिठाई दी। फिर उसने बाँट दिए, अगर उसे यह चीज़ न मिली होती तो वह बाँटती कैसे? इसलिए कहा है, 'पहले आत्मा फिर परमात्मा' पहले घर का चिराग जलाओ फिर जाकर मन्दिर का। पहले स्वयं नहाओ, फिर देवता को नहलाओ। ' यह छोटी - छोटी बातें हैं जिन्हें तुम मुन्नी के व्यवहार से सबक ले सकते हो।

तुम्हे जो विद्या का ज्ञान प्राप्त होता है , तुम उसे दूसरों में फैलाओ यानि कि विद्यादान बाँटो। तुम्हें इज्जत मिल गई, तुम इज्जत वाले बन गए, इज्जत पाकर तुम दूसरों को इज्जत दो, ताकि तुम्हारी इज्जत बढ़ती चली जाए। यदि तुम इज्जत पाकर दूसरो को बेइज्जत करोगे तो ऐसी बेइज्जती का दु:ख पाओगे जिसका कोई ठौर- ठिकाना नहीं होगा। तुमको दौलत मिल गई , चाहे वह किसी मात्रा में क्यों न हो, तुम्हें चाहिए कि उस दौलत को अपने इर्द-गिर्द बिखेरो। दान दो, ताकि तुम्हारी दौलत की खूबसूरती बढ़े। अगर तुम कंजूस बन गये तो फिर यही दौलत तुम्हारे लिए अफसोस का कारण बनेगी।

कबीर लक्ष्मी सूम की, देखन का ही लाड।
जो वा में कौड़ी खटे, तो सोई तोड़े हाड़॥

जिन्दगी चाहती है कि वह खुल खेले बन्धन में न रहे। अगर इस असूल पर चलने में किसी ने गलती खाई तो विद्या, इज्जत , दौलत और हकूमत दु:खदायक साबित हो जायेंगे। यह छोटी - छोटी बातें हैं जो बच्चे के दो दिन के व्यवहार से मेरी समझ में आ गई। इसलिए मैं आपको बार - बार कहता हूँ कि इस दुनिया में तुम एहतियात से अपनी दबी हुई शक्तियों को उभारो और जिन्दगी को पूर्ण बनाओ।

●

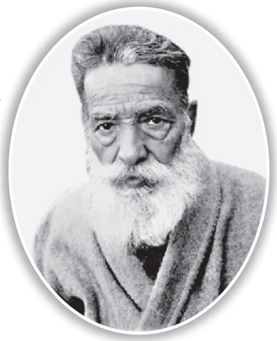

सत्संग

परमसन्त हजूर परमदयाल पं. फकीर चन्द जी महाराज

मानवता मंदिर, होशियारपुर।

दिनाँक 22 जून, 1975

गुरु नाम मिला मुझको प्यारा, राधास्वामी-राधास्वामी।
सब नामों से है यह न्यारा , राधास्वामी-राधास्वामी ॥

राधास्वामी। देखो दोस्तो! यह मेरे गुरु भाई श्री दीवान चन्द जी के चेले हैं और दिल्ली से आये हैं। श्री दीवान चन्द जी हजूर दातादयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के पास क्यों गये थे, यह मुझे पता नहीं। मैं उनके चरणों में क्यों गया था? मेरे अन्तर में किसी वस्तु की तलाश थी। जिसको मैं तलाश करता था, उसको मैं राम, कृष्ण, भगवान या मालिक समझता था। हजूर दाता दयाल जी महाराज से मुझे राधास्वामीमत मिला। क्योंकि इसमें सब का खण्ड़न था, जिसको कि मेरा ह्दय सहन नहीं करता था। लेकिन हजूर दातादयाल जी महाराज पर मेरा विश्वास टूटता नहीं था। इसलिए मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूँगा और जो कुछ मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊँगा।

गुरु नाम मिला मुझको प्यारा, राधास्वामी-राधास्वामी।

वह लिखते हैं कि गुरु ने राधास्वामी नाम दिया। मुझे भी राधास्वामी नाम मिला था। अब मैं सोचता हूँ कि फकीर ! क्या मुँह से राधास्वामी-राधास्वामी नाम जपने या मन से राधास्वामी नाम का सुमिरन करने से तुमको वह वस्तु मिल गई, जिसकी तुमको तलाश थी? आप मेरे गुरु भाई के चेले हैं। आपके पत्रों से सिद्ध होता है कि आप दोनों ने काफी अभ्यास साधन किया। रोशनी भी देखी, अन्तर में बाजे भी सुने। क्या इन बातों के सुनने के बाद फिर आपको किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं रही? रही। यदि न रही होती तो आप मेरे पास क्यों आते। इससे सिद्ध हुआ कि जुबान से या मन से राधास्वामी नाम का सुमिरन करने से, प्रकाश को देखने से या अन्तर में कोई धुन सुनने से आपको यदि वह वस्तु मिल जाती तो आपको मेरे पास आने की आवश्यकता न होती। फिर वह राधास्वामी नाम क्या है? जब कभी मैं उस राधास्वामी नाम को सुन लेता हूँ तो फिर उस समय मुझे और किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं रहती। वह कौन सा नाम है?

सब नामों से है वह न्यारा, राधास्वामी-राधास्वामी।

यह नाम सब नामों से अलग वस्तु है। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने आज्ञा दी थी कि फकीर चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना और क्यों कि मैंने भी यह प्रण किया था कि अपना अनुभव संसार को बता जाऊँगा। इसलिए कहता हूँ कि यदि हम घंटा शंख के सुन लेने को, लाल रंग के सूर्य को देखने को या किसी और धुन के सुनने को नाम समझ लें, तो फिर इनके बाद हमको किसी और वस्तु की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। यदि बीन या मुरली के सुन लेने के बाद हमको किसी और वस्तु की आवश्यकता न रहे तो हम समझ लें कि यह नाम है। बसरेबगदाद में मैंने बहुत बीन सुनी।

पण्डित पुरुषोतम दास भी वहीं थे। मैं इनके रेलवे स्टेशन पर एक बार गाड़ी से उतरा। उस समय का दृश्य मुझे याद है। मेरे सिर में उस समय सारा आसमान बीन से गूँज रहा था। क्या उस बीन के सुनने के बाद मैं कामी नहीं हुआ। क्या मुझे फिर क्रोध नहीं आया? आया। क्या फिर मैंनेर ोटीक मानेक ाय त्लन र्हीं कया?अ वर्श्या कया ाम ैंअ पना अनुभव कहता हूँ। लेकिन मेरा कोई दावा नहीं कि जो कुछ मैं कहता हूँ यही ठीक है। जिस नाम के सुनने के बाद फिर और किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं रहती , वह नाम क्या है?

अपने आपसे कहा करता हूँ कि फकीर! एक दिन मर जाना है। यदि संसार को धोखा दोगे तो उस कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ेगा, उस नाम तक पहुँचाने के लिए और उस नाम को प्राप्त करने के लिए हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे यह काम दिया था। मुझे इस नाम की प्राप्ती कैसे हुई? जब तुम सत्संगियों ने मुझे यह कहा कि मेरा रुप तुम लोगों के अन्तर प्रकट होकर दवाईयाँ बता जाता है, सुरतें चढ़ा देता है, पुत्र दे जाता है और जीवों को मरते समय ले जाता है।। लेकिन मैं तो होता नहीं। ऐसे ही श्री दीवान चन्द जी का रुप भी तुम्हारे अन्तर प्रकट होता होगा और तुम लोग उनको बताते भी होगें। क्या उन्होंने आपसे कभी यह कहा था कि मैं तुम्हारे अन्तर नहीं आता? गुप्ता जी ने कहा कि महाराज! वह कहा करते थे कि यह तुम्हारा अपना ही रुप है।

जबसे मुझे यह विश्वास हो गया कि मैं तो किसी के अन्तर जाता नहीं और वह जितने रुप रंग, भाव-विचार और शक्लें अन्तर में पैदा होती हैं। यह जिस प्रकार के संस्कार आदमी के अन्तर मस्तिष्क पर पड़े हुए होते हैं, वही शक्लें बनाकर सामने आते हैं। तो अब मैं इन रुप-रंगों को छोड़ जाता हूँ। अब न सहस्रदल कमल मुझे खींच सकता

है, न त्रिकुटी , न सुन्न, न महासुन्न और न भवंरगुफा। क्यों कि मुझे यह सिद्ध हो गया कि यह सब काल और माया है या स्थूल, सूक्षम और कारण प्रकृति का खेल है।

जहाँ तक मेरा अनुभव है गलत है या ठीक है, यह मुझे पता नहीं, वह शब्द अटूट (Unbreakable) है। फिर जब वहाँ से मेरा उत्थान होता है और संसार में आता हूँ तो क्यों कि मुझे यह ज्ञान हो चुका है कि यहाँ सब मन का खेल है। इसलिए मैं इस खेल में फँसता नहीं। जब तक किसी को यह ज्ञान नहीं हो जाता कि यह जो कुछ अन्तर में प्रकट होता है, यह है नहीं मगर भासता है। जिस प्रकार आपके अन्तर श्री दीवान चन्द जी का रूप प्रकट हुआ। आपने उनको बताया, तो उन्होंने कहा कि यह तुम्हारा अपना रुप नहीं है। यह तो तुम्हारे मन की इच्छाओं और वासनाओं का रुप है। जो रुप भी किसी के अन्तर प्रकट होता है। वह तुम्हारे मन की इच्छाओं और वासनाओं का रुप है। जो रुप भी किसी के अन्तर प्रकट होता है। वह तुम्हारे मन पर संस्कार पड़े हुए हैं। वह उन संस्कारों का रुप है। हमारा असली रुप क्या है? उसमें न मन है और न मन फुरना करता है। उसमें न कोई दृष्य आता है न कोई बाजा बजता है। आदमी के अन्तर उसकी प्रकृति के अनुसार शब्द पैदा होता है। आगे न शरीर है, न प्रकृति है। तो शब्द या प्रकाश कहाँ से आयेगा। वह वस्तु जो प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है, वह है हमारा असली रुप। उसका न कोई रंग है और न कोई रुप है वह अशब्द है और अप्रकाश है। सन्त उसको अकह, अपार, अगाध और अनाम कहते हैं। उसके बारे न कोई कुछ कह सकता है और न कुछ बोल सकता है। मगर वह है। क्या है? वर्णन से बाहर है। गूँगे का गुड़ है। मैं कभी-कभी वहाँ पहुँचता हूँ। हर समय वहाँ नहीं पहुँच सकता। क्या आपके अभ्यास की सदा एक दशा रहती है? नहीं रहती। प्रकृति के अनुसार अभ्यास की अवस्था बदलती रहती है। तो फिर राधास्वामी नाम क्या है?

हमारी वह अवस्था या हमारा वह रूप जो हमारे शरीर में रहता हुआ हमारे अन्तर के हर प्रकार के रंग, प्रकाश और शब्द का साक्षी है। वह है हमारा असली रुप। जब वह वस्तु शरीर में आ जाती है , तो शरीर के जितने चक्कर हैं अर्थात् छ चक्कर पिण्ड के, छः चक्कर मन के और छः चक्कर दयाल देश के । वह इन सब की साक्षी बन जाती है। हमारा असली रुप न प्रकाश है और न शब्द है। हम अपने रुप को भूलकर शारीरिक और मानसिक बोध भानों को सत मानते हैं। इसमें हम खुशी लेते हैं, आनन्द लेते हैं, निर्भय भी हो जाते हैं और दुख ही सहते हैं। राधास्वामी नाम क्या है? अनुभव और सार ज्ञान का नाम 'राधास्वामी नाम ' है। राधा- स्वामी दयाल ने सुरत शब्द योग के बारे यह फरमाया है।

राधा आद सुरत का नाम, स्वामी आद शब्द पहचान।

और फिर लिखते हैं।

सुरत शब्द दोऊ अनुभव रुपा, तू तो पड़ा भरम के कूपा ।

नाम न शब्द है न प्रकाश है और न शारीरिक बोधमान है। नाम है हमारा अपना आप।। जो इस शरीर में रहता हुआ हर प्रकार के बोधमानों को महसूस करता है। क्योंकि हमको अपने रूप का ज्ञान नहीं है। इसलिए हम बोधमानों में आकर सिद्धि शक्ति में या मस्ती में आ जाते हैं। अपने रुप के ज्ञान का नाम राधास्वामी नाम है।

दल सहस्र कमल सुमिरन साधा,
त्रिकुटी चढ़ ध्यान को अराधा।।

सहस्र दलकमल क्या है? हजारों पखंडियों वाला फूल । यह हमारा मन है। इसमें से ही हजारों प्रकार की वृत्तियाँ और विचार धारायें निकलती हैं, इसको अजपाजाप से साधा जाता है। फिर मन अनेक प्रकार के विचार नहीं उठाता और केवल एक ओर लग जाता है। इस स्थान में घंटा बजता है। क्यों? जैसे हम बाहर के भिन्न धातें

मिलाकार घड़ियाल बना लेते हैं और जब उस पर हथौड़ा मारते हैं तो घंटा बजता है। ऐसे ही जिस आदमी के अन्तर में स्थूल पदार्थ की वासनायें होती हैं और अजपाजाप के समय वह इक्कठी हो जाती है तो वहाँ घंटा बजेगा और यदि किसी के अन्तर स्थूल पदार्थ की इच्छा नहीं है तो उसके अन्तर घंटा नहीं बजेगा। सन्तों ने कह तो दिया कि अन्तर घंटा बजता है, मृदंग की आवाज़ होती है और बादल गरजता है। लेकिन यह किसी ने नहीं बताया कि अन्तर में यह आवाजें क्यों पैदा होती हैं। मैं संसार में समय के सन्त सत्गुरु के रूप में इस भेद को खोलने के लिए आया हूँ। मैं अब यदि घंटा शंख मृदंग आदि को अपने अन्तर में सुनने का यत्न भी करूँ तो भी नहीं सुन सकता। क्योंकि मेरे अन्तर में अब स्थूल पदार्थ की वासनायें नहीं हैं। देखो ! एक बात ध्यान से सुनो। जब यह सुमिरन बन जाता है और मन एकाग्र हो जाता है। तो यदि उसको सत्संग में संसार के परिवर्तनशील होने का अर्थात संसार के नाशवान होने का विश्वास नहीं कराया जाता, तब तक वह सहस्र दलक मलस `अ ागेन हींज ास कता ाइ सलिएज हाँन ामदानक ा महिमा है वहां सत्संग की भी महिमा है ताकि जीव को काल और माया का पता लग जाये। इसके बाद आगे चलता है।

इससे आगे है त्रिकुटी। त्रिकुटी में गुरु स्वरूप का ध्यान होता है। ध्येय, ध्याता और ध्यानी। त्रिकुटी में लालरंग का सूर्य चमकता है और गुरु स्वरुप दिखाई देता है। वहाँ की आवाज़ को बादल की गरज़ या मृदंग की आवाज़ कहा जाता है। मृदंग क्यों बजता है? वहाँ कोई बाजा तो नहीं । जब स्थूल वृत्तियाँ समाप्त हो जाती हैं तो फिर सूक्ष्म वृत्तियाँ आती हैं और वह त्रिकुटी के स्थान पर इकट्ठी हो जाती हैं और उसका फिर बादल बन जाता है और बादलों की आपस की रगड़ से आवाज़ पैदा होती है। ऐसे ही जब त्रिकुटी के स्थान पर ध्यान की शक्ति से सूक्ष्म वृत्तियाँ इकट्ठी हो जाती है तो इनकी आपस की

रगड़ से जो आवाज़ पैदा होती है और वह बादल की गरज से मिलती जुलती है। उसकों ओम् ओम् या बम बम भी कहते हैं। ओम् क्या है? उत्पत्ति, स्थिति और परलय। मन के विचार ही ब्रह्म , विष्णु और महेश हैं अर्थात संकल्प उठता है, यह ब्रह्म है, संकल्प ठहरता है यह विष्णु है, संकल्प नाश हो जाता है यह महेश है। इस स्थान पर लाल रंग क्यों पैदा होता है? जब तुम ज़ोर से किसी वस्तु को पकड़ते हो तो तुम्हारा जोर लगता है और तुम्हारा मुँह लाल हो जाता है ऐसे ही अभ्यास के समय भी जोर लगता है और सूक्ष्म वृत्तियाँ थिर हो जाती है तो लाल रंग पैदा हो जाता है।

सुन्न महासुन्न दुचिता जारा, राधास्वामी-राधास्वामी।

जब आदमी इससे आगे चलता है तो फिर दुचिताई आ जाती है अर्थात दो विचार आ जाते हैं यह विचार ठीक है या यह ठीक है। इसका नाम दुचिताई है। इस स्थान पर आदमी का मन गुरु स्वरूप में लय हो जाता है और मस्ती आ जाती है और मस्ती के कारण गुरुस्वरूप समाप्त हो जाता है। गुरुस्वरुप त्रिकुटी तक ही रहता है। सुन्न में गुरुस्वरूप नहीं होता। तुम बाहर में एक जगह कोई निशान लगाकर बिना आँख झपके उसकी ओर देखते रहो। वह कुछ देर के बाद लोप जायेगा। क्योंकि इस अवस्था में मन संकल्प छोड़ देता है। इसलिए वहाँ दुचिताई समाप्त हो जाती है। शास्त्रों के अनुसार ओम् का बिन्दू वह स्थान है जहाँ मन संकल्प नहीं करता और समाधि का नाम सविकल्प समाधि है और उस अवस्था का नाम महासुन्न है। बानी में आया है कि वहाँ चार स्थान गुप्त हैं और वहाँ अंधेरा होता है और कोई सन्त उन गुप्त स्थानों को खोल नहीं सकता। वह चार स्थान क्या है ? मन , चित्त , बुद्धि अंहकार। अब इसका अर्थ समझो। महासुन्न में मन काम नहीं करता और अफुर हो जाता है अर्थात मन वहां कोई फुरना नहीं करता। जब मन ही अफुर हो गया, खोलने वाली

वस्तु ही न रही तो खोलेगा कौन और किसको खोलेगा? सन्तों ने लिख तो दिया। लेकिन बात को समझााया नहीं।

सुरत शब्द जोग मत अति है सुगम, कोई अधिकारी पाता है गम।

सुरत शब्द योग है, सुरत से शब्द को सुनना और यह दसवें द्वार से आगे आरम्भ होता है। विचले शब्द मन से सुने जाते हैं। रारंग सारंग क्यों बजता है? जैसे सितार बजाने वाला जब सितार की तारों को खींचकर उनके ऊपर गज़ फैरता है तो उन तारों में से आवाज़ पैदा होती है। ऐसे ही जब अभ्यास के समय मन की वृत्तियाँ खिंच जाती हैं और सुरत उनके ऊपर चलती है तो एक आवाज़ पैदा होती है , जिसका नाम सन्तों ने रारंग सारंगी रखा है। सन्तमत प्राकृतिक (Natural) मत है।

गुरु ने मुझे दिया मरम सारा, राधास्वामी राधास्वामी।

बाहर का गुरु करता क्या है? भेद और मरम देता है और असलीयत बताता है। मैं कई बार अपने-आपको (Curse) करता हूँ कि तुम अपने-आपको समय का संत सत्गुरु कहते हो, क्या तुम अहंकारी नहीं? नहीं। मैं भेद और सार देता हूँ ताकि जीव असलियत समझ जायें और जगह-जगह भटकते न फिरें। गुरु का काम है, भेद देना और असलियत बताना। मगर लोग इसके अधिकारी नहीं है। मैं जब बाहर दौरे पर जाता हूँ तो लोग मुझसे अपने छोटे बच्चों के बाल कटवाने के लिए उनको मेरे पास ले आते हैं और मुझे नाई बना लेते हैं। परमार्थ के लिए या सुरत शब्द योग के लिए मेरे पास कौन आता है? सुरत शब्दयोग तो उनके लिए है जो अपने आद घर जाना चाहते हैं और जिसको संसार की इच्छा नहीं है।

विषयों से जो होय उदासा, परमार्थ की जा मन आसा।
धन संतान प्रीत नहीं जाके, खोजत फिरे साध गुरु जागे॥

लेकिन आजकल तो गुरु लोगों ने यह नाम दान एक रोज़ी का

साधन बना रखा है। जो भी आया नाम, जो भी आया नाम। अपने चेलों की संख्या बढ़ाई जा रही है: फिर भी धन्य है कि जीवों को संस्कार मिल रहा है।

जगमग जगमग ज्योति दमकी,
ज्योती विचित्र घट में चमकी।

महासुन्न के बाद जो रोशनी होती है, वह हमारे आत्मा की रोशनी है। इससे पहले जो रोशनी है वह मन की है। सहस्रदल कमल में पीले रंग की रोशनी होती है। यह पृथ्वी का रंग है। तुम किसी वस्तु का बीज बो दो, जब उसका अंकुर धरती से बाहर आयेगा, तो उसका रंग पीला होगा।

हुआ मगन जो देखा चमकारा, राधास्वामी-राधास्वामी।

जब मन की रोशनियाँ समाप्त हो जाती हैं तो फिर आत्मा का रूप आता है। आत्मा की रोशनी सफेद होती है मगर उसमें मामूली सा नीलापन होता है। इसलिए कृष्ण जी का रंग सांवला बताया जाता है। क्योंकि वह आत्मा है।

दल सहस कमल घंटा बाजा, और शून्य में ररंग धुन गाजा।
त्रिकुटी में गरजा ऊँकारा राधास्वामी राधास्वामी।
ब्रह्माण्ड की थी यह त्रिलोकी, यह त्रिलोकी मैंने छोड़ी।
चौथे पद सुरत को गारा, राधास्वामी राधास्वामी॥

यद्यपि मुझे दावा किसी बात का नहीं, मगर यह मेरी खोज है। सात वर्ष की आयु से इस ओर आया था। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने आज्ञा दी थी कि शिक्षा को बदल जाना। अपने कर्म भोग कर अपना अनुभव बता रहा हूँ। शरीर, मन और आत्मा त्रिकुटी है। यह तीन अवस्थायें है। वह फरमाते हैं कि मैं इनको छोड़ गया। असली नाम इनसे परे है। यह जितने निचले नाम है, यह सब प्राकृतिक है। चौथा पद क्या है? इसको वर्णन करने के लिए शब्द नहीं

मिलते। तीनों मंजिलों को छोड़ जाने के बाद अपना रूप आता है। मगर इसमें भी कोई शक्ल मौजूद है, जिसको सतलोक कहते हैं।

चौथे पद नाम की धुन पाई, प्यारी धुन मुझको भाई।

चार धुन क्यों सुनाई देती हैं? सुनो। १-रा, २-धा, ३-स्वा, ४-मी। जो आदमी रा धा स्वा मी राधास्वामी का सुमिरन करता हुआ शरीर को त्याग देगा। उसके मस्तिष्क में चार अवस्थाओं का संस्कार जायेगा। इस संस्कार के कारण उसको चार धुन सुनाई देंगी। राधास्वामी नाम तो बाद में निकला है। कबीर साहिब के समय में तो राम नाम था। वह जब वहाँ पहुँचते थे तो उनको चार धुन सुनाई नहीं देती थी।

सुनो उसे भंवर पद से पारा
राधास्वामी राधास्वामी।
सतलोक में बीन को गति प्रकटी,
निरखी वहां सत्गुरु की भृकुटी॥

जब आदमी शारीरिक और मानसिक बोध मानों को भूल जाता है तब उसको बीन की धुन सुनाई देती है। उस धुन में खुशी आनन्द और मस्ती होती है। यही बात हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज ने रसाला ''सारी दुनिया'' में सतलोक के बारे में कही थी कि वहाँ आनन्द खुशी और मस्ती होती है। अभ्यासी शक्ल से ही पहचाना जाता है। अभ्यासी के मुख (चेहरे) पर सदा नूर होता है चाहे वह बीमार ही क्यों न हो।

जिन को कन्तमिलाप है, तिन मुख बरसत नूर।

मैं जब समाधि से उठता हूँ तो उस समय मेरे चहरे की दशा और होती है। ऐसे ही और अभ्यासियों की भी होती है।

सतगुरु मेरे हो गये रखवारा, राधास्वामी राधास्वामी।

उस स्थान पर पहुँच जाने से सत्गुरु मिल जाता है। सत्गुरु नाम है सच्चे ज्ञान, सच्ची समझ और सच्चे विवेका का, सत्गुरु आदमी का नाम नहीं है। संसार भूला हुआ है। सच्चा ज्ञान और सच्ची समझ आदमी की रक्षा करती है। लोग अपने विचार से मुझे बना लेते हैं और मेरा रूप उनकी सहायता कर जाता है। मैं तो होता नहीं। लेकिन लोग जो समझ और ज्ञान मुझ से ले जाते हैं, वह उनकी सहायता करते हैं। उनको चिन्ता नहीं आती। उनको किसी के मरने का शोक नहीं और किसी के पैदा होने की खुशी नहीं। लेकिन व्यवहारिक जीवन में और लोक लाज के लिए संसार में रीति-रिवाज के अनुसार चलना पड़ता है। गुरु सच्चाई, भेद और भरम बताता है।

लख अलख की शोभा बहु न्यारी
गम अगम की महिमा थी प्यारी।

इससे आगे अलख अगम और अनाम है। वहाँ साधन करता हूँ। मगर अभी तक मेरा वह साधन परिपक्व नहीं हुआ। वह क्या है? सुनो! सुरत चेतन स्वरूप को तलाश करती हुई जब आगे जाती है तो आगे न प्रकाश दिखाई देता है और न शब्द सुनाई देता है। क्योंकि आगे कुछ दिखाई नहीं देता। इसलिए वह अलख है। क्योंकि उसका कुछ पता नहीं लगता और उसको कोई गम नहीं मिलता, इसलिए वह अगम है। आगे हस्ती समाप्त हो जाती है, इस लिए वह अनाम है। बुलबुला जब टूट गया तो खेल समाप्त हो गया और ''मैं'' जहाँ से आई थी वहीं आकर अपने भंडार में मिल गई और अपना वजूद समाप्त कर गई।

ऊँचे चढ़ हो गया भव पारा, राधास्वामी राधास्वामी।

अभ्यास करते-2 ऊँचा चढ़ गया और भव से पार हो गया। अर्थात् संत अलख और अगम से पार हो गया। शारीरिक मानसिक और आत्मिक है, जपने का नाम ही भव है। जब आदमी आगे चला

जाता है तो क्या होता है? **चिराग गुल और पगड़ी गायब, न मुज़ारह न माज़ी, न मुफती न काज़ी।** मैं असलियत को जानना चाहता था। इसलिए हज़ूर दयाल जी महाराज ने मुझे यह काम दिया था। ऊँचे से ऊँचे स्थानों का आनन्द लेना भी भव है। कोई भव अच्छा है और कोई भव बुरा है। इसलिए सन्तों ने यह उपाय निकाला है कि सब से प्रेम करो, नेकी करो, परोपकार करो और अपने जीवन को अच्छा बनाओ। सन्तों का मार्ग प्रेम और भक्ति का मार्ग है ताकि संसार में सुख भी लो, आत्मानन्द भी लो और पार भी हो जाओ। इसलिए कहा गया है-

लोक अलोक पाऊ सुख धामा।
चरन शरन दीजिये विशरामा॥

जो आदमी सन्तमत को समझकर राजमार्ग में चलता है उसका व्यवहार बुरा नहीं होता। देखो! मैं हर प्रकार से सुखी हूँ। यदि मेरे पास धन एकत्र नहीं है लेकिन मैंने किसी का देना भी नहीं है। जीवन बड़े आराम से व्यतीत हो रहा है। यह है साधन का उद्देश्य।

गुरु नाम की धुन पहचान लिया,
प्रकाश में रूप का जान लिया।
मिल गया काल से छुटकारा,
राधास्वामी राधास्वामी॥

नाम का पता लग गया। जो वस्तु प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती है और शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है, वह हमारा अपना रूप है। काल है समय और समय में गति होती है। जब तक गति है तब तक काल से छुटकारा नहीं। जिस प्रकार गहरी नींद में आदमी को कुछ पता नहीं होता ऐसे ही समाधि के समय जिसकी सुरत ऊपर चली जाती है, उसको कोई पता नहीं होता। इसको उस समय न चिन्ता, न फिकर, न रंज और न गम। कोई परवाह नहीं होती।

राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी मैं गाता हूँ।
मैं तरा साथ सब को तारा, राधास्वामी राधास्वामी॥

राधास्वामी का गाना क्या है? वह जुबान से गाने वाला गाना नहीं है। मगर किसी सीमा तक यह भी ठीक है। मैं जो समझता हूँ वह यह है कि मैं तुम सत्संगियों के कारण तर गया। तुम्हारे कारण मेरा बेड़ा पार हो गया। अब मैं ऊँचा जाता हूँ और सोचता हूँ कि फकीर! यदि तुम अगम के वासी हो गये हो, तो क्या तुम कुछ कर सकते हो? अच्छा मैं न सही। क्या दूसरे सन्त कुछ कर सकते हैं? क्या पिछले सन्त कुछ कर सकते थे? यदि वह कुछ कर सकते होते तो वह अपनी बीमारी को दूर कर लेते। अपने घरेलू झगड़ों को दूर कर लेते, लेकिन वह न कर सके। उनके लड़के मरे, लेकिन वह कुछ न कर सके। उनकी अपनी जो दशा हुई वह आप सब को पता है। तो फिर क्या सिद्ध हुआ कि वह एक (Supermost Element) है, उसको कोई जान नहीं सकता। क्योंकि उसको कोई जान नहीं सकता। इसलिए सन्तों ने उसको अकह, अपार, अगाध और अनाम कह दिया। मैं इस परिणाम पर आया हूँ कि वह एक तत्व है। उसमें हिलोर होती है। प्रकाश और शब्द पैदा हो जाते हैं। संसार बन जाता है। सूर्य चाँद सितारे और लोक-लोकान्तर बन जाते हैं। किसी ने उसका अन्त नहीं पाया। तो फिर मैं क्या हूँ?

चेतन का एक बुलबुला। उसकी मौज से बना। इसमें एक ''मैं'' आ गई। उसकी मौज से यह खेल खेलता है और अज्ञान में आकर चक्कर काट रहा है। जब ज्ञान हो जाता है तो तलाश समाप्त हो जाती है और शान्ति मिल जाती है। फिर वह आदमी कोई परिश्रम नहीं करता। राधास्वामी मत का लक्ष्यपद ही शान्ति है। मुझे तो इस ज्ञान से शान्ति मिली। आप लोग आये हैं मैंने अपना अनुभव बता दिया। जब आरम्भ में मैं हजूर दाता दयाल जी महाराज को लगातार हर सप्ताह

एक पत्र लिखता रहा तो उन्होंने दस महीने के बाद उत्तर में मुझे लिखा कि फकीर! मुझे तुम्हारे पत्र मिलते रहे हैं। मैं तुम्हारे प्रेम का सत्कार करता हूँ। मैंने राधास्वामीमत में हजूर महाराज जी की पवित्र विभूति से असलियत हकीकत सच्चाई और शान्ति प्राप्त की है। यदि तुमको इस मार्ग पर चलने से कोई इन्कार न हो तो तुम लाहौर आकर मुझे मिल सकते हो। उस समय मुझे समझ नहीं आती थी। अब मुझे क्या मिला? शान्ति।

मैं तरा साथ सब को तारा, राधास्वामी राधास्वामी।

तरना क्या है? आदमी जब पानी में तैरता है तो उसका शरीर पानी में होता है। वह हाथ पाँव मारता हुआ पानी से पार हो जाता है। ऐसे ही जीवन में सुख, आनन्द, बेआनन्दी, खुशी और गमी से पार होते हुए इस भव में न बहना और अपने सिर को ऊँचा रखना ही तैरना है। सत्संग में आदमी को ज्ञान हो जाता है तो फिर वह संसार में रहता हुआ अपने-आपको संसार से अलग समझता है और संसार में फँसता नहीं।

आप कहते हैं कि दीवान चन्द जी चले गये और मैं कहता हूँ कि गुरु न पैदा होता है और न मरता है। जो आदमी यह समझता है कि उसका गुरु बाबा फकीर है और होशियारपुर में रहता है या हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज हैं, जो कि डेरा व्यास के मालिक हैं या उनके गुरु श्री दीवानचन्द जी हैं, वह भूल में है और भ्रम में है। उस ने गुरु तत्व को नहीं जाना। मैं तुम्हारे भ्रम दूर कर देना चाहता हूँ ताकि तुमको अब किसी दूसरी जगह न जाना पड़े। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने इस शब्द में गुरू की बहुत व्याख्या की है।

गुरु रूप न समझे कोय, भरम में पड़े अज्ञानी।
गुरु को मानुष जानकर, भक्ति का करें व्यौहार।

सो प्राणी अति मूढ़ है, कैसे जायें भव पार।
देह के बने अभिमानी।

एक आदमी सारा जीवन बाबे फकीर को ही गुरु समझ कर उसकी सेवा करता रहता है, वह मूढ़ है। जो सारा जीवन गुरु की देह के साथ ही बँधे रहते हैं, वह भव से पार नहीं जा सकते। पार तो तब जा सकोगे, जब गुरु के सत्संग से समझ प्राप्त करके साधन करोगे। राधास्वामीमत में तीन वस्तुएँ आवश्यक हैं।

1. **पूरा गुरू**
2. **उसका सत्संग**
3. **और उसके वचन।**

गुरु को मानुष जानकर, शीत प्रशादी लें।
वो तो पशु समान हैं, संशय में अटके। गुरु तत्व न जानो॥

लोग मेरे पास से प्रसाद ले जाते हैं। क्योंकि उनका विश्वास होता है, इसलिए उनके काम हो जाते हैं। लेकिन वह भी भ्रम में हैं।

गुरु को मानुष जानकर, मानुष करो विचार।
सौ नर मूड़ गवार है, भूल रहे संसार। मोह के फांस फंसानी।

आजकल गुरुओं की महिमा गाई जाती हैं। हिन्दु जाति बहुत समझदार थी। वह अपने पूर्वजों के जन्म-दिन मनाते थे, मरने का दिन नहीं मनाते थे। यह तो अब रिवाज बन गया है। हिन्दु जाति सदा आशावादी सिद्धान्तों पर चलती है और पूर्व की ओर देखती है। मृत्यु निराशावादी होती है। जब से पाश्चात्य विचारधारा आई हम मुर्दों की पूजा करने लगे हैं। हिन्दू मुर्दों को नहीं पूजते थे। अब तुम सोचो, एक आदमी का गुरु मरा और वह आदमी रोया और एक आदमी का लड़का मरा, वह भी रोया, तो क्या अन्तर है दोनों में? दोनों ही मोह में हैं। मैं कहा करता हूँ कि मेरे चोले छोड़ने पर यदि कोई आदमी रोयेगा तो उसने मेरी शिक्षा को नहीं समझा।

गुरु को मानुष जानकर, भेड़ की चलते चाल।
वह बन्धन को क्यों तजें, व्यापे माया काल।
योनी की खानी

इसलिए गुरु को बाबा फकीर या श्री दीवान चन्द मत समझो। हाँ! उनकी वाणी गुरु है।

बानी गुरु गुरु है बानी, विच बानी अमृत सारे।

हज़ूर महाराज राय साहिब जी महाराज ने अपनी प्रेम-बाणी में लिखा है कि अन्त समय फिल्म चलती हैं। गुरु भी आ जाता है और दर्शन होते हैं। यह वैसे ही दर्शन होते हैं जैसे तुम स्वप्न में दर्शन करते हो। मौत भी एक लम्बा स्वप्न है। कुछ समय तक उस जीव का सूक्ष्म शरीरं ऊपर के लोकों में रहता है। फिर जब कोई सन्त सतगुरु इस संसार में आता है तो वह जीवन भी यहाँ आकर जन्म लेता है और उस सन्त सतगुरु के सम्पर्क में आकर बाकी कमाई पूरी करके अपने आद घर पहुँच जाता है। अब आप देखो कि उन्होंने कितनी सच्चाई बताई है। लेकिन आजकल गुरु लोग क्या करते हैं? नाम ले लो, तुमको तुम्हारे अन्त समय पर गुरु आकर ले जायेगा। कितना धोखा है? लेकिन एक तरह से यदि देखा जाये तो यह धोखा भी नहीं है। निबल अबल अज्ञानी जीवों को एक सहारा है। लेकिन असलियत नहीं है। यह सहारा भी धन्य है क्योंकि इस से भी अज्ञानी जीवों के मन को शान्ति मिलती है।

गुरु नाम आदर्श का, गुरु है मन इष्ट।
इष्ट आदर्श को न लखे, समझो उसे कनिष्ट॥
बात बूझे मन मानी।

गुरु आईडियल है और आदर्श है। माँ के लिए बच्चे के दिल में कभी बुरा विचार नहीं आता, क्योंकि माँ उसका इष्ट है। लेकिन

दूसरा आदमी जो उस स्त्री को अपनी पत्नी समझता है। वह उस स्त्री को बुरा भला भी कह देता है। स्त्री तो एक ही है लेकिन उसके लिए भाव सबका जुदा-जुदा है। इस लिए गुरु आईडियल है।

गुरु भाव घट में रहे, अघट सुघट की खान।
जिसे समझ ऐसी नहीं वह है मूढ़ समान॥
गुरु रूप पिछानी॥

चेला तो चित्त में रहे, गुरु चित्त के आकाश।
अपने में दोनों लखें, वही गुरु का दास॥
रहे गुरुपद घट ठानी॥

कबीर साहिब ने एक जगह लिखा है-

एक तरवर दो पंछी बैठे, एक गुरु एक चेला।
चेले को तो धर धर खाया, गुरु निरन्तर खेला॥

हमारे मन में प्रश्न करने वाला चेला है और उत्तर देने वाला गुरु है। उत्तर तो तुम्हारे ही अन्तर में है। अपने भ्रम और अपने अज्ञान को मिटाने के लिए बाहर का गुरु धारण किया जाता है। असली और सच्चा सत्गुरु तो तुम्हारे अपने ही अन्तर में मौजूद है और वह है तुम्हारा अपना ही रूप।

सुरत शिष्य गुरु शब्द है शब्द गुरु का रूप।
शब्द गुरु की परख बिन, डूबे भरम के कूप। नर जन्म गवांनी

शब्द और सुरत एक बाहर में हैं। जैसे अब मैं बोल रहा हूँ, यह शब्द है और तुम सुन रहे हो यह सुरत है। एक शब्द और सुरत अन्तर में हैं। जो ऐसा नहीं समझता वह भ्रम में है।

गुरु ज्ञान का तत्त्व है, गुरु ज्ञान का सार।
गुरु मत गुरु गम जा लखे, फिर न भव भय भार।
कमल जैसी गति अपनी।

हजूर दाता दयाल जी का क्या भाव है। यह तो वही जानते होंगे। जिस ज्ञान से मेरा भव पार हुआ, वह यह है कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूँ। यह मालिक की सृष्टि है। इसमें जो कुछ हो रहा है, यह सब उसका खेल है और उसकी मौज है। इस ज्ञान से मुझे शान्ति मिली। मैं यह गुरु ज्ञान समझता हूँ। कई कहते हैं कि हम ब्रह्म है, कोई कहता है कि मैं अलख हूँ, अगम हूँ और कोई अपने आप को अनामी कहता है। मैं पूछता हूँ कि यदि तुम अलख, अगम और अनाम में भी पहुँच गये ता तुम क्या बन गये और तुम क्या कर सकते हो? जो कुछ किसी को मिला, वह उसके कर्म का फल मिला। लोग अपने विश्वास से मेरे पास से प्रसाद ले जाते हैं और ठीक हो जाते हैं। लेकिन मेरी स्त्री साढ़े छः साल बीमार रही। मैंने क्या कर लिया?

जिन स्त्रियों के संतान नहीं है। वे अपने विश्वास से मुझ से प्रसाद ले जाती हैं। लगभग दो सौ स्त्रियों को लड़के हुए लेकिन मेरी लड़की के विवाह को 20-22 साल हो गये। मैंने कई बार उसको प्रसाद दिया है। उसके कोई बच्चा नहीं है। तो क्या मैं कुछ करता हूँ? मेरी तो आँख खुल गई। मेरी तरह साफ कहने का दस्तूर नहीं था क्योंकि साफ कहने से दायरा नहीं बनता और अज्ञानी जीवों को सहारा नहीं मिलता। इसलिए मैंने जो समझा वह कहा। यदि मैं गलती पर हूँ तो मैं दोषी नहीं हूँ। हजूर दाता दयाल जी महाराज और हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज, जिन्होंने मुझे यह काम दिया था, उनकी भी तो आँख थी और वह जानते थे कि यह सच्चा आदमी है और भाँडा फोड़ देगा।

राधास्वामी सतगुरु सन्त ने, कही बात समझाय।
जो नहीं माने वचन को, उरझ उरझा उरझाय।
कौन समझे यह बानी॥

राधास्वामी सत्गुरु ने बात समझा दी। मैं कहता हूँ कि राधास्वामीमत वालों ने संसार को सुरझाने की बात नहीं कही बल्कि उरझाने की बात कही है। वह भी सच्चे हैं। क्योंकि जीव तो आते ही उरझने के लिए हैं। सुरझने के लिए कौन आता है।

अपने उरझे उरझियां, उरझे सबस संसार।
अपने सुरझे सुरझियां, यह गुरु ज्ञान विचार।

आदमी स्वयं ही उरझता है और स्वयं ही सुरझता है। जब कोई सत्गुरु मिल जाता है, तब सच्चा ज्ञान और सच्चा भेद मिलता है। यदि मेरे सत्संग से किसी की बुद्धि साफ नहीं होती तो मैं दोषी हूँ। मेरे सत्संग में एक बार तो आदमी को बात का विश्वास हो जाता है। इसके बाद यदि वह अमल न करे तो फिर मेरा दोष नहीं।

इसलिए मैं कहता हूँ कि गुप्ता साहिब! आप का मार्ग ग़लत नहीं है। मैं यह नहीं कहता कि मुझे पूजो। मैं एक डिब्बे की मुर्गियों को निकालकर दूसरे डिब्बे में बन्द करना नहीं चाहता। आपका मार्ग ठीक है। केवल अनुभव और ज्ञान की आवश्यकता है। आपने बहुत अभ्यास किया है। अभ्यास की अवस्था प्रकृति के अनुसार बदलती रहती है। मगर अनुभव, ज्ञान और निश्चयात्मिक बुद्धि नहीं बदलती। आप आये मुझे बहुत खुशी है। मैं तो हजूर दाता दयाल जी का सेवक हूँ। उन्होंने मुझे आज्ञा दी थी कि फकीर! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैंने बदल दी। मैंने इस स्थान का नाम रुहानी सत्संग नहीं रखा, बल्कि ''**मानवता मन्दिर**'' रखा है। आध्यात्मिकता के अधिकारी बहुत कम है। साधारण जनता के लिए मैंने ''**मनुष्य बनो**'' की आवाज़ उठाई है। क्योंकि आप परमार्थिक दृष्टि से मेरे पास आये हैं। इसलिए मैंने जो समझा बता दिया।

''सब को राधास्वामी''

●

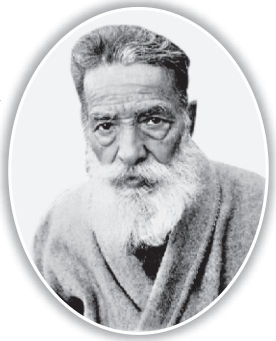

सत्संग

परम सन्त परम दयाल
पं० फ़कीर चन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर।

मेरा अनुभव

हजूर महाराज राय सालिग राम साहिब का यह शब्द 'प्रेमबाणी' से पढ़ा गया:-

आज गावो गुरु गुन उमँग जगाय॥

दया धार धुर घर की वासी।
नर देही में प्रगटे आय॥

निज घर का मोहि पता बताया।
मारग का दिया भेद लखाय॥

भिन्न भिन्न निरनय मंजिल का ।
मेहर से दीना खोल सुनाय॥
अपनी दया का दीन सहारा।
मन और सुरत शब्द लगाय॥

करम भरम की फाँसी काटी।
काल करम से लिया बचाय॥
प्रीत प्रतीत बढ़ा कर लिये में।
दीना घर की ओर चलाय॥
जिन यह भेद सुना नंहि गुरु से।
सो रहे माया संग लिपटाय॥
सनम जनम वे दुख- सुख भोगें।
भरमें चार खान में जाय॥

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ तूने यह पाखण्ड का जाल क्या बनाया कि तू सत्संग कराता है, किताबें लिखता है ! तेरा मतलब क्या है, तेरी गरज़ क्या है क्यों करता है? यह एक सवाल है जो मैं अपनी आत्मा से करता हूँ।

बात यह है दोस्तों! ब्राह्मण के घर पैदा हुआ बचपन से उस राम या भगवान के मिलने की तम्मन्ना थी। जैसे कि मैं कहा करता हूँ कि चौबीस घण्टे रोने के बाद एक मेरा दृश्य था जो मुझ को दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गया। उन्होंने मुझे गुरुमत की तालीम दी और असली और सच्चे राम के मिलने के लिए अपने अन्तर में काम दिया। क्योंकि स्वामी जी व कबीर साहिब की वाणी में सब का खण्ड़न था: राम भी नहीं पहुँचा, कृष्ण भी नहीं पहुँचा, मोहम्मद भी नहीं पहुँचा, जैन और बौद्ध भी नहीं पहुँचे, वेदान्त और सूफीइज्म को भी कालमत में रखा, तो मेरे लिए यह एक अचम्भे की बात थी। मैं सोचा करता था कि हे भगवान् ! मैं तो तुझे मिलने के लिए निकला था मैं कहाँ फँस गया! जहाँ यह सन्त कहते हैं कि सन्त ईश्वर और परमेश्वर से भी ऊँचे होते हैं; ऐसी इनकी वाणियाँ पढ़ता था। उस वक्त मैंने प्रण किया था कि इस रास्ते सच्चा होकर

चलूँगा , जो कुछ मेरा अनुभव होगा बता जाऊँगा। मैं जो कुछ यह काम करता हूँ किसी पर मेरा कोई एहसान नहीं है, मैं अपना कर्म भोगता हूँ। दूसरे दाता दयाल ने सन् १९३३ में मुझे कहा था कि फ़कीर! जमाना बदल जायेगा, मज़हब व मिल्लत की शक्लें बदल जायेंगी तुम शरीर छोड़ने से पहले तालीम को बदल जाना। मैंने जो कुछ किया उसका मैं दावा नहीं करता। जो कुछ मैंने अनुभव किया उसका भी दावा नहीं करता। हो सकता है कि जो कुछ मैंने अनुभव किया हो गलत हो, मगर मेरी नीयत साफ है।

तो मुझे गुरुमत से क्या मिला? आज मैं आप लोगों को वह कहना चाहता हूँ। हजूर महाराज कहते हैं-

आज गावो गुरु गुन, उमँग जगाय।

यह हज़ूर राय सालिग राम साहिब की वाणी है, जिन्होंने पन्थ चलाया है; वह अपने गुरु के गुण व एहसान में यह शब्द गा रहे हैं कि उनको क्या मिला:-

दया धार धर घर के बासी।
नर देही में प्रगटे आय॥

यह हजूर महाराज का ख्याल था कि स्वामी जी महाराज जो थे, वह उस अकाल पुरुष या अनामी धाम या जात से नर देही में आये थे, यह उनका विश्वास था और मेरा भी विश्वास दाता दयाल पर ऐसा ही आया था; गो मैं राधास्वामीमत के ख्याल से नहीं आया था मगर मेरे दिल में यह ख्याल आया था, राम को मिलना चाहता था। किताब में लिखा हुआ था।

नाना भाँति राम अवतारा।
रामायण शत कोटि अपारा॥

इसलिए मैं चौबीस घण्टे रोया। यही मेरा विश्वास था। हजूर महाराज कहते हैं:-

निज घर का मोहि पता बताया।
मारग का दिया भेद लखाय॥

वह क्यों कहते हैं कि गुरु के गुण गाओ? केवल इस लिए कि हजूर महाराज को स्वामी जी ने अपने असली घर का पता बतलाया और रास्ते की मंजिल बता दी। हम सब जो गुरुमत में शामिल हैं हम में यह नुक्स है कि हम गुरु को जफ्फी मार लेते हैं, वह जो भेद या राज बताया है उसकी तरफ हम नहीं चलते। जितनी इस वक्त गुरुमत में त्रुटि है, कमी है वह केवल यह है कि जो तो भेद है, मंजिल मकसूद है या रास्ता है हम उस पर ध्यान नहीं देते हैं। हम क्या करते हैं? सारी जिन्दगी बाबा सावन सिंह जी या बाबे फ़कीर या महर्षि जी का ध्यान करते - करते मर गये, नतीजा क्या निकला? कि घर को नहीं पहुँचे। क्या कहा मैंने! मैं खुद ऐसा ही था। मैंने भी दाता दयाल को जफ्फा मारा हुआ था, किसी ने किसी गुरु को जफ्फा मारा, किसी ने किसी और को मारा, मैंने दाता दयाल को जफ्फा ऐसे ही मारा हुआ था। तुम लोग तो गुरु को जफ्फा इसलिए मारते हो कि तुमको पुत्र मिल जाये, तुम्हारा मुकद्दमा ठीक हो जाये, तुम्हारी बीमारी चली जाये, तुम्हारा यह हो जाये, तुम्हारा यह हो जाये। मेरे पास कितनी दुनिया आती है, इसी वास्ते आती है कोई गरीब है, तो किसी को कोई मुसीबत है, दुनिया को परमार्थ की तो जरुरत है ही नहीं यह तो सिर्फ बकवास है। वह नहीं है, वह नहीं है, वह नहीं है।। इसी किस्म के पत्र आते हैं! यह तो कोई नहीं जानना चाहता कि असलीयत क्या है।

तो गुरु करता क्या है? गुरु धुर घर का भेद देता है। जो आदमी गुरु के साथ तालुक पैदा करके उस भेद को जो वह देता है वहाँ तक नहीं

पहुँचता, उसकी तरफ सफर नहीं करता। उसने जैसा गुरु किया, वैसा न किया; उसकी सारी की सारी जिन्दगी बर्बाद गई, जो जिन्दगी का मकसद था वह पूरा न हुआ:-

भिन्न भिन्न निरनय मंजिल का।
मेहर से दीना खोल सुनाय॥

मंजिल जो थी कि हमने कहाँ जाना है। अब यह तो हजूर महाराज जी को पता होगा कि स्वामी जी ने उनको कौन सी मंजिल बताई। साधारण तौर से यही कहते हैं कि सहस्त्रदल कमल चलो, त्रिकुटी चलो, शून्य चलो, महाशून्य चलो। चूँकि मैंने प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊँगा, मैं चला हूँ इस रास्ते, मैंने क्या समझा? पहली मंजिल सहस्त्रदल कमल की, दूसरी त्रिकुटी की, तीसरी शून्य की, चौथी महाशुन्य की, पाँचवी सोहंग और छठी सत्तलोक की, साँतवीं अलख की, आठवीं अगम की नौवीं अनामी की। मैं कोई दावा नहीं करता कि मैं जो कुछ कहता हूँ यही ठीक है। हमारे जीवन में, हमारी जो जिन्दगी है, इसके अन्तर अहसासात (ख्यालात, Feelings) उठते रहतें हैं। हर शख्स के अन्दर ख्यालात उठते रहते हैं; उसकी चेतनता की अवस्था होती रहती है। तब हमारा मन, जब हम अनेक प्रकार के विचारों और ख्यालों में रहते हैं, उसको बोलते हैं सहस्त्रदल कमल यानि अनेकवाद में हम रहते हैं। समझ गये! अनेकवाद!! हम आप बैठे हुए होते हैं, कभी कुछ सोचते हैं, कभी कुछ सोचते हैं, कभी कुछ सोचते हैं, कभी कुछ सोचते हैं, कभी कोई चिन्ता, कभी कोई चिन्ता करते हैं कि नहीं करते? यह जो हमारी अवस्था है यह है एक हमारी हालत।

जब हमको गुरु मिल जाता है, वह अपने अन्तर चलने को कहता है तो हम अन्तर यहाँ ध्यान करते हैं। वह ध्यान किसका बताता है?

कहता है अजपाजाप कर भई, गुरु का ध्यान कर। वह अजपाजाप में क्या होगा? तुम्हारे मन के एक ख्याल को ले लिया, वह जो तुम्हारा अनेकवाद है बहुत ख्याल उठते हैं, वे खत्म हो गये। जब तुम अजपाजाप करते हो, उस वक्त क्या होता है ? अगर अजपाजाप, चाहे अजपाजाप तुम पाँच नाम का करो, चाहे राम नाम का करो, चाहे गायत्री मन्त्र का करो, चाहे अल्लाहू या राधा स्वामी का करो, कुछ भी करो, जब आँख बद करके, अपने अन्तर बैठ कर के तुम अजपाजाप करोगे और तुम्हारी सुरत मन के साथ अजपाजाप करेगी, होगा क्या? जो मन अनेक ख्याल उठाता है यह खत्म हो जायेगा, यह नहीं रहेगा। यही होगा और तो कुछ नहीं! या और होगा? सोचो मेरी बात को। जब यह मरहला (दर्जा) तय हो जाता है , क्योंकि तुम्हारा मन है, अनेकवाद में बहुत सी वासनाएँ होती हैं; हमारे अन्तर में तरह - तरह की,ि कसीक ेक ु छ, ि कसीक ेक ु छ,व हज ेस् थूलच ेज़क े वासनाएँ तुम्हारे अन्तर होती हैं, जब तुम मन इक्ट्ठा करोगे, वह चूँकि ख्याल तुम्हारा सूक्ष्म माद्दा है, तुम्हारे ख्याल में भी पाँच तत्व है: आग है , पानी है, मिट्टी है , सब कुछ है तो जब तुम इक्ट्ठा करोगे तो जिस तरह से बाहर का घड़ियाल, पाँच- साँत धातुओं का बनाकर के तुम उसके ऊपर हथौड़ा मारते हो , आवाज़ आती है, इस तरह वह जो तुम्हारे (अवचेतन मन) में तुम्हारी वासनाएँ जो दुनिया की स्थूल माद्दे की इच्छाएँ है जब अजपाजाप करने से इक्ट्ठी होंगी, उस के ऊपर तुम्हारी सुरत चलेगी तो जो वहाँ आवाज मालूम होगी वह तुम को ऐसी मालूम होगी जैसे घण्टे की है। एक तो यह रास्ता या मंजिल है।

ऐसे ही जब तुम आगे जाओगे, मगर आगे कौन जायेगा? जिसको अपने घर की तलाश है। मैं नाम नहीं दुनिया को देता, क्यों नहीं देता?

दुनिया को नाम की जरुरत नहीं । सन्तों के मार्ग में नाम दान के मायने क्या है? अपने घर जाना, अपनी आद अवस्था को पहुँचना इसी वास्ते नाम लेते हैं। तो जिस शख्स को वहाँ की जरुरत ही नहीं है उसको नाम देना! बुरा न मानना! हम गुरुओं ने तुम लोगों को जो चेला बनाया है तुम्हारे कल्याण के लिए नहीं बनाया , अपने मान के लिए , अपनी इज्जत के लिए कि हमारा इतना डेरा है ताकि हर महीने चेला आता रहे और आकर और दसौंध देता रहे। जब ये गुरू लोग नाम देते हैं उस वक्त क्या कहते हैं? दसवाँ हिस्सा गुरु दरबार में दो भाई : यह शर्त लगती है। चूँकि सन्तमत की तालीम में धोखा है इस वक्त, सच्चाई नहीं बयान की जाती है और मेरे जिम्में दाता दयाल ने कहा था तालीम बदल जाना इसीलिए मैं सच्चाई की घोषणा कर रहा हूँ। मैं नाम क्यों नहीं देता? उसका अधिकारी कौन है:-

विषयों से जो होय उदासा, परमारथ की जा मन आसा।
धन सन्तान प्रीत नहीं जाके, खोजत फिरे साधु गुरु जागे॥

यह नाम तो उसका मिलना चाहिए जो विषयों से उदास है । मैं खुद कई दफ़ा हैरान होता हूँ, कि हम हिन्दू हैं, हम तो आवागमन से बचने के लिए करते क्या है? गुरुओं के पास जाते हैं, कहते हैं हमारा जनम-मरण छूट जाये। कितना तरद्दुद करते हैं और लुत्फ़ यह है कि हम बच्चे पैदा करते हैं। तुमने पैदा कर लिये, फिर बाप यह चाहता है कि मेरा पोता हो जाये, मेरा दोहता हो जाये, मेरी दोहती हो जाये, ऐसे आदमियों के लिए कहाँ यह सन्तमत है! और अगर तुम मुझ से पूछो मैं तजुर्बे के बाद क्या कहना चाहता हूँ, (मैंने, स्वयं गलती खाई हुई है) औलाद पैदा करना एक महापाप है , जो खुदरौ सन्तान पैदा होती है। कल भी , मेरे पड़ोस में एक नौजवान लड़का है, उसकी शादी हुई, उसके बच्चा पैदा हुआ। आया क्या है? 'लड़का पैदा हुआ बाबा जी! '

मगर पेट चीर करके निकाला , पैंतीस टाँके लगे।'' अब तुम सोचो ! एक ऐसी माया है। औरतें बच्चा पैदा होने के वक्त कितनी मुसीबतें सहती हैं, मगर यह एक ऐसा विषय है हमारे अन्दर में , जो इन तमाम मुसीबतों को हम बर्दाश्त करते है मगर परवाह नहीं करते! और फिर जो बच्चा पैदा होता है वह खबर नहीं टी.बी. से मरेगा या कैन्सर से मरेगा, कैद होगा , चार सौ बीस करेगा, हेरा फेरी करेगा, क्या होगा! यही काल का चक्कर है। सन्त जीवों को इस काल के चक्कर से निकालना चाहते हैं मगर क्या दुनिया निकलना चाहती है? मेरे पास कितने आते हैं , अभी एक औरत यहाँ रहती है, उसकी बहन है , मेरे पास आयी बाबा जी मेरी बहन की लड़की के लड़का नहीं है! सोचो!! हमारा मजहब, हमारा धर्म जितने हैं ये सब वाचक है; पाखण्ड का है धोखे का है असलियत की किसी को कोई जरुरत नहीं है । तम सोचो कोई सुखी है दुनिया में? भूकम्प आते हैं , करोड़ों आदमी मर जाते हैं । लड़ाइयों में क्या होता है ! घरों में गरीबी है, अमीरी है , दुःख है , सुख है !! दुनिया इस तरफ ध्यान नहीं देती।

इसी वास्ते जीवों का ध्यान दुनिया से हटाकर परमार्थ की तरफ़ ले जाने के लिए ही स्वामी जी का जहूर हुआ या कबीर साहिब प्रकट हुए, मैं आया या दाता दयाल आये मगर हमने बताया क्या! इन गुरुओं ने हमें बताया क्या? बताओ तो सही क्या बताया तुम लोगों को? तुमको दुनिया में फँसाने की कोशिश की और क्या किया! बिलकुल सच्ची बात है !!

सन्तमत में होता क्या है ? क्या मिला हजूर महाराज को और मुझे क्या मिला? मुझे नहीं पता हजूर महाराज को क्या मिला मैं आज वह बता के अपने कर्जे से उऋण हो जाना चाहता हूँ:-

आज गावो गुर गुन उमँग जगाय।।

दया धार धुर घर के वासी।
नर देही में प्रगटे आय॥

निज घर का मोहि पता बताया।
मारग का दिया भेद लखाय॥

भिन्न - भिन्न निरनय मंजिल का।
मेहर से दीना खोल सुनाय॥

अपनी दया का दीन सहारा।
मन और सुरत शब्द लगाय॥

अब तुम देखो! यहाँ लिखा हुआ है ''अपनी दया का देकर सहारा'' ! दुनिया ऐसी दीवानी है वह यह समझती है कि गुरु महाराज फूँक मार के तुम्हारी सुरत को चढ़ा देगें । गुरु की दया यह नहीं है न कोई फूँक मार के चढ़ा सका है यह धोखा है और फरेब है। क्यों मैं कहता हूँ ? मेरे पास कितने ही आदमी आते हैं; सत्संग में। जो तो सत्संग में बैठ के मेरी बात को ध्यान से सुनते हैं उनकी बैठे- बैठे समाधियाँ लग जाती हैं और कई ऐसे हैं जिनको मैंने अपनी मुँह की जूठ भी दी , उनके सिर पर हाथ भी फेरा, उनको कुछ नहीं हुआ। तुम लोगों को नाम देते हो, जब तुम नाम देते हो तुम बताओ तुम उनकी सुरतें चढ़ाते हो? सब बोलना! उनकी सुरतें चढ़ जाती है, गुरु से पूछो तुम चढ़ाते हो? इन गुरुओं ने हम लोगों के साथ सच्चाई का व्यवहार नहीं किया। हम लोगों को पर्दे में रखकर के हम को बेवकूफ बनाकर अपना नाम, अपनी जायदाद, अपना डेरा, अपना मन्दिर इन्होंने बनाया है। गुरु की दया क्या है? गुरु वचन कहता है। जब वह वचन कहता है उसका इन्सान को यकीन आ जाता है, जब तक किसी बात पर तुमको यकीन नहीं है , तुम आगे नहीं जा सकते । यह Faith का या यकीन

का मामला हे। मैं गुरु की दया यह समझता हूँ कि गुरु अपने वचन कह करके एक दूसरे आदमी की बुद्धि को निश्चयात्मक बना देता है। यह है गुरु की दया। हो सकता है कोई और गुरु और दया करता हो मैं नहीं जानता। जो कुछ किसी को मिल रहा है वह उसका अपना विश्वास है।

अब तुम यह देखो ! यह अमेरिकन लेडी कैनेडी आई हुई है। यह गरीब औरत है, अमेरिका में बर्जीनिया में रहती है। इसके अन्तर मेरा रूप प्रकट होता रहा है और उसके करिश्में हैं बहुतेरे । जब मैं गया इसने चार सफों का पत्र लिखकर मेरे पास भेजा कि मैं फलाँ तारीख को उसके अन्दर प्रकट हुआ, मैंने यह किया, मैंने यह किया, मैंने वह किया। एक दफा , यह बैंक में गई, इसके सिर्फ २०० डालर यह २५ ले आई। चूँकि मेरा ध्यान करती थी, यह गरीब थी, २५ के बीस दिन के अन्दर १७० डालर हो गये। समझते हो मेरी बात को। अब यह भारत आना चाहती थी, पैसा तो पास नहीं था। कोई और लेडी आ रही थी उसने इस को कहा चल मेरे साथ चल उस ने सारा खर्चा कर दिया। अब मैं सोचता हूँ कि क्या इस लेड़ी के अन्तर जब मेरा रूप प्रकट हुआ था, मैं जाता था? मैं नहीं जाता था। क्या मैं इसको जानता हूँ? अब से पहले नहीं जानता था। इसका सारा खेल किसने किया? इसके अपने ही मन ने और इसके अपने ही मन के विश्वास ने किया। मेरे पास रोज़ पत्र आते हैं, ऐसे-ऐसे केस मेरे सामने आते हैं कि मेरे तो पाँव से खुद मिट्टी निकल गई। मैं कही नहीं जाता, न मुझे पता होता है। तुम लोगों का अपना विश्वास है, अपनी श्रद्धा है, अपना यकीन है।

जिनका ध्यान यहाँ (भ्रूमध्य में) बैठ जाता है तुमको मैंने बोला, पहली Stage में होता क्या है? जिस किसी की वासना तुम्हारी , तुम्हारे

अन्तर में होगी, जो वासना तुम अवचेतन मन में रखते हो, जब तुम यहाँ अजपाजाप करोगे, वह वासना जो तुम्हारे अन्दर है वह फैलेगी । समझते हो मेरी बात को !जब तुम यहाँ इकट्ठे होगे, मन को इकट्ठा करोगे, मैंने तुम को बोला , तुम्हारी वासना इक्ट्ठी होगी , तो जिस किस्म की वासना होगी वह Develop करेगी और तुम्हारी आस पूरी होगी। इस वास्ते जितने सिद्धि शक्ति करने वाले होते हैं वे सारे के सारे पहली स्टेज में काम करते हैं। मैं नाम नहीं देता क्यों नहीं देता? लोग गलत वासनाएँ रखते हैं। गलत जानते हो। उनकी आशाएँ ठीक नहीं होती और जब वे अभ्यास करते हैं जो गन्दी वासनाएँ उनके अन्दर होती है वे Develop हो जाती है और सत्संगियों का नुकसान हो जाता है।

इस वास्ते मैं किसी को नाम नहीं देता, सत्संग कराता हूँ। पहले तुम अपने मन को शुद्ध रखो कि कैसी तुमने वासनाएँ करनी हैं, फिर तुम्हरा काम बनेगा। यह है कुँजी। जो शख्स दुनिया के इच्छुक हैं, जिनको संसार की इच्छाओं की पूर्ति की जरुरत है, उस वासना को रखकर के अजपाजाप करें, उनकी वह वासना अवश्यमेव पूरी होगी, लोगों की होती रहती है। अब मैं तो गया नहीं, इस अमेरिकन लेडी को जो कुछ मिला इसकी अपनी कामना वासना। तो गुरु का भेद क्या? मैं क्या भेद देना चाहता हूँ? ऐ इन्सान ! जो कुछ तेरे मन के अन्दर है । 'जैसी आसा वैसी वासा' जैसी करनी वैसी भरनी, जैसी नीयत वैसी मुराद। अभ्यास कर , अपनी नीयत साफ करके कर। पहली स्टेज तो यह है।

अच्छा, मुझे सन्तमत से क्या फायदा मिला? जब मुझे मन के रुप का निश्चयात्मक पता लगा, क्योंकि मुझे अपने घर जाने की जरुरत है, मेरा घर कौन सा है?- जब जो मेरा साधन है, मैं मन को छोड़ जाता हूँ।

मैं न सहत्रदल कमल में साधन करता हूँ, न त्रिकुटी , न शून्य, महाशून्य और न भँवरगुफा में, बल्कि मन को छोड़ के मन से परे जो कि मेरी अपनी अवस्था है संत की : मेरे हैपने की, मेरी हस्ती की (जिन्दगी और है हस्ती और है) वहाँ ठहरने की कोशिश करता रहता हूँ क्योंकि मुझे अपने घर जाने की जरुरत है। नहीं समझ में आती है मैंने क्या कहा! यह जो तुम्हारा पाँच नाम का अभ्यास है यह तुमको दुनिया की चीजें देगा, तुम्हारे मन को आनन्द देगा, तुमको खुशियाँ देगा, यह ठीक है। सहस्त्रदल कमल का साधन न करोगे, घण्टा, शंख सुनोगे, जिस किस्म की वासना तुम अपने अन्दर ले के जाओगे वह वासना तुम्हारी पूरी होगी।

विवेक और समझ चाहिए तो त्रिकुटी में जाओ। त्रिकुटी में क्या होता है? तुम्हारा अपना ही मन है: वही गुरु है और वही चेला है। तुम्हारा मन ही त्रिकुटी में गुरु बनता है, तुम्हारा मन ही चेला बनता है। लोग जो त्रिकुटी में मुझे बनाते हैं , मैं तो होता नहीं! तो मुझे यकीन हो गया कि वह जो तुम्हारे अन्दर बाबा फक़ीर प्रकट होता है वह कौन है वह तुम्हारा अपना ही तो मन है, मैं तो जाता ही नहीं!

अरे दीवाने! मैं अनामी धाम से इसी वास्ते आया हूँ कि इस वक्त इस वर्तमान गुरुमत ने हम गृहस्थियों को बेवकूफ बना के पागल किया हुआ है। तुमको बता देना चाहता हूँ कि गुरु भी तुम्हारा अपना मन है चेला भी तुम्हारा अपना मन है। बलबीर! आँखे खोल! किधर फिरता रहता है । मेरे पास तुम लोग आते हो मैं तुमको सच्चाई बयान करना चाहता हूँ यद्यपि यह ठीक है कि तुमको सच्चाई की जरुरत नहीं, ना ही! तुम्हारा मन ही त्रिकुटी में, चाहे किसी भी गुरु का या राम का ध्यान करो तुम्हारा अपना मन ही तुम्हारे सामने, दूसरा कोई नहीं। तो जिस किस्म का तुम्हारा विश्वास है, जिस किस्म की तुम्हारी श्रद्धा

है और आस है , जब तुम ध्यान करोगे वह तुम्हारी आस पूरी होगी। यह मंजिल का भेद जो मैं दे रहा हूँ। हजूर महाराज को क्या मिला , हजूर महाराज जानते होंगे। मुझे नहीं पता, मैं नहीं जानता । दाता दयाल जी को क्या मिला गुरु महाराज से मुझे नहीं पता, बाबा सावन सिहं जी को बाबा जैमल सिंह ही से क्या मिला मुझे नहीं पता, तुम लोगों को बाबा सावन सिंह जी से क्या मिला, मैं नहीं जानता, जो मुझको मिला वह कहता हूँ।

चूँकि मेरे जिम्मे ड्यूटी थी कि शिक्षा को बदल जाना, हो सकता है मैंने जो कुछ समझा हो, गलत हो , इसका मैं दावा नहीं करता। अगर मैं गलती पर हूँ तो मैं मुज़रिम नहीं, बाबा सावन सिहं जी मुज़रिम है या दाता दयाल जी महाराज मुज़रिम हैं, उन्होंने मुझको यह काम दिया; क्या सन्तों की आँख नहीं थी कि मैं सच्चा आदमी हूँ जो कुछ कहूँगा सच कहूँगा। मेरी नीयत साफ है। यह मैं दावा नहीं करता कि मैं जो कुछ कहता हूँ यही ठीक है। मेरी उमर गुजर गई, मैंने सारी उमर इसी खब्त में गुजार दी; बारह- बारह घण्टे मैंने अभ्यास किया है, तलवार की धार चला हूँ, मैंने अपने जाती गरज़ के लिए कभी झूठ नहीं बोला। अगर कोई मेरे में ऐब रहा है तो सिर्फ यह रहा है कि छोटी उमर की शादी थी। मैंने काम जरूर चौबीस-पच्चीस वर्ष की उमर तक अपने घर में ज्यादा भोगा। फिर बारह वर्ष बसरा-बगदाद में रह गया, पाँच साल फिर घर में खेह खाई , फिर अपने आपको बचाये रखा। अगर आप सच्चाई नहीं सुनना चाहते हैं तो आप ना आया करें, मैं आपको बुलाता नहीं हूँ!! मेरे जिम्मे तो ड्यूटी थी मैंने ड्यूटी पूरी कर दी और करता रहता हूँ। जिसका जी चाहे मेरे पास आये जिसका जी चाहे ना आये। जिसका जी चाहता है सत्संग की किताब कोई ले जाये, नहीं जी करता तो ना ले जाये, मुझे इस से क्या है! मगर मैं जो

कुछ कहता हूँ मेरी नीयत साफ है क्योंकि मेरे जिम्मे तो ड्यूटी थी मैंने डयूटी पूरी कर दी और करता रहता हूँ।

मैं करना नहीं चाहता था, बाबा सावन सिंह जी ने कहा जरूर कर। उन्होंने मुझे कहा "फकीर"! मुझ से सच नहीं कहा गया क्योंकि मेरा डेरा था। और मै भी जानता हूँ कि मैं बेवकूफ हूँ; जो कुछ मैं कहना चाहता हूँ तुमको इसकी जरुरत है ही नहीं! आप गृहस्थी हैं इसलिए आपको गृहस्थ की बात कहना चाहता हूँ, क्या? कि जब दूसरे आदमी अपने विश्वास से मुझको बना लेते हैं और मेरे पास से काम ले लेते हैं, इससे साबित हुआ कि हर एक इन्सान के अन्तर, मन की ताक़त है। तुमको क्या करना चाहिए? आस अच्छी रखो कुछ कुछ चाहते हो वह विश्वास रख के यहाँ सहस्त्रदल कमल के स्थान पर ध्यान किया करो। मैं नहीं कहता तुम राधास्वामी हो जाओ, मैं नहीं कहता तुम सनातनी हो जाओ, जिस मजहब के हो , जिस रुप को तुम पसन्द करते हो, जिस रूप से तुम्हारा प्रेम है उसी का सुमिरन करो, उसी को याद करो, तुम्हारी दुनिया बन जायेगी, बनती है! समझ गये मेरी बात को, मैंने क्या कहा है आपको! मैं आपको बताता हूँ कि तुम्हारा मन ही गुरु है :

यह मन समझन जोग, साधु यह मन समझन जोग।
मन ही ज्ञान और मन ही ध्यान है, मन ही मोक्ष और भोग॥
मन में वेद को पढ़ते ब्रह्म, शंकर करते योग।
मन ही अन्दर सृष्टि व्यापी, मन ही में है रोग॥
मन गोविन्द मन गोरख रूपा, मन ही योग वियोग।
मन ही पानी मन ही अग्नि, मन ही आनन्द सोग॥
मन ही गुरु है मन ही चेला, मन ही ब्रह्म संयोग।
मन ही का व्यौहार जगत में , नाहीं जानें लोग॥

अब आप देखो! मैं गुरु के क्यों गुण गाता हूँ। इसीलिए कि मुझ को भेद मिल गया:-

आज गाओ गुरु गुन, उमँग जगाय॥

क्यों गुण गाओ:-

दया धार धुर घर के वासी।
नर देही में प्रगटे आय॥
निज घर का मोहि पता बताया।
मारग का दिया भेद लखाय॥

अब धुर घर का भेद मुझे कैसे पता लगा? दाता दयाल जी ने और स्वामी जी ने बहुतेरा समझाया परन्तु इस तरह से समझाया कि किसी की समझ में नहीं आया। दाता दयाल की दया! जिन्होंने मुझे यह काम दिया, इसके कारण जब मुझे मन के रुप का पता लगा, तो मैं अब अगर घर जाना चाहूँ तो मुझे क्या करना चाहिए? मन के परे जाऊँगा तब मैं घर जा सकता हूँ। जब तक मैं मन में हूँ, मेरा घर कैसा!

मन उस वक्त पैदा हुआ जब मेरी सूरत प्रकाश और शब्द से होती हुई इस शरीर में ना आये तो मन, बुद्धि , चित्त अंहकार पैदा ही नहीं होता, कैसे पैदा होगा! सूर्य की किरणें ज़मीन पर पड़ती हैं, बीज होता है उसमें पानी भी होता है तब उसमें अंकुर व पत्ते फूटते हैं, वृक्ष पैदा होते हैं। जब हमारी प्रकाश रूपी आत्मा है, जिसके बीच में सुरत रहती है जब वह शरीर में आती है, शरीर में खून का दौरा करता है, Cells जो बने हुए हैं ये खुलते हैं तब हम में बुद्धि, विवेक और समझ-बूझ की शक्ति आती है तो अगर हम अपने घर जाना चाहें तो कब जा सकते हैं? जब हम इस मन से परे जायेंगे। लाख तुम कोशिश करो, अभ्यास करो, जब तक तुमको यह ज्ञान नहीं है कि मन और चीज़ है,

तुम और चीज़ हो और मन को छोड़ नहीं सकते , तुम क्या ! कोई ऋषि हो या कोई कुछ हो, वह अपने घर में नहीं जा सकता । यह नियम है ।

मुझ पर तो दया दाता दयाल ने कर दी, आप लोगों की सेवा की, आप लोगों की दया से मेरी आँख खुली मैंने कहा ओहो ! मैं कहाँ फँसा हुआ था, क्या करना था, बात क्या थी, क्या हो गई ! कबीर साहिब का शब्द है :-

साहिब मिल गये तिल ओहले।

तिल ओहला क्या? एक पर्दा ही था इस मन का ! हम मन को ही सब कुछ समझते थे । मन के अन्दर रुप आ गया , हम बड़े नाचते थे, आज फलाँ गुरु प्रकट हो गया, आज देवी प्रकट हो गई, आज बाबा फकीर आ गया, आज मुझ को यह मिल गया, वह जो कुछ मिला वह था क्या? वह माया थी । वास्तव में वह कुछ नहीं था, हम इस चक्कर में फँस जाते हैं । मुझ पर आप लोगों ने दया कर दी । मगर जहाँ मैं बोलता हूँ आपको जरुरत नहीं । चूँकि मैं ऊँचा बोलता हूँ, आप लोगों के हित के लिए मैं क्या कहता हूँ ! कि तुम अपने ख्याल को ठीक रखो। जो कुछ चाहते हो उसकी सच्ची आस रखो तुमको मिल जायेगा । यह भेद है जो मुझको मिला और मैं देता हूँ ।

मेरा कोई काम अड़ा नहीं रहता, मैं हैरान होता हूँ, कैसे होता है; खुद-ब-खुद होता रहता है । जिस चीज़ की मैं अपने अन्तर में कामना करता हूँ वह हो जाती है, मेरा काम बन जाता है और मैं ख़ुद हैरान हो जाता हूँ कैसे बनता है, मन्दिर वाले भी हैरान हो जाते हैं । यह कैसे होता है । मैंने आपको कुँजी बता दी, वासना रखो और यहाँ सहस्त्रदल कमल के स्थान पर साधन किया करो । जब तुम साधन करोगे तुम्हारी Will Power बढ़ जायेगी, जो कुछ तुम्हारे Subconscious Mind में होगा वह पूरा होगा। यह नहीं कि किसी गुरु ने तुमको बाहर से

देना है, तुम भूल में हो!! तुमको जो कुछ मिलना है तुम्हारी Will Power से मिलना है । मैं साधारणतया लोगों को कहा करता हूँ , 'तुम ध्यान किया करो भई मेरा , जाओ ।' जिनका ध्यान बन जाता है उनके काम हो जाते हैं ।

कई मेरे पास आये, उनके ध्यान नहीं बनते तो मैं टाँग अड़ाऊँ, मैं क्या करूँ ! मैंने जाना है तुम्हारे अन्दर में ! ध्यान तुमने करना है, मैंने नहीं तुम्हारे अन्दर जाना । यह एक वहम है दुनिया को कि गुरु महाराज मेरे अन्दर आ जाओ; एक सहारा है एक पागल आदमी के लिए। बाहर के गुरु ने, किसी ने तुम्हारे अन्दर नहीं जाना । तुमने अपने प्रेम से अपने अन्तर में गुरु के रुप को प्रकट करना है । समझती है माई ! यह बूढ़ी माई है । इन्दौर से यहाँ आई हुई है । मैं अपनी ड्यूटी पूरी करता हूँ सच्चाई बता दूँ । मैं तुम लोगों को अज्ञान में रखकर अपना उल्लू सीधा नहीं करना चाहता; आपको बेवकूफ बना के लूटना नहीं चाहता क्यों कि मैं आया ही सच्चाई बताने के लिए हूँ :-

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा।
दुःखी जीव को अंग लगाकर, ले जा गुरु के देसा ॥
तीन ताप से जीव दुःखी हैं, निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई , नाम दान दे दानी ॥

मैं जो मुँह से वाक्य कह रहा हूँ मेरा यही नाम दान है अगर तुम इसको समझ जाओ, फिर अपने अन्दर साधन करो बस फिर कोई जरूरत नहीं है, गलत गुरुइज्म में आकर के हम लोग टूट गये । अब देखो ! लोग कहते हैं मेरा रुप जाता है, मेरे तो बाप को पता नहीं, कौन मरता है । जिस किस्म का ख्याल दिया हुआ होता है । यह इन्दौर वाली माई बैठी है। इसकी भाभी मरी वह इसकी गोद में थी। वह सनातनिष्ट थी, गीता और रामायण पढ़ रहे थे, उसकी जान नहीं

निकलती थी। मुझे तो पता नहीं था। जो मरने वाली थी उसने बोला दयाल फकीर आ गया होशियारपुर से, वह कहता है राम- राम छोड़ दो, राधास्वामी- राधास्वामी जपो। अब वहाँ राधास्वामियों को पता लग गया वे भी दोड़े- दौड़े आये। वहाँ से एक लीला और दो तीन आदमी और इन्दौर से मेरे पास होशियारपुर आये और कहा कि आप गये उनके पास मैंने कहा मैं नहीं गया। कौन गया? पहले तो मुझे पता नहीं लगता था फिर पीछे से पता लगा कि भरजाई इसकी गोद में थी जब उसकी जान नहीं निकलती थी, यह चूँकि मुझे प्यार करती थी, इसने उसके कान में कहा दयाल फकीर को याद कर। '' नहीं समझ में आती है! इसने उसका ख्याल दिया। इसके ख्याल देने से उसके अन्दर मेरा रुप प्रकट हो गया और चली गयी।

तुम लोग लुट गये हो !अब निडर होके कहता हूँ कि इन डेरे वालों ने क्या किया। कोई महात्मा मरने के समय नहीं ले जाता। हमको पर्दों में रखकर इन्होंने हमारी जायदादें लूटी हैं और हमको बेवकूफ बनाया है। कोई सच्ची बात तुमको नहीं बताता और जो सच्ची बात बताता है तुम उसके दुश्मन हो जाते हो। मुझको कत्ल करने के लिए सावन आश्रम में कोशिश की गई। क्या कह रहा हूँ! मैं क्यों कहता हूँ? मेरे जिम्मे यह ड्यूटी है: मैं आया ही इसी वास्ते हूँ ।एक इन्सान! जो कुछ है तेरा अपना मन है जिस रुप में तू याद करता है उस रूप में वह आयेगा। राम को याद करता है राम आयेगा, कृष्ण को याद करता है कृष्ण आयेगा, देवी को याद करता है देवी आयेगी: न कोई बाहर से देवी आती है, न कोई बाहर से कृष्ण आता है, न कोई बाहर से कुछ आता है, यह बिलकुल सच्ची बात है।

मैं कैसे मान लूँ कि कोई जाता है , सुनो! इसी माई की एक लड़की है पार्वती उसकी सास मरी , बड़ी बूढी थी। बाबा सावन सिंह

जी से नाम लिया हुआ था। अच्छा! मरने लगी कहती है , बाबा सावन सिंह जी आ गये, फिर कहती बाबा जगत सिंह आ गये,

फिर कहती है बाबा फकीर आ गया। फिर बाबा फकीर कहता है , सामने देख। वह बाग है, बाग में कुटिया है वहाँ ले जाऊँगा तुमको। अब जब इन्होंने कहा मैं सोचने के लिए मजबूर नहीं हूँ कि ओ बेहया, बूड्ढ़े जब तू नहीं जाता तो दुनिया को सच्ची बात क्यों नहीं बताता। अगर मैं सच्ची बात तुमको नहीं बताता, तुम इसलिए मेरी इज्जत करते हो कि मैंने तुम्हारे अन्दर जाकर तुम्हारा यह काम कर दिया, मैंने यह कर दिया, मैंने वह कर दिया और फिर मैं यह तुमको साफ नहीं कहता तो जो कुछ तुम मेरी सेवा करते हो वह सेवा तो मुझे खा जायेगी। क्योंकि धोखा है, फ़रेब है और चारसौबीस है। जितने महात्मा गुजरे हैं मैं उन सब का क्रिया – कर्म करता हूँ। पुत्र जो है वह बाप का क्रिया – कर्म करता है ; उसको जिस योनि में हैं उससे निकलता है। मैं चूँकि सन्तों का अनुयायी हूँ, मैं यह सच्चाई ब्यान किये जाता हूँ ताकि इन पिछले महात्माओं जिन्होंने इस तरह पर्दा रखकर अपना मान और अपनी इज्जत ली, अगर उनकी रुह कहीं फँसी हुई है तो मैं उनका क्रिया- कर्म कर रहा हूँ कि निकल जाओ भई यहाँ से सन्तो, तुमने क्या किया। दुनिया में आकर के, धोखा दिया लोगों को, साफ बयानी नहीं की। तो यह भेद है:

आज गावो गुरु गुन, उमँग जगाय॥
दया धार धुर घर के वासी।
नर देही में प्रगटे आय॥

महात्मा जो कहते हैं , 'नाम ले जाओ, हम तुमको सत्तलोक ले जायेंगे मरते समय' वे धुर घर से नहीं आये, नांहि धुर घर से वह आया है जो दुनिया में सच्चाई बयान करता है कि ऐ इन्सान! यह तेरा अपना

ही मन है। जो कुछ तुमको मिलता है तेरे अपने कर्म का फल मिलता है। जैसी तेरी आशा है वैसी तेरी वासा है। गुरु का काम है तुमको ज्ञान देना, समझ देना, विवेक देना। लोगों का विश्वास होता है, उनका काम हो जाता है, मैं तो हैरान होता हूँ। मैं कभी कुछ बात कह देता हूँ दुनिया उस पर विश्वास कर जाती है, तो मैं तो करता नहीं तो कौन करता है? उनका विश्वास काम करता है। एक शख्स मेरे पास आया, दु:खी था, मैंने कहा क्यों चिन्ता करता है, सात दिन में मर जायेगा। मेरा तो मतलब यह था कि सोम, मंगल , बुध, वीर, शुक्र, शनि , रविवार, सात दिन में किसी दिन तो मरेगा ही। उसने विश्वास कर लिया जा के लड़कों को कहता है । बाबे ने मुझे कह दिया है, मैं सात दिन में मर जाऊँगा, छवें दिन मर गया। अब मैं अफ़सोस भी करता हूँ। जितना खेल है सब तुम्हारा विश्वास है। मैं तुमको यह नहीं कहता कि तुम मुझ पर विश्वास करो। मैं कहता हूँ तुम उस मालिक पर विश्वास करो, उस मालिक का कोई रुप नहीं , एक रूप मान लो बस, जो आदमी आज हनुमान को पूजते हैं , कल मन्दिर को, परसों मस्जिद को , चौथे देवी को, यह धोबी के कुत्ते न घर के न घाट के , इनको कुछ नहीं मिलना:-

एक ही साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।

उसका कोई रूप नहीं है , सब रुप उसके हैं। गुरु नाम है ज्ञान का , समझ का, विवेक का। गुरु की संगत में जाकर गुरु की सेवा है क्या? अब तुम जो मेरे पास बैठे हुए हो, जो कुछ मैं कह रहा हूँ अगर तुम ध्यान से सुन रहे हो और इस पर जा के विचार करोगे, तब तुम गुरु के सेवक हो। अगर रुपया देने से कोई आदमी तर जाता है तो बड़े-बड़े सेठ तो ये रुपया देकर तर जाते, तुम भूले हुए हो! रुपया देना तो यह दुनिया का व्यवहार है। मैं अब तक भी देता हूँ। मन्दिर से नहीं देता!

मेरा लड़का मुझे पैसे भेजता है, कटनी वाले भेजते हैं, सेठ दुर्गादास भेज देता है। जितना मेरा घर का खर्च होता है मैं चलाता हूँ बाकी जो कुछ बचता है वह मैं दान कर देता हूँ। यह नहीं कि मैं दान के विरूद्ध हूँ, दो ! मगर तुम यह समझो कि तुम मन्दिर बना दोगे या देवी का मन्दिर बना दोगे, तुम स्वर्ग चले जाओगे, बिल्कुल बकवास है। मन्दिर बना देने से या और कुछ काम कर देने से तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा; यह दुनिया की ख्वाहिश है। याद रखो, अगर तुम इस ख्याल से दान देते हो कि तुमको उसका फल मिले, तुमको दूसरा जन्म अवश्यमेव लेना पड़ेगा- दान जितना किया करो, निष्काम किया करो: गरज़ के लिए नहीं कि तुमको यह मिल जाये। परन्तु दुनियादार हो गरज़ के लिए करो तो मिलेगा, मगर आवागमन के चक्कर से नहीं बच सकते। समझ गये! इस वास्ते मैं गुरु के गुण गाता हूँ।

भिन्न भिन्न निरनय मंजिल का।
मेहर से दीना खोल सुनाय॥

मैंने पाँच नाम, पाँच स्थान की एक किताब लिखी हुई है उसमें मैंने सब कुछ साईन्स के आधार पर बता दिया कि यह क्या कारण है घण्टा क्यों बजता है, मृदंग क्यों बजता है , रारंग- सारंग क्यों बजता है? मुरली क्यों बजती है और वीणा क्यों बजती है। यह बिना कारण के नहीं बजते। किसी सन्त ने आज दिन तक यह नहीं कहा कि घण्टा क्यों बजता है, मृदंग क्यों बजता है, इसको मैंने साफ किया। तो मुझे क्या भेद मिला? कि सहस्त्रदल कमल से लेकर सोहंग पुरुष तक जितना खेल है सब मेरे मन का यह पता लग गया। अगर मैं घर जाना चाहूँ तो मुझे अपना मन छोड़ना पड़ेगा मन कब छूटेगा? सुख- शब्द से अपने अन्तर में धुनात्मक नाम जपने से। जो आदमी ध्यान करता रहेगा चाहे वह बाबा फकीर का ध्यान करे , या वह सूर्य का ध्यान करे,

चाहे वह रोशनी का करे, उसका आवागमन खत्म नहीं होगा, यद्यपि अच्छे लोक में जन्म लेगा । क्या कहा मैंने ! क्यों? प्रकाश से दुनिया की रचना बनती है। जो प्रकाश में रहेगा अन्त समय में प्रकाश में चला जायेगा, परन्तु जब भी प्रकाश को फिर रचना की जरुरत होगी वही सूरत मुड़ कर फिर यहाँ आ जाएगी। जिस तरह राम का अवतार हुआ या कृष्ण जी का अवतार हुआ तो ब्रह्मलोक से जितनी रूहें थी वह कोई गोपी बनी, कोई हनुमान बना, कोई सुग्रीव बना, बने कि नहीं बने? लिखा हुआ है ना! तो सन्तों का मार्ग बहुत ऊँचा है; इन चौदह लोकों तक मन का झगड़ा है। अगर कोई अपने घर जाना चाहता है तो सब कुछ छोड़ के केवल नाम है जो पाँच नाम से ऊपर है। पाँच नाम के जपने वाले का आवागमन नहीं छूट सकता!! नहीं छूट सकता!!! हाँ, वह ऊँचे से ऊँचे लोक में जा सकता है। वह नाम है निजनाम या सत्तनाम, वह तुम्हारा अपना ही नाम है, बड़ी ऊँची मंजिल है, गुरु ने यह बताया :-

अपनी दया का दीन सहारा।
मन और सुरत शब्द लगाय॥

मैं कई दफा सोचा करता हूँ शब्द योग से फायदा क्या? क्या नई चीज़ उन्होंने बताई है? वह इस वास्ते है कि तुम प्रकाश का साधन करते हो, बड़ी अच्छी बात है , ब्रह्म लोक में वासा तुम्हारा हो जायेगा, ठीक है इन्कार नहीं मैं करता परन्तु जब भी इस ब्रह्म को जब फिर जरुरत होगी वह तुम को यहाँ खींच लायेगा यद्यपि तुमको अच्छा जन्म मिलेगा। इस वास्ते यह शब्द योग है मगर अगर तुमको शब्द योग नहीं आता, तो कम से कम ब्रह्मलोक तक ही जाओ, प्रकाश को ही पकड़ो। समझते हो ना! साधन करो थोड़ा बहुत रोज:-

करम भरम की फाँसी काटी।
काल करम से लिया बचाय॥

अब मैं आत्मा से पूछता हूँ कि क्या गुरु काल कर्म से बचा देता है? फूँक मार के, नहीं जब तक कि वह ज्ञान नहीं देगा। जब तुम अपने आप को इस मन के चक्कर में फँसाओगे ही नहीं: अपना इष्ट प्रकाश और शब्द रखोगे तो काल कर्म क्या करेगा! काल कहते हैं वक्त को, कर्म कहते हैं हरकत को।

मुझे इसका निश्चयात्मक - ज्ञान हो गया। अगर आज मुझको इस असलियत का न पता लगता तो मैं पहला शख्स होता जो राधास्वामीमत और कबीरमत के विरुद्ध वह ज़हर उगलता कि यह याद करते। इन्होंने मेरे पूर्वजों के विरुद्ध क्या कुछ नहीं कहा कि पराशर भी भूल गया, (मेरा गोत्र पराशर है) व्यास भी भूल गया, राम , ब्रह्म भी काल के अवतार , वेदान्त , और सूफ़ी सब ग़लत, दिमाग़ चक्कर खाता था अरे बाबा! कहाँ फँस गया मैं, जो कहते हैं व्यास जी भी नहीं पहुँचे। परन्तु चूँकि दाता पर मेरा विश्वास था, दाता को तो मैं छोड़ न सका, यह वाणी समझ में नहीं आती थी। उस वक्त मैंने प्रण किया था कि सच्चा होकर चलूँगा, तो दाता ने मुझ पर दया कर दी। पिछले जमाने में तना साफ करने का दस्तूर नहीं था। कबीर साहिब ने धर्मदास का सच बात बता के उसके मुँह में गुला ठोक दिया था:-

धर्मदास तोहे लाख दोहाई, सार भेद बाहर नहिं जाई।

स्वामी जी ने इशारा किया परन्तु कह दिया:-

सन्त बिना कोई भेद न जाने, वह तोहे कहें अलग में।

मैं हूँ वक्त का सन्त सत्तगुरु, मैंने वह अलग का जो पर्दा था वह खोल दिया। जिसके भाग्य में है वह मेरी बात सुन कर अपना जन्म बना ले, जिसके भाग्य में नहीं है जहन्नुम में जाये, मैंने क्या लेना है उससे। राज़ बता चला कि सच्चाई यह नहीं है, यह है-अगर दुनिया से पार जाना चाहते है तो जितने मन के तुम्हारे ख्यालात व विचार है

उनको छोड़ना पड़ेगा। अगर नहीं छोड़ोगे, कोई गुरु तुमको पार नहीं ले जा सकता।

आप समझ गए मेरी बात को कि नहीं। आज मैं अपनी ड्यूटी पूरी कर देना चाहता हूँ कि मुझे गुरुमत से क्या मिला और कैसे मिला । मैं तो चाहता हूँ अगर मैं ग़लत हूँ तो गुरुमत के मौजूदा जो महात्मा हैं वे मेरे विरूद्ध कहें, मैं उनको हक़ देता हूँ, मगर याद रख लेना महात्माओ! अगर तुमने पर्दा रखा, चेले तो तुम्हारे तर जायेंगे परन्तु तुम्हारे लिए नरक कुण्ड पड़ा हुआ है, तुम नहीं बच सक्ते ।

कर्म प्रधान विश्व कर राखा।
जो जस कीन तस फल चाखा॥

अगर सचमुच ये महात्मा मरते समय नहीं ले जाते और किसी के अन्दर नहीं जाते तथा फिर यह प्रोपेगण्डा करते हैं, आप यह बताओ क्या ये मुजरिम नहीं हैं? अगर ये जाते हैं तो फिर ये ठीक हैं: मैं नहीं जाता, न मुझे कोई पता ही होता! मैं तो अपनी जान बचाना चाहता हूँ:

प्रीत प्रतीत बढ़ा के हिए में।
दीना घर की ओर चलाय॥

घर की ओर चलाने की दया कर दी न दाता दयाल ने, बड़ी दया की मुझ पर। मैंने जफ़ा मारा हुआ था उनको और जितना मैं उनसे प्यार करता था क्योंकि वह प्रेम अज्ञान का था, जब मैं जाता वह कहा करते थे, ''उस बावले फ़कीर को बुलाओ''। उस वक्त मैं यह सोचता था कि यह शायद मुझे प्रेम से बावला कहते हैं। अब मैं समझा हूँ कि मैं वाकई बावला था: सच्चाई का मुझे पता नहीं था। मैं नहीं चाहता, तुम लोग यदि मुझको अज्ञान में पूजो, मैं इसको महापाप समझता हूँ। ज्ञान दाता की हैसियत से आप लोग बेशक मेरी इज्ज़त करो, मैं उस इज्जत का हक़दार हूँ। जो यह कहो कि मुझे पैसे की जरूरत नहीं , मुझे पैसे

की जरूरत है मगर मैं तुम लोगों की आँखो में मिट्टियाँ डाल कर, तुमको बेवकूफ बना के लूटना नहीं चाहता।

जिन यह भेद सुना नहिं गुरु से।
सौ रहे माया सँग लिपटाय॥

वह भेद क्या है? तुमको मैं वह राज बताये जाता हूँ, बलवीर! मगर तुमको इसकी जरुरत नहीं, तुम तो दुनिया के चक्कर में फँसे हुए हो, और है क्या! यह दुनिया का चक्कर तो है बच्चा! जो कुछ तुमने किया हुआ है , दिया हुआ है वह मिलेगा तुमको। दाता दयाल की धाम उजड़ गई, इतने महान सन्त थे क्या टाँग अड़ा ली! बाबा सावन सिंह जी का आखिरी जिन्दगी में क्या हाल हुआ! स्वामी रामकृष्ण परम हंस के साथ क्या हुआ! जीसस क्राईस्ट सूली टंग गया। मैं अमेरिका में गया वहाँ मैंने यही कहा था कि तुम्हारा जीसस क्राईस्ट जो कहता था '' 'मैं खुदा का बेटा हूँ' कौन बाप है जो अपने बेटे को सूली पर चढ़ाना चाहता है, तुम सब पागल हो! डा० आई. सी. शर्मा ने मेरी टाँग दबाई। मैंने कहा मैं तो सच्ची बात कहूँगा, कोई मेरे पास आये चाहे न आये। तुम सोचो मेरी बात को। बात कुछ होती है हमको बताया कुछ और जाता है! तुम गीता-गीता लिए फिरते हो, अर्जुन ने गीता कृष्ण के मुँह से सुनी , भागवत कहती है वह तो नरक में गया, तो तुम क्या गीता को पढ़कर नरक से बच जाओगे! यह नहीं है कि गीता ग़लत है; हम लोग अपनी ग़लतियाँ नहीं सम्भालते , हम अपने मन को नहीं सम्भालते, मन को ! समझते हो मेरी बात को कि नहीं! त्रुटि क्या है? हम अपने मन के ख्यालात को शुद्ध करे, यह हम नहीं करते, हम लफ़जों के जाल में फँस जाते हैं। बेशक तुम हजार दफ़ा मेरा सत्संग सुन लो, अगर तुम अमल नहीं करोगे तो तुम पार हो जाओगे? हाँ! मेरा ध्यान करने से यह हो सकता है कि तुम्हारी चूंकि Will-Power बढ़ जायेगी,जैसी- जैसी तुम्हारी आशा होगी वैसा- वैसा तुमको फल

मिल जायेगा और क्रेडिट मुझे देते रहोगे। अगर मैं वह क्रेडिट ले लूँ तो मैं मारा गया।

अगर मैं इस बात का पाखण्ड़ करके क्रेडिट लूं कि मेरे ध्यान से आपको यह मिल गया, पर्दा रखता हूँ तो क्या मैं मुज़रिम नहीं हूँ? जब मुझे पता ही नहीं होता कौन मेरा ध्यान कर रहा है तो मेरा क्या हक़ है उससे यह कहलाना कि मैंने उस का काम किया । काम तुम्हारे अपने मन ने किया, समझते हो दोस्तो! ऐसा सच्चा आदमी, सतगुरु , तुमको कोई मिलेगा नहीं दुनिया में। सब तुमको अपने जाल में फँसाते हैं, मैं तुम को आज़ाद करना चाहता हूँ। बात को समझो, क्यों लूटे जाते हो! खुशी से जो मर्जी चाहे दो ; इस तरह से कि हाँ, बाबा फकीर ने मुझे प्रसाद दिया था मेरे लड़का हो गया और इस खुशी में आकर तुमने मुझे 1000 रु. दिये वह तो मन्दिर भी खराब हो जायेगा। अगर मेरे ही प्रसाद से बच्चे होते हो मेरी लड़की है , शादी किए को बीस वर्ष हो गये, मैंने कई बार उसको प्रसाद दिया, उसको कुछ नहीं हुआ। यह जो कुछ होता है तुम्हारा अपना विश्वास है दोस्तो! चार दिन मैंने जीना है, आग लगे इस गुरुआई को, मैंने क्या लेना है! मेरे जिम्मे एक ऋण था, मैं पूरा कर चलाः-

जनम जनम दुःख सुख भोगें।
भरमें चार खान में जाय॥

अब तुम सोचो, अपनी आत्मा से मैं पूछता हूँ क्यों फ़कीर चन्द। यह वाणी सत्य है? जब तक तुम माया से नहीं निकलोगे, माया है क्या? जितने रुप तुम्हारे अन्दर प्रकट होते हैं, चाहे बाबा फकीर का, चाहे राम का या कृष्ण का यह तमाम का तमाम माया है, चाहे स्थूल माया है या सूक्ष्म माया है। जब तक कोई आदमी इन रूपों -रंगों से ऊँचा नहीं जायेगा और अपने आप को माया के चक्कर से आजाद नहीं करेगा वह अपने घर नहीं जा सकता। बृजलाल तुमको कह रहा हूँ, समझते हो न! यह गुरुआई, यह नाम दान, यह सत्संग, यह तो दुनिया

का पिछले जन्म का यश मिलना था, जिसको मिलना है उसको मिल जाना है; ना कुछ तुम करते हो, ना मैं करता हूँ, ना कोई करता है।

मेरी कोशिश अब रात- दिन यही रहती है कि रूप - रंग से ऊपर जाऊँ। अगर सच पूछते हो बाबा, अपने वश में नहीं ! मैं भी गिर जाता हूँ!! इतना मैं जानता हुआ भी फिर भी गिर जाता हूँ। जाग्रत में तो नहीं गिरता, स्वप्न में गिर जाता हूँ, मुझे पता नहीं होता कि मैं स्वप्न देख रहा हूँ। मुझे पता नहीं मेरा क्या अंजाम हो। इसलिए मैं इस नतीजे पर आया , ऐ फ़कीर! अपने वश में नहीं है ! क्या करता हूँ; दाता! मुझे तो पता नहीं लगा कुछ, न तो मैं जानता हूँ कुछः बहुतेरा कुछ किया, आखिर कहाँ मुझे शान्ति मिलती है। केवल शरणागतम् !! जितना मेरा ज्ञान था, जितना मैंने सीखा सब धुरल हो गया। यह सच्चाई है, जो मैं ब्यान कर रहा हूँ। केवल आपको समझाने-बुझाने के लिए मैंने बहुत कुछ कहा, परन्तु अब मेरे लिए यह है कि भई मैं चुप रहूँ। कुछ समझ नहीं आई, यह समझ में आया कि एक मालिक है, जात है, क्या है , क्या नहीं किसी को पता नहीं। अब मैं हौसले से कहता हूँ कि न कबीर को पता लगा, न स्वामी जी को पता लगा, न दाता दयाल जी को पता लगा, किसी को उसका अन्त मिला ही नहीं वह है क्या।

जितनी जिसकी बुद्धि थी, उतना वह दौड़ा और उसने उसकी बाबत कह दिया। इसलिए मेरा अब मार्ग जो है, इस वक्त, यह है शरणागतम्। जिनको दुनिया की अक्ल़ है उनके लिए । मेरी तो बुद्धि अबोध हो गई, मन - अमन हो रहा है, चित्त अचित्त हो रहा है, कहने सुनने की कोई गुंजाइश नहीं। तो मैंने आज आपको बहुत कुछ कह दिया।

अब एक जिम्मेदारी को मैं बहुत महसूस करता हूँ, आप लोग आते हैं , मैं सोचता हूँ फ़कीर चन्द! दाता ने तुमको इतना काम दिया, क्यों दिया? क्या दाता दयाल गलत थे? क्या मेरे पास कुछ है? यह एक

सवाल है जो मैं अपनी आत्मा से करता हूँ। मेरे पास दो चीज़े हैं। एक तो सच्ची बात, अनुभव मेरे आगे है वह बताता हूँ, जो मैंने कह दिया और एक है मेरी Good wishes , शिवसंकल्प। दु:खी लोग मेरे पास आते हैं, मैं सच्चे दिल से चाहता हूँ दाता! तूने काम दिया, इनका दु:ख दूर हो जाये! बस! इसके सिवाय और मेरे पास कुछ नहीं!! तो आप लोग आते हैं , जिस- जिस गरज़ के लिए भी आते हैं, मैं जानता हूँ गृहस्थियों की गरज़े क्या होती है, क्या मैं रहित हूँ गरज़ों से ? महाराज! आज मैं चबर- चबर बाते करता हूँ, अगर आज लड़का मेरा २५० रुपया न भेजता रहता , कटनी वाले २००/- रुपया मुझे न देते होते, दुर्गादास वगैरह यह २००/- रुपया मुझे न देते होते तो मुझे भी नानी याद आई हुई होती। बात मैं सच्ची कहता हूँ महाराज! झूठ कोई नहीं इसमें!! अगर यह रुपया न आता तो ख़बर नहीं मैं क्या करता। अब चूँकि साढ़े- पाँच सौ रुपया मुझे मिल जाता है। इस में जितना मेरा घर का खर्चा होता है ख़ूब बादशाहों की तरह करता हूँ।

बाकी जो बचता है तो दान करता रहता हूँ। तब मैं यह चबर- चबर बातें करता हूँ। इसलिए मैं गृहस्थियों को यह कहूँगा, राम - राम को पहले छोड़ दो: पहले अपनी कमाई की तरफ लगो। ऐ- इन्सान! सबसे पहले अपनी आजीविका का ख्याल रख। सबसे पहले तुमको सेहत की जरुरत है , रोटी खाने की जरूरत है और मन की शान्ति की जरूरत है। परमार्थ! ख़बर नहीं ये सन्त मर के कहाँ गये, मुझे क्या पता! Illusion ही है ना! कि सतलोक गये या अगम लोक गये, हमारे पास कोई सबूत तो नहीं है ना! लोग कहते हैं जो, फलाँ गुरु फलाँ के अन्दर प्रकट हुए , मरने के बाद। अगर सचमुच वह आये हैं तो समझ लो कि वह तो भूत बने हुए फिरते हैं यहाँ। एक आदमी कहता है कि मेरे अन्दर फलाँ गुरु आ गये, दूसरा कहता है मेरे अन्दर फलाँ गुरू आ गये , मगर मैं यह मान लूं वह आये तो इसका मतलब तो यह है कि उनमें से कोई भी वहाँ नहीं पहुँचा; वह तो खुद प्रेत बने

हुए लोगों के अन्दर प्रकट होते हैं। क्या कहा मैंने! किसी को क्या पता-

उत ते कोई न आइया, जासे पूछूँ जाय।
इत ने सब जात हैं, भार लदाय लदाय॥

मैं क्या कहना चाहता हूँ गृहस्थियों को? मैं समाधि से पहले गया था, मगर मैं यह बताये जाता हूँ, ऐ इन्सान ! खुदा के नाम पर मत झगड़ा कर, वह बेअन्त है, एक ताकत है, क्या है क्या नहीं किसी को पता नहीं। जिसकी जैसी- जैसी भावना है उसके अनुसार उसने काम किया व कह दिया; काहे को मजहब के पीछे लड़ता है। **दुनिया में आया है खुशी से जिन्दगी गुजार, कमा- खा। आप पेट भर , अपने रिश्तेदारों का पेट भर , सुख से कर। हेरा- फेरी न कर, चारसौबीस न कर , धोखा न कर, फरेब न कर, यह है मेरा कहना।** इस वास्ते मैं इस उमर में यह नहीं कहता कि तुम्हें परमात्मा मिल जाये। परमात्मा तो पहले ही हर जगह मौजूद था, मुझे भ्रम था- सेहत, दौलत और शान्ति की जरुरत है। आप लोग आये हो, सच्चे दिल से चाहता हूँ:- Health wealth & peace to you all.

सब को राधास्वामी।

●

प्रार्थना

प्रिंसिपल श्री भीमसेन नागी जी, जो कि डॉ. अमरचन्द नागी जी (Retd.) के छोटे भाई व श्री विजय नागी (शुन्यो जी महाराज) के चाचा जी हैं, पिछले एक वर्ष से अधरंग पीड़ित हैं। मानवता-मन्दिर परिवार सहानुभूति प्रकट करते हुए परमदयाल जी महाराज से श्री भीमसेन नागी जी के जल्दी सकुशल होने व दीर्घ आयु के लिए प्रार्थना करता है।

सत्संग

परमसन्त हजूर मानव दयाल डा. ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज

स्थानः मानवता मन्दिर, होशियारपुर।

ता- 30-11-86

शब्द

जहाँ आंख खोली वहीं तुझको पाया।
कहीं ज्योति थी तू कहीं थी छाया॥

कमल है कमल का बना रुप तुझ से।
हुआ भँवरा और बास तू लेने आया॥

पवन है आकाश आग मिट्‌टी और पानी।
तू सब कुछ है और सब में रहता है छाया॥

कहीं होके प्रगट दिया सबको दर्शन।
कहीं छिप गया छिप के छबि को छिपाया॥

छिपा आग के रुप चकमक में बैठा।
हरी मेंहदी में लाली का रंग लाया॥

जिधर देखता हूँ तुझे देखता हूँ।
मेरी दृष्टि में आप तू ब्रह्म माया॥

दया राधास्वामी की मुझ पर हुई अब।
परम सन्त अवतार धर कर चिताया॥

सर्ववेदान्तसिद्धान्तगोचरं तमगोचरम्।
गोविन्द परमानन्दं सदगुरुं प्रणतोऽस्म्यहम्॥
भानवधर्मस्य धातारं दाता दयालस्य प्रियतमम्।
सन्तधर्मस्य गोप्तारं फकीर वन्दे जगद्‌गुरुम्॥

राधास्वामी !

मेरी अपनी ही आत्मा के साक्षात् स्वरूप सत्संगी भाइयो और बहनों , मैंने जो मंगलाचरण कहा है उसका संक्षिप्त भावार्थ और सन्तमत का सार संक्षेप में बता रहा हूँ। सन्तमय या राधास्वामी मत या मानवता धर्म वास्तव में एक ही है। सन्त का मतलब है सत् और सन्तमत का अर्थ है सतमत्। सत् का मतलब वह सत्ता या तत्व जो आधार है, जिससे सब कुछ विकसित होता है और फलीभूत होता है, वह है सत्। इसी सत् को ब्रह्म कहा है और उसके अनेक रुप परब्रह्म, अव्यय ब्रह्म हैं। अव्यय ब्रह्म वह है जो अनन्त है। वह सत्भाव है जो हमेशा भरा रहता है। वह अपने आप में पूर्ण है। इसलिए कहा है :-

पूर्णमदः पूर्णमिंद पूर्णात्पूर्णमुदच्चयते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

यह महाकाव्य है। वाक्य तो जो हम साधारण व्यवहार की भाषा बोलते हैं वह है। वह हमेशा के लिए सत्य नहीं होता । किन्तु महावाक्य वह है जो सत्यपुरुष अपने जीवन के अनुभव के बाद कहता है जो हमेशा के लिए स्थायी सत्य होता है। जो सत्य था, सत्य

है और सत्य रहेगा। गुरु नानक देव जी ने कहा ---- 'सी भी सच, है भी सच , होसी भी सच, ' तो पूर्णमदः पूर्णमिदम्। '' यह महावाक्य है। वह सत्य, वह परमतत्व , अव्यय , अविनाशी सर्वाधार, वह परमसत्य है , वह मुकम्मल है, उसमें कोई कमी नहीं है। और जिसमें कोई कमी नहीं है, जब तुम उसके पास जाओगे तो तुम्हारी सारी कमी पूरी हो जायेगी बशर्ते कि आप उसे पूर्ण मानते हो, पूर्ण जानते हो, पूर्ण पहचानते हो। कहा गया है:-

'गुरु कीजे जान कर , पानी पीजे छान कर'

यहां जानने का मतलब हैं कि गुरु से जो ज्ञान आपको मिला हुआ है, वह आपकी रग- रग, रोम- रोम में रच जाये। जानने का मतलब उस पर अमल करना है। जो सिर्फ जान कर रह जाता है वह वाचक ज्ञानी है और जो उस ज्ञान पर अमल करता है वह सच्चा विज्ञानी है। इसीलिए बार-बार सुमिरन-सुमिरन-सुमिरन किया जाता है। सुमिरन किसका होता है? सुमिरन उस चीज़ का होता है जिसको हमने देखा है। इसलिए उसकी याद आती है। जैसे मुझे याद है, तीन- चार दिन पहले विजय नरेश नेगी यहाँ आया। यहां रहा, रह कर मुझसे बातें कीं। तभी तो उसका स्मरण आया। सुमिरन, ध्यान और भजन, किसका? सुमिरन सत् का। सत् जीवित है। वह तो कभी नष्ट होता ही नहीं। उसका बारम्बार सुमिरन करने से तुम तदरूप हो जाते हो। सुमिरन के बाद है ध्यान । ध्यान है रुप का। जब सद्गुरु का सुमिरन करोगे तो उसका ध्यान बनेगा। यदि आपका प्यार सच्चा है तो सुमिरन करते-करते निश्चित है जिसका आप ध्यान करते हो , उसका रूप बन जायेगा । जब रूप बन जायेगा तो चूंकि वह सत् रुप है और पूर्ण का रुप है, ईष्ट पूर्ण होता है। उसमें से धार निकलेगी। उस धार को शब्द से सुनना भजन है। यह सुमिरन , ध्यान, भजन एक के बाद दूसरा

कदम, दूसरे के बाद तीसरा कदम है। लेकिन यह कदम तब उठेंगे जब आपको इष्ट से सच्चा प्यार होगा, सच्ची तड़प होगी। जिसमें तड़प नहीं है वह उस धार को पकड़ नहीं सकता। हालांकि तड़प हर एक के अन्दर छिपी हुई है। अभिव्यक्त नहीं है अव्यक्त है। लेकिन जब तड़प व्यक्त होती है तब उसका काम बन जाता है। सुमिरन, ध्यान है जीवित जागृत सदगुरु-इष्ट का। मैं खुद मालिक की कृपा से अभी अभ्यास करता हूँ। सद्गुरु के इष्ट में सत्, चित्, आनन्द तीनों चीजें होती हैं। सद्गुरु, सत्संग और सत्नाम। सत् का मतलब ही है जीवित गुरु की पूजा। उस सत् की धारा के लिए कहीं जाने, कहीं भटकने की जरूरत नहीं है। वह हर युग में, हर देश में मौजूद रहती है। उसको पहचानने की जरूरत है। अगर सुमिरन, ध्यान करना है जो जीवित-जागृत सद्गुरू का करना है। जैसे धन्वन्तरि बहुत बड़े वैद्य थे, लेकिन अगर आप बीमार पड़ते हो तो धन्वन्तरि के पास नहीं जाओगे बल्कि इस समय जो जीता-जागता वैद्य होगा उसके पास जाने से ही आपकी बीमारी ठीक हो सकती है। सत् का मतलब जीवित और पूर्ण। '**पूर्णमदः पूर्णमिदम्.......।**' यह माया के अन्दर जो रस्सी है, जो तुम हो, वह भी पूर्ण है। क्यों? '**पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।**' जो चीज पूर्ण से निकली है वह पूर्ण ही होगी। इसलिए उसे पूर्ण ही कहा जायेगा। जगत भी पूर्ण है। अपूर्णता हमारा अपना भाव है। अपने में अपूर्णता मानना ही इस बात का प्रमाण है कि हम पूर्ण हैं।

जब हम समझते हैं कि हमारे अन्दर कोई कमी है तो हमें यह विश्वास है कि यह कमी भी पूरी हो जायेगी। सद्गुरू की जात पूर्ण है, मुकम्मल है। मुकम्मल के पास जाने से तुम्हारी कमी पूरी हो जायेगी। तो '**पूर्णम् इदम**', यह जगत पूर्ण है, आप भी पूर्ण हो। क्योंकि जो पूर्ण से आया है, पूर्ण से निकला है वह पूर्ण है। अगर आपको विश्वास हो

गया कि यह जगत् भी पूर्ण है और आप भी पूर्ण हो तो यहाँ तो कोई रहेगा नहीं। पूर्णस्य पूर्णमादाय उस पूर्ण से पैदा हुए। इस पूर्ण का ज्ञान हो जाने का मतलब कि अपने रग-रग, रोम-रोम में गुरु के ज्ञान को पूरी तरह रचा-पचा लेना। सिर्फ किताबी वाचक-ज्ञान काम नहीं करता। मैं किसी अहंकार से नहीं कह रहा, पहले भी जब मैंने गुरु नही किया था और गीता पढ़ता था तो मैं देखता था कि गीता मेरे जीवन में उतरी हुई है। मैं यह अनुभव करता था कि गीता मेरे जीवन में लागू होती थी।

''उतते कोई न आइया, जासे पूछूँ धाय।
इतते सब कोई जात है, भार लदाय लदाय॥''

उतते का मतलब यहाँ पर है उस अन्तिम परम अनामी राधास्वामी दयाल से। आज के विज्ञान की खोज इस बात का प्रमाण है कि ये दर्जे हैं। अन्नमय कोष है, प्राणमय कोष है, मनोमय कोष है, विज्ञानमय कोष है, आनन्दमय कोष है। यह सब लोक-लोकान्तर हैं। हमारी पृथ्वी के भी ये सारे कोष हैं। वातावरण पृथ्वी का प्राणमय कोष है। चन्द्रमा की परिधि इसका मनोमय कोष है। सूर्य का प्रकाश इसका विज्ञानमय कोष है। इस पृथ्वी के ये सारे दर्जे हैं। मैं आपको वैज्ञानिक दृष्टि से बता रहा हूँ। अमेरिका में एक डॉ. है वह जर्मनी से आया हुआ है। वह मानसिक चिकित्सक (Psychiatrist) है। उसे बड़ी सफलता मिली और फिर उसने पुनर्जन्म पर खोज की। उसे जहाँ-जहाँ पुनर्जन्म की घटनाओं का पता लगा, वहाँ जा कर उसने जाँच की। अरब में एक मुसलमान लड़के के पुनर्जन्म का पता लगाया। उस मनोमय कोष और विज्ञानमय कोष में जाने के बाद भी आत्मा फिर वापस आती है और उसका पुनर्जन्म होता है –

''उतते कोई न आइया जासे पूछूँ धाय।
इतते सब कोई जात है, भार लदाय-लदाय॥''

जिनमें तड़प नहीं है मालिक से मिलने की वो भार लदा-लदा कर जाते हैं। मैं जब तक परमदयाल जी के पास नहीं आया था तब तक यह मानता था कि ब्राह्मण को गुरु की आवश्यकता नहीं होती। ब्राह्मण का मतलब कोई जन्मजात ब्राह्मण से नहीं होता। ब्राह्मण वह है जिसे ब्रह्म का बोध हो चुका है –

''वन्दे बोधमयं नित्यं, गुरु शंकररूपिणम्।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि, चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते॥''

जिसने अपनी वक्रता, अपने दोष को मान लिया उसका उद्धार कब होगा? जब वह सद्गुरु की शरण में चला जायेगा। गुरु पवित्र है, गुरु अविनाशी है। गुरु तो कभी मरता नहीं, न जन्म लेता है। वह प्रकट होता है। गुरु की नवधा भक्ति की जाती है। कैसे? पाँच ज्ञान इन्द्रियों और चार अन्तःकरण को गुरु की भक्ति में लगा दो। आँखों में लगातार टिकटिकी बाँध कर गुरु की ओर देखते रहना। देखते-देखते उसके अन्दर जो परमतत्त्व है उसका बोध हो जायेगा। आँखों से उसकी धार आपके अन्दर जायेगी। कानों से गुरु के वचन को सुनना, ध्यान से सुनना–

दर्शन करे वचन पुनि सुने।
सुन-सुन कर मन में गुने॥

मन में गुनने का क्या मतलब? उसे अपने अमली जीवन में उतार ले। कौरव-पाण्डव अपने गुरु द्रोणाचार्य से विद्या पढ़ते थे। एक दिन गुरु ने शिक्षा दी। '**सत्यं वद**' सदा सच बोलो। एक दिन गुरु ने पूछा, 'बताओ कल का पाठ किसे याद है?' सब ने पाठ सुना दिया– '**सत्यं वद**' किन्तु जब युधिष्ठिर ने कहा, 'हाँ अब मुझे पाठ याद हो गया है। 'और कहा' '**सत्यं वद**।' गुरु ने कहा, 'यह तुमने कल ही क्यों नहीं सुनाया? 'युधिष्ठिर बोले, 'कोशिश करने पर भी मैंने कई झूठ बोले थे। इसलिए अगले दिन मैंने पूरी कोशिश की और एक भी झूठ नहीं

बोला। अब मुझे पूर्ण रूप से पाठ याद हो गया है। 'अब मैं बिल्कुल सच बोलने लगा हूँ।' तो जानने का मतलब है गुरु की शिक्षा को पूरी तरह जीवन के व्यवहार में उतार लेना। कई लोग कहते हैं, मैंने तो परमदयाल जी का सत्संग सुन लिया है मुझे सब कुछ समझ में आ गया। अब सत्संग में आने की जरूरत नहीं रही। अरे भाई, अगर आप ने परमदयाल जी की शिक्षा को, उनके उपदेश को पूरी तरह समझ लिया जो परमदयाल जी जैसे हो गये। तब तो आप आओ, सत्संग दो और मेरा कुछ बोझ हलका करो। सच तो यह है कि ऐसे लोग वाचक ज्ञानी हैं। जब तक मनुष्य स्वयं परम अवस्था-राधास्वामी की हालत को नहीं पहुँचा है, तब तक उसे सत्संग की अत्यन्त आवश्यकता है और उसे सत्संग में आना चाहिए। जानबूझ कर गलत काम करना अच्छा है बनिस्बत इसके कि जो अनजाने में अच्छा काम करे। यह समझने की बात है। ज्ञानी के व्यवहार और अज्ञानी के व्यवहार में यह अन्तर होता है। सत्पुरुष जो काम करता है, लोग उसे मनुष्य समझ लेते हैं। अरे वह तो जानबूझ कर कर रहा है, वह लिपायमान नहीं हो रहा है। उसका खाना-पीना सब काम राधास्वामी के लिए हो रहा है। वह जो कुछ करता है राधास्वामी के लिए करता है। बात यह है कि नज़दीक रहने वाले सत्पुरुष को समझ नहीं सकते। सच्चा ज्ञानी कर्म करते हुए भी कर्म नहीं कर रहा है। तुम समझते हो कि वह कर्म कर रहा है। साधारण प्राणी की तरह। पर वह तो जो कुछ भी कर रहा है, तुम्हारे कल्याण के लिए कर रहा है, तुम्हारे उत्थान के लिए कर रहा है। तुम उसे मनुष्य समझ रहे हो। ज्ञानी का व्यवहार समझ-बूझ कर किसी उद्देश्य के लिए होता है। धावक मैदान में दौड़ रहा है। सब दौड़ते हैं और शुरू से ही बड़ी तेजी से दौड़ना शुरू कर देते हैं। लेकिन धावक धीरे-धीरे दौड़ रहा है। वह जानबूझ कर गलत काम कर रहा है क्योंकि धीमा दौड़ना तो गलत है, तेज भागना ठीक है। पर जो जीतने

वाला धावक है वह पहले धीरे-धीरे दौड़ेगा। लोग तो समझ रहे हैं कि यह गलत कर रहा है। लेकिन वह थकेगा नहीं, बाकी सब थक जायेंगे। धीरे दौड़ने वाला अपने उद्देश्य को पूरा कर लेगा। जो माँ बीमार बच्चे को माँगने पर मिठाई दे देती है, वह ठीक, या जो माँ उसे फटकार लगाती है, कड़वी दवा देती है, वह ठीक? तो व्यावहारिक ज्ञान और वाचक ज्ञान में अन्तर होता है। जानने का मतलब हमेशा व्यावहारिक ज्ञान से होता है।

तो नवधा भक्ति है अपनी सभी इन्द्रियों से गुरु का संस्कार लेना, दर्शन करना, माला पहनाना, प्रसाद खाना। चित से लगातार गुरु के वचनों पर चिंतन करना, मन से मनन हो। अगर वादविवाद भी हो तो दिल से सद्गुरू के भाव को समझने के लिए हो। बुद्धि से गुरु के ज्ञान को पूरी तरह हृदयंगम करे और अहंकार भी उसी का करे। इस प्रकार लगातार मालिक के ही ध्यान में रहे, खाना-पीना, उठना-बैठना, बोलना-गाना सब उसी के लिए हो। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार सब कुछ मालिक के निमित करे। परमतत्त्व मालिक को ऐसी भक्ति करने से क्या होगा? आपके दोष, दोष नहीं रहेंगे। लोग आप को बुरा कहेंगे, पागल कहेंगे, निन्दा करेंगे। करने दो-

यमाश्रितो हि वक्रोऽपि, चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते।

जिस टेढ़े चन्द्रमा को सब लोग अशुभ कहते हैं, उसी की वन्दना-पूजा करते हैं, क्योंकि वह शंकर के ललाट पर है-

स्थानं प्रधानं, न बलं प्रधानम्।

तो ऐसे परमतत्त्व आधार को नमस्कार करते हैं ऐसे परमतत्त्व को जानने के लिए कई वेदान्त हैं। अद्वैत वेदान्त है, विशिष्टाद्वैत है, द्वैत वेदान्त है। सब उसी परमतत्त्व की चर्चा करते हैं। द्वैत ने कहा है कि परमतत्त्व अलग है, मैं अलग हूँ, क्योंकि हम उसकी पूजा करते हैं। आत्मा अलग है, परमात्मा अलग है। जब तक अलग नहीं है तब तक

पूजा नहीं हो सकती। लेकिन अद्वैत वेदान्त कहता है कि अलग नहीं है। तुम उस के साथ एक ही रहो। अपने आप को खोकर उसमें मिल जाओ। विशिष्टाद्वैत कहता है कि नहीं, तुम पूरी तरह से मिलोगे नहीं। तुम यह नहीं हो। लेकिन ये सारी बातें उन लोगों की हैं जिन्होंने उसे देखा नहीं है। जिसने साक्षात् अनुभव कर लिया उसके लिए द्वैत-अद्वैत कुछ नहीं-

एक कहूँ तो है नहीं, दो कहूँ तो गारि।
जैसा है वैसा रहे, कहें कबीर विचारि॥

अरे, तुम तो मालिक की सौदेबाजी कर रहे हो। तुम मालिक से प्यार करो, आत्मसमर्पण कर दो वह जैसा भी है। अगर मालिक बिलकुल निर्गुण होता तो सगुण कहाँ से पैदा होता? अरे मालिक में तो निर्गुण भी है सगुण भी है। वह जैसा भी है, उससे सच्चा प्यार करो। प्यार में शक्ति है। प्यार की शक्ति से जब वह प्रकट हो जायेगा, सामने आ जायेगा तो वह तुम्हें कहेगा, 'आ मेरे प्यारे, तू चाहे तो मुझमें मिल जा, न चाहे तो दूर खड़ा रह।' उसने तो पूरी आजादी दे दी है। अब आप की भक्ति पर है। बात यह है कि यह सब अनुभवगम्य है। आप नदी के पड़ोस में रहते हैं। मील भर की दूरी तक नदी का पानी कुएँ में आता है। तो आपका उससे सामीप्य है। अगर आप नदी के पास चले गये तो आप पर नदी का और असर पड़ेगा और अगर आप नदी में उतर गये, उसमें डूबकी लगा दी तो आप उसके सारूप्य हो जायेंगे। इसके आगे क्या है कि आप अपना रूप खो बैठेंगे और उसका रूप भी खो बैठेंगे। क्या हो जायेगा? वह है सायुज्य की अवस्था। ये अवस्थाएँ हैं, दर्जे हैं। समझने के लिए हैं। लेकिन असल में आपको सायुज्य होना है, मालिक से जुड़ना है तो उसके लिए आसान से आसान तरीका है कि अपने आप को खो दो, सिर्फ अहंकार को मिटा दो, मैंपने को त्याग दो-

तू तू करता तू भया, मुझमें रही न हूँ।
ऐसी महिमा नाम की, जित देखूँ तित तूँ॥

इसलिए ये जितने भी सिद्धान्त-विद्धान्त हैं इनमें फँसने की कोई जरूरत नहीं-

गोविन्दं परमानन्दं सदगुरुं प्रणतोऽस्म्यहम्।

विराट्-अव्याकृत-हिरण्यगर्भ, इन तीनों के परे जो बिन्दु है **'आनन्दम्'** उस अवस्था में तो मैं रहता था। लेकिन जब परमदयाल जी के सम्पर्क में आया तब वास्तव में ऐसा लगा कि बस मैं यही हूँ। मेरा असली आपा जो था, वह परमदयाल जी थे। ऐसा अनुभव हुआ और ऐसा विस्फोट हुआ कि उसके बाद परमानन्द की अवस्था में रहता हूँ। दूसरी जगहों पर आपको आनन्द मिल सकता है। दूसरे सिद्धान्त और तरीके जो हैं, चाहे वह किसी का तरीका हो, चाहे कुण्डलिनी योग हो, चाहे रजनीश का तन्त्र योग हो, चाहे वह कुछ भी हो, वह सिर्फ आनन्द दे सकता है-

गोविन्दं परमानन्दं सदगुरुं प्रणतोऽस्म्यहम्।

उस सद्‌गुरु को नमस्कार है, इसलिए कि हमें वहाँ पहुँचा दिया। वहाँ न गुरु रहता है, न चेला रहता है; जब लकड़ी जल जाती है तो वह आग हो जाती है। ऐसा अनुपम वह परमतत्त्वाधार है। आपको और कहीं आने-जाने की जरूरत नहीं। वह सत है, व्याप्त है और उसको इसी जगह बैठ करके हासिल किया जाता है। रेडियोधर्मी तो आप सभी हैं, लेकिन आपका स्विच बन्द पड़ा है केवलबटन को दबाना है। अन्दर की आँख खुली नहीं कि सब जगह वही रूप दिखाई पड़ने लगा। ज्योति और छाया सब उसी की तो है। सन्तमत सत मत है। यह वो दृष्टि है, अनुभव है जो आपको आधार से मिला देती है और यही

बात वेदान्त कहता है। वेद का अर्थ है ज्ञान। ज्ञान करते-करते उसका अन्त हो जाता है, वही वेदान्त है। आईन्स्टाइन बहुत बड़ा वैज्ञानिक था। उसके अनुयायी खुदा को नहीं मानते लेकिन उसने कहा कि जहाँ तक मैं पहुँचा हूँ खुदा है, मालिक है। प्रकाश और शब्द की गहनता के अन्दर भी तो वही है-

सन्त कहें वह शब्द रूप है, और अशब्द गति सोई।
ऊँची दृष्टि करे जो प्राणी, सार भेद कुछ पावे।
भेद पाय शरनागत आवे, आवागवन मिटावे॥

आप वहाँ तक जाओगे जहाँ तक आप के गुरु की पहुँच है-

उतते सतगुरु आइया, जाकी बुद्धि मति धीर।
भवसागर से जीव को, खेय लगावे तीर॥

गुरु कैसे तुम्हें भवसागर से पार ले जायेगा? वह अपने अनुभव के आधार पर जो काम और जो नाम तुम्हें देगा, वह जीता-जागता सत नाम-धुनात्मक नाम है। धुनात्मक में भी कई नाम हैं लेकिन जो जीता-जागता और पूर्ण नाम है वह राधास्वामी नाम है। वह नाम तुम्हें जीता-जागता सदगुरु देगा, अपने सत्संग के जरिये देगा। सद्गुरू तो आपकी बुद्धि-मति धीर करके अपने जैसा बनाना चाहता है लेकिन जो वह देना चाहता है, वह आप लेने के लिए आते नहीं। गुरु आप को जो सत् ज्ञान देता है यदि आप उसे अमल में लायेंगे तो आप सहज में ही भवसागर से पार हो जायेंगे। इसके लिए आपको कहीं जाने-आने की जरूरत नहीं है। आप के अंग-संग है। जो काम आप करते हो उसी में आप को परमतत्त्व आधार मिल जायेगा-

पहले दाता शिष्य भया, जिस तन मन अरपा शीश।
पीछे दाता गुरु भया, जिन नाम दिया बख्शीश॥

सद्गुरु केवल तीन बन्दों से, सिर्फ तीन सोपानों से, सत्संग से, जीते-जागते सद्गुरु क शरणागत हो जाने से, उसमें जुड़ जाने से तुम ही हो जाओगे और तुम्हें नाम मिल जायेगा। कोई बड़ी बात नहीं है। हजार नाम हैं कृष्ण के, उनमें राधास्वामी भी एक नाम है। लेकिन राधास्वामी नाम में जो शक्ति है उसमें सभी नामों की शक्ति मौजूद है। तीन बन्द लगाये-आँखें बन्द, कान बन्द, जबान बन्द। **'मौन सर्वार्थसाधनम्।'** शब्द ब्रह्म को सुनने के लिए बाहर के कान बन्द करो। सद्गुरु आप को नाम तब देगा जब आप के मन को शुद्ध कर लेगा। मन की शुद्धि के बाद ही नाम का प्रभाव होगा, नहीं तो नहीं होगा। सुमिरन से आप के ख्याल को बदल देगा। जो चीज़ आप की सुरत को कण्ट्रोल करती है, वह अविनाशी तत्त्व अकाल पुरुष ही आप के अन्दर संकल्प शक्ति (Will-Power) है। उस संकल्प शक्ति की धार को पलट देना ही उसका खासा है। सत्संग में आना आप के प्रारब्ध कर्म हैं। यह आप के अधिकार में नहीं है। लेकिन यहाँ आकर सद्गुरु के वचनों को सुनकर उस पर अमल करना या न करना आपके अधिकार में है। अगर अमल करोगे तो आपकी सुरत ऊपर अकालपुरुष की तरफ जायेगी, तो आपका अविनाशी तत्त्व भण्डार की तरफ जायेगा, स्वामी की तरफ जायेगा।

सद्गुरु आपको आकर चिताता है, याद दिलाता है। याद किस को दिलाई जाती है? जिसके अन्दर वो चीज़ मौज़दू होती है। आपके जैसा शरीर मन और गुण लेकर सद्गुरु आपको चिताने के लिए उत से आता है। जब आप उससे प्यार करेंगे तब वह आपको चितायेगा, वही परमतत्त्व आप को अन्दर में जगा देगा। यही सत्संग की खासियत है। आज का सत्संग यहीं समाप्त करता हूँ।

●

सत्संग

सत्संग दयाल कमल जी महाराज

दिनाँक 31-08-14

वन्दनम् सत ज्ञान दाता, वन्दन्म सम ज्ञान मय।
वन्दनम् निर्वाण राता, वन्दन्म निर्वाण मय॥

भक्ति मुक्ति योग युक्ति, आपके आधीन सब।
आप ही हैं सिंध सद्गति, जीवन जन्तु मीन सब॥

आप गुरु सतगुरु दया, और प्रेम के भंडार हैं।
आप करता धरता है , करतार जगदाधार हैं॥

ऋद्धि सिद्धि शक्ति नवनिधि हैं, चरन में आपके।
बच गया भव दुख से, जो आया शरन में आपके॥

भक्ति दीजे नाम की, सत नाम में विश्राम दे।
राधास्वामी अपना कीजे, राधास्वामी धाम दे॥

राधास्वामी

आपने दातादयाल जी महाराज का शब्द सुना। इस वन्दना में क्या माँगा? राधास्वामी नाम दीजिए और नाम में विश्राम दीजिए, राधास्वामी धाम दीजिए। वह राधास्वामी धाम कहाँ है और वह धाम

तुम्हे कैसे मिलेगा? वह धाम तुम्हे सत्संग में मिलेगा। सत्संग में उस धाम को प्राप्त करने की विधि बताई जाती है। वह धाम कहीं बाहर नहीं बल्कि तुम्हारे अन्दर है। वह धाम तुम्हे कैसे मिलेगा, मैं तुम्हे कबीर साहिब का एक शब्द सुनाता हूँ:

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुधि लाइये।
कीजे साहेब से हेत, परम पद पाइये॥

मेरे सदगुरु परमदयाल जी महाराज ने जब ये मन्दिर बना तो एक सत्संग दिया जिसमें यही कबीर साहिब का शब्द पढ़ा कि मैंने यह हाट बनाई है इसलिए नहीं कि वह बात कहूँ जो दुनिया की हाट पर बिकती है। यह वह स्थान नहीं है यहाँ कथा की जाती है। यह हाट एक अद्भुत हाट है। उन्होंने कहा कि मैं वह बात नहीं कहता जो दूसरे गुरु कहते हैं । मैंने दातादयाल जी से वायदा किया था कि दाता मैं अपना अनुभव कह के जाऊँगा। आपने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना, मैंने अपने अनुभव को लेकर बात कही है।

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुद्धि लाइये।

सतगुरु की हाट पर कथा नहीं की जाती, ज्ञान की बुद्धि दी जाती है। सबके अन्दर मानिसक शक्ति है । चाहे वह गरीब है , चाहे वह अमीर है , चाहे कोई नीच है , चाहे कोई शहर में रहने वाला है या गाँव में रहने वाला है। मालिक ने सबको बुद्धि दी है। लेकिन ज्ञान नहीं है। जो ज्ञान उनके पास है वह विज्ञान (साईंस) का है कि सितारों परक याह ै, ज मीनप रक याह ै, स ागरके अ न्दरक याह ै?व ह Medicine का ज्ञान भी रखती है। शास्त्रों का हवाला देने वाले लोग भी हैं। लेकिन वास्तव में ज्ञान है:- **ऐ इंसान, तू अपने मन और बुद्धि से आगे जाकर देख, जो वह असलियत है वही ज्ञान है। जब तक तू मन और बुद्धि में बैठा है तू उस ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकता।**

इसीलिए अगली पंक्ति में कहा है :-

कीजे साहेब से हेत, परम पद पाइये।

यहाँ पर साहेब शब्द आया है। क्या साहेब वह है जो शरीर धारण करके बैठा है ? मुझे नहीं पता कि कबीर साहेब ने किस को साहेब कहा है। लेकिन मेरे सतगुरु परमदयाल जी महाराज ने जो मुझे समझाया मैं वह कहने का हक रखता हूँ। गुरु के शरीर के साथ प्रेम करना, उनको प्रसाद देना, उनके चरणों को छूना, उनको हार पहनाना, उनको भोजन करवाना यह सेवा है। सेवा करनी चाहिए इसके बिना गुजारा नहीं है। साहेब से हेत क्या होता है? साहेब से हेत होता है - प्रेम । वह साहेब कहाँ है? यह साहेब तुम्हारे अन्दर है। उस साहिब से हेत करने से, उस साहेब से प्रेम करने से परम पद मिलेगा। परम पद क्या होता है? परम मतलब-ताकत और पद मतलब कुर्सी जैसे यह वाईस चांसलर है, यह प्रिंसिपल है, यह प्राईम- मिनिस्टर है- ये सब पद हैं लेकिन परम पद इन सब पदों से ऊँचा है। वह साहेब क्या है? वह साहेब प्रकाश है। जब तक आप उस साहेब से प्रेम नहीं करोगे, तब तक आप परम पद को प्राप्त नहीं कर सकते। यह भी हाट है लेकिन हाट का सौदा लेने वाले बहुत कम हैं। हमारे सद्‌गुरु ने हमें यह आज्ञा नहीं दी कि बात को पर्दे में रखो। जब तक हम किसी सतपुरुष के चरणों में बैठकर, उनकी संगत करके, उनकी बात को समझकर , अमल करके उस पर नहीं चलते तब तक हम उस परम पद को प्राप्त नहीं कर सकते।

कलयुग में यह हुआ कि गुरु जी महाराज सब कुछ कह रहे हैं। महापुरुषों ने लिख भी दिया। बड़े- बड़े ग्रन्थ लिख दिए, वेद लिख दिए, शास्त्र लिख दिए। इन्सान कहता है कि बाबा जो तूने यह लिख दिया , यह तो ठीक है लेकिन हम इस पर नहीं चलेंगें। हम तेरी मूर्ति की पूजा जरूर कर सकते हैं पर जो तू कहता है हम उस पर नहीं चल सकते, यह हमारे लिए मुश्किल है।

अरे ! जब तक हम उस महापुरुष के वचन पर नहीं चलेंगें तब तक जो मर्जी करो हम उस परम पद को प्राप्त नहीं कर सकते। इसीलिए सन्तमत में कहा गया है **'जाकर गुरु के पास बैठो और वचन उनके सुनो, जो सुनो उसको विचारो, जो विचारो उसको गुनो'**, यह नहीं कहा कि सद्‌गुरु के पास से प्रसाद ले जाओ, कपड़े ले जाओ। मैं यह भी नहीं कहता कि ऐसा मत करो, यह हमारी सभ्यता है। वह श्रद्धा प्रकट करता है, विश्वास प्रकट करता है, प्रेम प्रकट करता है, खाली गुरु के पास नहीं जाना चाहिए यह एक परंपरा है। लेकिन जब तक आप उनके वचन पर नहीं चलोगे तब तक हम परम पद को प्राप्त नहीं कर सकते। इसीलिए कबीर साहिब ने कहा है:- चल सतगुरु की हाट, वहाँ पर तुम्हारी बुद्धि को , तुम्हारे मन को, तुम्हारी विचारधारा को , तुम्हारी सोच को बदलने का मौका मिलेगा।

'कीजे साहिब से हेत, परम पद पाइये'

फिर उस बात को समझकर , उस साहेब से तू प्रेम कर जो तेरे अन्दर बैठा है।

सतगुरु सब कुछ दीन्ह, देत कछु न रहयो।
हमहिं अभागिनि नारि, सुक्ख तज दुख लहयो॥

कबीर साहिब ने कितने अच्छी बात कही सद्‌गुरु सब कुछ देता है। मैं नहीं ले सका। 'मैं अभागिन नारि' मैं अभागिन रही कि कुछ ले न सकी। यह शब्द उन्होंने कब लिखा यह मुझे नहीं पता। लेकिन यह कबीर साहिब का शुरु - शुरु का शब्द है। मैंने दुख लिया, सुख नहीं लिया। सद्‌गुरु तो सब कुछ देने के लिए तैयार है। सद्‌गुरु कोई मंत्र या ताबिज़ नहीं देता। सद्‌गुरु इन्सान के ख्याल को बदल देता है। जैसे ही तुमने ख्याल को बदला जैसे ही तुमने Negative को positive में बदला । जैसे ही नकारात्मिक विचारों को छोड़ा सकारात्मिक विचारों में आ गए। जैसे ही बुराई सोचने की बजाए अच्छाई सोचने लग गए।

जैसे ही तुम लोगों का बुरा सोचना छोड़कर , भला सोचने लग गए तुम्हारी जिन्दगी में तब्दीली आयेगी- आयेगी उसको कोई रोक नहीं सकता।

जब तक हमारे मन में दूसरों के प्रति द्वेष है, ईर्ष्या है, नफरत है, शत्रुता है तब तक हम सुखी नहीं हो सकते । कबीर साहिब भी यही कहना चाहते हैं। महापुरुषों ने कहा है- सद्गुरु के दरबार में कमी वस्तु की नहीं। इन्सान कुदरत की कयामत नहीं समझता कभी इधर भाग, कभी उधर भाग। लोग कहते हैं- मेहनत करने की जरुरत नहीं है तुम फलाँ मंत्र जाप करो, तुम फलाँ मूर्ति की पूजा करो। कोई यह नहीं कहता कि उस परम - तत्व को मानो क्योंकि दुनिया को दुनिया चाहिए। दुनिया को वह परम पद नहीं चाहिए। दुनिया को उस साहेब से हेत नहीं चाहिए। दुनिया अज्ञानी है कि जो वस्तु मैं माँग रहा हूँ वह सदा रहने वाली नहीं है। उस सदा न रहने वाली चीज़ के प्रति प्रेम पैदा करके , जो सदा रहने वाली है-से स्नेह तोड़ लेते हैं।

फिर हम सुखी कैसे रह सकते हैं? हम सुखी तभी होंगे जब हम उससे जुड़ेंगे, जो सदा रहने वाली है। जो सदा नहीं रहने वाली है तुम्हें मिलेगी तो तुम्हे बहुत खुशी मिलेगी , जब वह चीज़ चली जायेगी तुम्हे दुख होगा। इसलिए क्या माँगो जो सदा रहने वाला साहेब है।

गई पिया के महल, पिया सँग ना रची।
हिरदे कपट रहयो छाय, मान लज्जा भरी॥

सत्संग में एक भेद मिला कि तू महल में जा यह शरीर एक महल है। कबीर साहिब कहतें है कि बुद्धि को भेद तो मिल गया कि वह तेरे अन्दर है और तू वहाँ चल। कबीर साहिब कहते हैं कि वहाँ नहीं गई। क्यों नहीं गई? क्योंकि हृदय में अनेक प्रकार के कपट भरे हुए हैं। ईर्ष्या है, मन नहीं ठहरता। लोग कहेंगे इतना कुछ इसके पास है और यह फिर भी भगवान की भक्ति कर रहा है। कभी जाति का अभिमान,

कभी धन का अभिमान कभी कुछ, कभी कुछ । तुम्हारा मन टिकता ही नहीं है। जब तक मन टिकेगा नहीं तो बात कैसे बनेगी। पुराने जमाने में कुएँ होते थे। हम उसमें से रस्सी से पानी निकाला करते थे। वह रस्सी जब बार- बार पत्थर के साथ लगती थी, तो पत्थर को घिसा देती थी। आप देखिए कि एक घर में सीमेन्ट का फर्श लगा हुआ है । ऊपर से हर रोज उस पर पानी गिरता है। वह पानी का एक-एक कतरा भी फर्श में छेद कर देगा। क्या तुम्हारा मन जो बह्मडीय शक्ति को लिए बैठा है अगर वह एक जगह ठहर जायेगा तो क्या उसमें ताकत नहीं आयेगी? जरुर आयेगी। मगर तुम्हारा मन वहाँ ठहरता नहीं है। इसलिए मेरे सद्गुरु परमदयाल जी महाराज बार -बार फरमाया करते थे :- अगर दुनिया संवारना चाहते हो , तो सिमरन किया करो, ध्यान किया करो ताकि तुम्हारा मन एक जगह टिक जाये। जब मन टिक जायेगा तो तुम्हारे अन्दर Will Power पैदा हो जायेगी?

तुम्हारे हाथों में शक्ति आ जायेगी? तुम्हारे वचन में शक्ति आ जायेगी। मगर हम यह नहीं करते। हम ईर्ष्या में फँसे हुए हैं, हम द्वेष में फँसे हुए हैं, हम नफरत में फँसे हुए हैं। हम Negative thinking में फँसे हुए हैं कि कहीं यह न हो जाए, कहीं यह न हो जाए। फिर वही होकर रहेगा जो तुम बार - बार सोचते हो।

जब हम स्कूल में पढ़ते थे, तो हमारे मास्टर जी सुनाया करते थे- बच्चों चौबीस घन्टों में एक समय ऐसा आता है , जो माँगों मिल जाता है। हमने सोचा अब चौबीस घन्टे तो हम माँग नहीं सकते। मास्टर जी ने कहा कि मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ:-

एक लकड़हारा था । वह अपनी कुल्हाड़ी को लेकर बैठ गया कि सोने की बन जा, सोने की बन जा। कुछ देर बाद वह उतावला होकर बोला चल सोने की न सही चाँदी की ही बन जा और वह कुल्हाड़ी चाँदी की हो गई। हमारे भीतर वह धीरज़ नहीं है। स्वामी जी महाराज

लिखते हैं कि 'धीरज धरो करो विश्वासा' , सतगुरु करेंगे पूरी आसा'' हमारे में धैर्य नहीं है, हम सोचते हैं बस पाँच मिनट बैठे और हो गया, अब टाँगे दुख रही हैं इसलिए कल बैठेगें। कल बारिश हो गई तो सोचेंगे आज बारिश हो गई, अब कल बैठेंगे। हमारे भीतर वह प्रेम नहीं है। हमारा अपने-आप से ही प्रेम नहीं है। अगर अपने आप से प्रेम करोगे तो उस मालिक से भी प्रेम करोगे। क्योंकि तुम्हारा अपना आपा जो अंश है । यह शरीर उसका अंश नहीं है, यह मन भी उसका अंश नहीं है । वह जो तुम्हारे अन्दर सूरत-रूपी सूरत उस मालिक के अंश है।

जहवाँ गैल सिलहली, चढौं गिरि- गिरि पड़ौं।
उठहुँ सम्हारि सम्हारि, चरन आगे धरौं॥

कबीर साहिब कहते हैं जो अन्दर का सफर है वहाँ बहुत फिसलन है। ऊपर को चढ़ना है लेकिन नीचे को फिसलते हैं । कबीर साहिब कहते हैं फिसलन है इसलिए पग धीरे-धीरे रख और फिर आगे चल।

मैं अपनी बात बताता हूँ:- कई बार मन में तड़फ होती है कि आज डेढ़ घंटा बैठूगाँ और मंजिल तक पहुँच जाऊँगा। तब दाता- दयाल जी का शब्द भी पढ़ लूँगा। स्वामी जी महाराज का भी कोई शब्द पढ़ लूँगा, कबीर साहिब का शब्द भी पढूँगा। परमदयाल जी की वाणी को भी याद करूँगा लेकिन मन नहीं टिकता, नहीं टिकता। आँखे बन्द करके नाम जप रहा हूँ, सूरत में गया हूँ फिर पता नहीं कहाँ चला गया। फिर याद आई कि तू तो अभ्यास में बैठा है। अन्दर से ही आवाज आती है कि यह क्या कर रहा है आदमी ऊपर से गिरता है फिर उठ जाता है। फिर चढ़ता है नाम जपता है। गिरता है फिर चढ़ता है। इसको कहते हैं गिर-गिरकर उठना। परमदयाल जी महाराज इसको कहते थे- साहेब के धक्के। दुनिया समझती है कि गुरू जी बैठे हैं लोग लाईन में लगे हैं और धक्के लगते हैं लोग सोचते हैं यह है गुरू जी के धक्के। यह गुरू के धक्के नहीं हैं। धक्के वह हैं जब तुम्हारी सूरत ऊपर चढ़ने से गिरती

है। जब तुम्हारा मन सूरत को आगे चढ़ने नहीं देता। इसलिए कबीर साहिब कहते हैं संभल कर आगे चल।

जो पिय मिलन की चाह, कौन तेरे लाज है।
उधर मिलो किन जाय, भला दिन आज है॥

कबीर साहिब कहते हैं- ऐ इन्सान! अगर तुम्हें पिया मिलन का पूरा प्रेम है तो फिर तुम्हें लाज किस बात की, तुम्हें डर किस बात का है फिर तू आगे चल। इसका मतलब यह हुआ कि अगर तू आगे नहीं चल रहा तो तेरे अन्दर इश्क पैदा नहीं हुआ। परमदयाल जी एक बात कहा करते थे- इश्क दो तरह का होता है- एक इश्कमजाज़ी जो दुनिया का होता है दूसरा इश्कहकीकी मालिक का। एक दुनिया से प्रेम दूसरा मालिक से प्रेम।

हज़ूर फरमाया करते थे जिस इन्सान को घर में बीवी-बच्चों से प्रेम करना नहीं आता। जिसको आस-पड़ोस से प्रेम करना नहीं आता। जिसको दूसरों से प्रेम करना नहीं आता, वह ईश्वर से भी प्रेम नहीं कर सकता। पहले प्रेम बाहर में बढ़ाओ। गुरू से प्रेम करो, अपने सगे-सम्बन्धियों से प्रेम करो ताकि तुम्हारे में एक आदत पैदा हो जाये कि प्रेम किसको कहते हैं। फिर इश्केमजाज़ी को इश्केहकीकी में बदल दो। नीचे से उठे ऊपर कर दिया। पहले मन बाहरमुखी था फिर अन्तरमुखी हो गया। वही प्रेम अन्दर जाकर सद्‌गुरू को मिला देगा। कबीर साहिब कहते हैं आपने पिया को अन्दर मिलना है आज बहुत भला दिन है। जिस दिन आपको पिया से मिलने की तड़फ पैदा हो गई वही दिन भला है। कौन से पिया को? मैं कौन हूँ, मैं कहाँ से आया हूँ? जो 'मैं' है उसका भेद पता करना है कि वह 'मैं' क्या है? वह मालिके-कुल की अँश है। वह तुम्हारी सूरत है। वह जागृत-अवस्था है उसके पहले वाली शारीरिक अवस्था नहीं है। न वह मन की अवस्था है, न वह आत्मा की अवस्था है बल्कि वह तुम्हारी अपनी अवस्था है। कबीर साहिब ने तीन शब्द लिखे हुए हैं -

कर नैनं दिदार, महल में पियारा है।

फिर लिखा –

कर नैनं दीदार, पिंड मझारा है।
सूरत नैनं अभार, अंड के पारा है॥

तू सूरत की आँख को खोल, वह तेरे मन के परे है। हम तो सदा मन में खेलते हैं। हम तो सदा इन आँखों से उस को देखते हैं। हम इन कानों से उसको सुनना चाहते हैं। इस जुबान से उसकी तारीफ करना चाहते हैं। हम इन हाथों से उसको छूना चाहते हैं। अब क्या यह मुमकिन है? पहले कहा शरीर में, फिर कहा, पिंड में है, उसके बाद कहा अंड से पार है। यह मस्तिष्क अंड है और वह इससे भी पार है। लेकिन हम क्या हैं? मैं कहता हूँ वह इंसान सबसे बड़ा भाग्यशाली है, जिसको सद्‌गुरू मिल गया, दूसरा इन्सान वह भाग्यशाली है जिसने सदगुरू की बात को सुनकर समझ लिया। तीसरा भाग्यशाली वह है जिसने समझ कर उस पर चलना आरम्भ कर दिया। चौथा सबसे बड़ा भाग्यशाली कौन है? जिसने सद्‌गुरू की बात को समझकर अपनी वासनाओं का अन्त कर दिया। जिसकी कोई इच्छा ही नहीं रही वह सबसे बड़ा भाग्यशाली है। वह सूली पर भी चढ़ने को तैयार हो जाता है। जब कोई सूली पर चढ़ता है तो उससे पूछते हैं तेरी कोई इच्छा तो नहीं है। कबीर साहिब ने कहा है– **'सूली ऊपर सेज हमारी'** वहाँ पर कोई इच्छा नहीं रहती। तब तक इन्सान इच्छा से मुक्त नहीं होगा। तब तक वह परमपद को प्राप्त नहीं कर सकता।

मैं एक और बात कहना चाहता हूँ कि इन्सान के मन से वह इच्छा भी मिट जायेगी कि मैं उसको मिलना चाहता हूँ। इच्छा मन में है जब मन ही नहीं रहा तो फिर बाकी क्या रह गया –

जो पिय मिलन की चाह, कौन तेरे लाज है।
अधर मिलो किन जाय, भला दिन आज है॥

लाज तो तब होगी जब मन होगा। जब मन ही नहीं है तो लाज भी नहीं होगी। वहाँ कुछ नहीं रहा, वहाँ केवल तुम रह गए–

भला बना संजोग, प्रेम का चोलना।
तन मन अरपौं सीस, साहे हँस बोलना॥

वह साहेब हँस कर कब बोलेगा? जब तन, मन अर्पण सीस तब वह साहेब हँस कर बोलेगा। यह चोला (शरीर) मिला बहुत बढ़िया मिला। क्या हम इसको बलिदान करने के लिए तैयार हैं। क्या हम इसको गुरू को अर्पण के लिए तैयार हैं? मन को अर्पण करने के लिए तैयार हैं? (तीसरा सीस) सीस का मतलब तेरे मन के अन्दर जितने विचार, संस्कार हैं क्या वह तू अर्पण करने को तैयार है। जब तू यह सब अर्पण कर देगा तब तेरा सद्‌गुरू तेरे संग हँस कर बोलेगा।

आपने राजा जनक का नाम सुना होगा। कहते है राजा जनक विदेह गति में रहते थे। एक बार राजा जनक सो रहे थे। उस समय बिजली नही होती थी। पंखा झलने के लिए नौकर होते थे। वह गहरी नींद में सो रहे थे तभी उनको स्वप्न आ गया। स्वप्न में वे देखते हैं कि राजा जनक भूखा है, कपड़े फटे हुए हैं। वह दर–दर रोटी माँग रहा है। उसने पाँच–सात घरों से रोटी माँगी पर उसे रोटी नहीं मिली। एक और ने कहा बच्चा तू ठहर, मैं तेरे लिए रोटी लाती हूँ। वह अन्दर से रोटी–सब्जी लाई और उसके हाथों पर रख दी। जब वे रोटी खाने लगे तो ऊपर से एक पक्षी आया और उनकी रोटी छीन कर भाग गया। जब पक्षी रोटी पर झपटा तो राजा जनक की आँख खुल गई। जैसे ही आँख खुली तो उसने देखा अरे! मैं तो राजा हूँ और स्वप्न में मेरी यह हालत थी। यह मैंने कैसा स्वप्न देखा। उन्होंने दरबार में जाकर पूछा जो मैंने स्वप्न में देखा वह सच था या यह सच है? सब बोले महाराज जी वह तो एक स्वप्न था। राजा ने कहा नहीं, मुझे तसल्ली नहीं हुई। फिर उसने ऋषियों–मुनियों को दरबार में बुलाया और उनसे भी वही प्रश्न

किया। सब बोले आप तो एक महान राजा हैं वह तो कुछ भी नहीं था, केवल स्वप्न था। राजा को फिर भी तसल्ली नहीं हुई।

इतने में वहाँ अष्टावक्र ऋषि आए और बोले, राजन ये ऋषि-मुनि तेरे सवाल का जबाव नहीं दे सकते। मैं तेरे सवाल का जबाव दूँगा मगर मेरी एक शर्त है। राजा बोला कहिए महाराज मैं आपकी हर शर्त पूरी करूँगा। बताओ क्या सवाल करने वाला बड़ा होता है या जबाब देने वाला बड़ा होता है। राजा बोला महाराज सवाल करने वाला छोटा और जबाव देने वाला बड़ा होता है। अष्टावक्र बोले आप तो सिंहासन पर बैठे हैं और मैं यहाँ खड़ा हूँ। मैं तुम्हारे सवाल का जबाव क्यों दूँ। राजा ने सिंहासन छोड़ा और उनके चरणों में बैठ गया और बोला महाराज आप सिंहासन पर विराजमान होइए। ऋषि सिंहासन पर बैठ गए और राजा बोले, अब आपने मेरे सवालों का जबाव देना है। ऋषि बोला कि मैं तेरे सवालों का जबाव दूँगा जब तू मुझे कुछ अर्पण करेगा। राजा बोला आप मेरे इस सवाल का समाधान करो आप जो कहेंगे मैं वही करने को तैयार हूँ।

ऋषि बोला, अच्छा! बैठ जा अपना शरीर मुझे अर्पण कर दे। राजा चौकड़ी लगाकर बैठ गया और इशारा कर दिया कि हजूर यह शरीर आपका। ऋषि ने कहा कि अब इस शरीर पर तेरा कुछ भी अधिकार नहीं है। अब यह शरीर मेरा है। अगर मैं कहूँ कि ऊँगली उठा तो तू उठायेगा। अगर मैं कहूँ कि आँख खोल तो तू खोलेगा। अगर मैं कहूँ कि खड़े हो जा तो तू खड़ा हो जायेगा। मैं कहूँ तो तू चलेगा। राजा ने कहा ठीक है जैसा आप कहो मैं वैसा ही करूँगा। ऋषि बोले अब दूसरे नम्बर पर तू अपना मन भी मुझे दे दे। अब तू मन में कोई विचार नहीं रखेगा। लेकिन मन तब तक नहीं जाता जब तक मन के अन्दर वह धन, सम्पत्ति, राजपाट है। ऋषि बोले कि राजन तू मुझे अपना मन नहीं दे सकता। पहले तू राजपाट, धन-सम्पदा सब अर्पण कर। ठीक

है महाराज! मैं राजा नहीं हूँ, मैं भिखारी हूँ, मैं आपका सेवक हूँ, मेरा किसी पर कोई अधिकार नहीं है। जब मन दे दिया तो बाकी क्या रह गया? बस अन्दर प्रकाश हो गया। राजा को बताया कि राजन वह तेरे मन का खेल था और कुछ भी नहीं था। यह दुनिया भी तेरे मन का खेल है और कुछ भी नहीं है। इस मन, शरीर और सीस से परे; इस सूक्ष्म और स्थूल से परे एक कारण दुनिया है वहाँ न वो है, न ये है, वहाँ न जागृत है, न स्वप्न है। राजा को ज्ञान हो गया। यही बात कबीर साहिब कह रहे हैं कि वहाँ है, साहिब जहाँ मन नहीं है।

मेरे सद्गुरू परमदयाल जी महाराज बार-बार यही फरमाया करते थे- अरे, शरीर के अहसास छोड़ो, आत्मा के अहसास भी छोड़ो, आगे सद्गुरू खड़ा है लेकिन हम कभी भी इन तीन से आगे जाने की कोशिश ही नहीं करते। स्वामी जी महाराज ने कहा है-**तीन छोड़, चौथा पद दीन्हा।** शरीर, मन और आत्मा। शरीर, मन और सीस। सीस क्या है? सीस प्रकाश है, प्रकाश से आगे हमारा साहिब है। यह सत्संग मैं आपको नहीं अपने-आपको दे रहा हूँ। उसका कारण है अगर मैं उस पर चलूँगा तो जो मेरे सम्पर्क में आयेगा उस पर असर नहीं होगा। अगर मैं ही नहीं चलूँगा तो तुम पर क्या असर होगा। यही तो मेरे सद्गुरू बार-बार कह गए, ऐ इन्सान! वह सच्चा साहेब तेरे अपने घर में हैं और वह सब कुछ है। जब सद्गुरू मिल गया तो बाकी क्या रह गया? वह तुम्हारी सम्भाल ऐसे करता है जैसे एक माँ छोटे बच्चे की करती है। यही कबीर साहिब कह रहे हैं-

जो गुरू रूठे होय, तो तुरत मनाइये।
हुइये दीन अधीन, चूक बकसाईये॥

गुरू कभी रूठता नहीं है, वह गुरू ही क्या जो रूठ गया। गुरू को किसी से कोई लेना नहीं, वह तो खुद ही शहँशाह होता है। उसको तो किसी बात की कमी नहीं। वह रूठे तो तब, जब उसकी कुछ लेने की

इच्छा हो और वह तुम लेकर नहीं आए। गुरु को कुछ नहीं चाहिए। गुरू के पास धन है नामरत्न का। वह दुनिया की बातों को नहीं देखता। कबीर साहिब अन्दर के गुरू की बात कर रहे हैं। वह गुरू जो तुम्हारे अन्दर बैठा है मैं उसके बारे में तुम्हें बताता हूँ। आप सत्संग में जाते हैं वहाँ पर आपने गुरू को अपना रहबर (रास्ता बताने वाला) माना। बाबा सावन सिंह जी महाराज ने तो यह भी कह दिया तुम गुरू न मानकर अपना भाई ही मान लो, चाचा मान लो। प्रेम ही पैदा करना है। कुछ मानोगे तभी प्रेम पैदा करोगे। जब तुम मानोगे नहीं तो प्रेम कैसे पैदा होगा? पहले शरीरधारी से प्रेम करना सीखो। उसके पास बैठो, उसकी Radiation प्राप्त करो। उसका वचन सुनो तब तुम्हारे अन्दर एक जज्बा पैदा होगा एक श्रद्धा पैदा होगी। उसके बाद जब तुम सिमरन करोगे, ध्यान करोगे तब त्रिकुटी में तुम्हें उस सद्‌गुरू के दर्शन प्राप्त होंगे। वह निर्गुण सद्‌गुरू है। तुम्हारी सब मनोकामनाएँ पूरी होगी, बशर्ते कि तुम्हारा मन साफ हो। अगर मन साफ नहीं है फिर तुम बुरा सोचोगे तो बुरा भी हो जायेगा। इसीलिए कहा है–

दिल का हुजरा साफ कर, जाना के आने के लिए।
ध्यान गैरों का हटा, उसको बैठाने के लिए॥

किसी के भी प्रति ईर्ष्या, द्वेष, नफरत नहीं होनी चाहिए। तब ध्यान करोगे तो सद्‌गुरू की मूर्ति अन्तर में आयेगी। फिर तुम्हारा मन प्रबल हो जायेगा। जो सोचोगे वह अपने-आप होता जायेगा तुम्हें करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। वह गुरू सर्वव्यापक है। अन्तर में अभ्यास करते-करते हम छः यंत्रों को पार करते हैं। छः चक्र हमारे शरीर के हैं। सद्‌गुरू द्वारा बताये गए रास्ते को अपनाते हुए, उसका सिमरन करते हुए, उसका ध्यान करते हुए मन को एकाग्र करते हुए। मन की सीमाओं को पार करते हुए हम प्रकाश और शब्द में पहुँच जाते हैं। प्रकाश और शब्द में पहुँचने के लिए हमें रास्ते में कई रुकावटें आती

हैं। मन कभी कुछ चाहता है, कभी कुछ चाहता है। मन से जन्म-जन्म के संस्कार निकलते हैं, जैसे– मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ–आप एक कोई भी गुलाब या गेंदे का फूल ले लो। उसकी एक-एक पत्ती उठाते जाओ। जैसे-जैसे पत्ती उठाते जाओगे तुम्हारे पास सुगन्धि ज्यादा आती जायेगी। फिर तुम्हारे हाथ में भी वह सुगन्धि आ जायेगी। ऐसे ही जब हम मन को कुरेदते हैं फूल की पंखुड़ियों की तरह। जहाँ जन्म-जन्म के संस्कार, ख्याल, तस्वीरें उठनी हैं, उस वक्त उनको काटना हमारी बहादुरी सामने आती है। अगर हम उसको नहीं काटते, उसमें बह जाते हैं तो वह हमारे पिया-मिलन में बहुत बड़ी रुकावट है और पिया रूठ जाता है। मैं इसको पिया का रूठना समझता हूँ। जब तुम सभी मंजिलों को पार कर जाओगे तब पिया नहीं रूठेगा।

जो गुरू होय दयाल, दया दिल हेरि हैं।
कोटि करम कटि जायँ, पलक छिनफेरि हैं॥

जब गुरू दयाल हो जाता है तब कोई रूकावटें नहीं रहती। महापुरुष कहते हैं कि तुम उसकी तरफ एक कदम उठाओ, गुरू तुम्हारी तरफ दस कदम उठाता है। मैंने इसको सुना नहीं बल्कि अनुभव किया है। जिसके लिए तुम चले हो वह तुम्हारा इन्तजार पहले ही कर रहा है। वह तुम्हें पकड़ कर ऊपर खींच लेगा। वह तुम्हें नीचे नहीं रहने देगा क्योंकि तुम उसके हो गए हो। तुम वहाँ पहुँच जाओगे। जो वहाँ पहुँच गया उसके सभी कर्म कट जाते हैं। तुम मन की दुनिया से निकल गए। कर्म तो मन की दुनिया में हैं। कर्म शब्द और प्रकाश में नहीं है। अगर तुमने भारत में कोई अपराध किया और दूसरे देश में भाग गए। वहाँ पर तुम्हारे ऊपर दूसरे देश का ही कानून लागूह ोगा।भ ारतक ाक ानूनल ागून हींह ोगा।ए ेसाम ेरेस द्गुरू परमदयाल जी महाराज फरमाया करते थे। अगर हम मन की दुनिया से निकल गए तो कर्म कहाँ रहा। कर्म का सम्बन्ध तुम्हारे मन से है,

इच्छा से है, वासना से है। जब मन ही नहीं रहा तुम प्रकाशमय हो गए, वहाँ कोई कर्म नहीं रहा।

कहै कबीर समुझाय, समुझ हिरदे धरो।
जगन जुगन करो राज, अस दुर्मति परिहरो॥

कबीर साहिब कहते हैं– समझ को अपने हृदय में धरो। जो कहा है इसको पकड़ो। कबीर साहिब कह रहे है– उस पल-पल को प्राप्त करने के लिए तुम उस रास्ते पर चलो जहाँ फिसलन बहुत है। तुम ऊपर चढ़ने के लिए गिरोगे क्योंकि तुम्हारे संस्कार तुम्हें आगे जाने नहीं देंगे। तुम गिरो-उठो, गिरो-उठो, एक दिन तुम वहाँ पहुँच ही जाओगे। इस बात को हृदय में बैठाओ। क्योंकि इसी बात ने तुम्हारा साथ देना है। आगे कबीर साहिब कहते हैं– दुर्मति को निकाल दो। बुरे ख्याल, कमज़ोर ख्याल, Negative ख्याल, ईर्ष्या के ख्याल, द्वेष के ख्याल, नफरत के ख्याल, शत्रुता के ख्याल निकाल दो। यही मेरे सद्गुरू परमदयाल जी महाराज फरमाते थे। यही हमारे रास्ते के सबसे बड़े शत्रु हैं।

तुम अभ्यास में बैठ जाओ। तुम यह सोचो कि मैंने आज सिर्फ Positive ख्याल लेना है, मैंने सबका भला सोचना है। सबसे पहले मेरा परिवार सुखी रहे। मेरे मिलने वाले सुखी रहे, मेरे रिश्तेदार सुखी रहें, मेरे पड़ोसी सुखी रहें। जब तुम पड़ोसियों तक पहुँचोगे तो तुम्हारा भला कहना बन्द हो जायेगा। तुम्हारे मन में उस वक्त दुर्मति पैदा होगी। तुम सोचोगे कि मैं तो इसके लिए भला सोच रहा हूँ इसने तो मेरे लिए यह किया। तुम्हारा मन तब नयी दुनिया बना लेगा या तुम्हें नींद आ जायेगी। ऐसा मैंने करके देखा है इसीलिए मैं कह रहा हूँ। मैं अपना अनुभव कह रहा हूँ। मैं इस मन के साथ बहुत लड़ा हूँ। परमदयाल जी महाराज की संगत में रहकर तब जाकर इस भेद का पता लगा।

महापुरूषों ने ठीक कहा कि दुर्मति को पहले हटा दो। जब तक दुर्मति नहीं जायेगी सुमति नहीं आयेगी। तब सुमति आयेगी फिर सुमति में खेलो, दुनिया बनाओ, नेक दुनिया बनाओ, अच्छी दुनिया बनाओ, शाँत दुनिया बनाओ। सुखमय बनो सुमति कहते हैं कि समृद्धशाली बनो, तुम्हें कोई कमी न रहे दुनिया को भोगो। जब तुम्हें असलीयत का पता लग जायेगा तो तुम्हें सुमति भी छोड़नी पड़ेगी। फिर दुमति और सुमति से तुम आगे निकल जाओगे। न वहाँ पाप, न पुण्य, न वहाँ अच्छाई, न बुराई। फिर तुम शहँशाह बन गए। फिर तुम युगों-युगों तक राज करोगे। वहाँ परिवर्तन नहीं होगा। न वहाँ सुमति है, न कुमति है, न वहाँ अच्छाई है, न बुराई है, न वहाँ दुःख है, न वहाँ सुख है। वहाँ तो शहँशाह ही रहते हैं। **'चाह गई चिन्ता मिटी'** चाह अच्छाई की भी हो सकती है, चाह बुराई की भी हो सकती हैं। तुम अच्छा भी सोच सकते हो, तुम बुरा भी सोच सकते हो। **'चाह गई चिंता मिटी'** न अच्छी चाह रही न बुरी चाह रही। फिर चित्त को कुछ भी नहीं चाहिए वह शाहों का शाह। तुम राजा बन गए। किसके राजा? अपने राजा। यही तो पद-निर्वाण है। इसका ही जिक्र कबीर साहिब ने पहली लाइनों में किया है–

चल सतगुरू की राह, ज्ञान बुधि लाइये।
कीजे साहेब से हेत, परम पद पाइये॥

जब तुम हेत नहीं करोगे, परम पद कैसे मिलेगा? परम पद तब मिला जब दुर्मति भी चली गई और सुमति भी चली गई। नेकी भी चली गई और बदी भी चली गई। जो अपना था वह पराया हो गया, जो पराया था वह अपना हो गया। सुबह जब मैं अभ्यास में बैठने लगा तो सामने कबीर साहिब की किताब पड़ी थी। मैंने उसे उठाया और सोचा जो आज पहला शब्द होगा वही पढूँगा तो ये शब्द निकला। आप मानो या न मानो आपका भला, लेकिन जो ड्यूटी मेरे दाता ने मुझे दी

या मैंने जो प्रण किया था कि दाता मैं तेरी तालीम को सारी ज़िन्दगी फैलाऊँगा। मैं नि:स्वार्थ होकर वह अपनी ड्यूटी करता हूँ कि ऐ इन्सान जो मैंने समझा वह तुम्हें बताता हूँ। जब तक तुम तन, मन, सीस अर्पण नहीं करोगे तुम वहाँ नहीं पहुँच सकते। वहाँ जाने के लिए कोई आता नहीं, आपको दुनिया चाहिए। दुनिया का अंत करने के लिए दाता ने बहुत अच्छा नुस्खा दिया। दुनिया माने या न माने उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी।

उन्होंने कहा कि वह एक मालिक है, परमतत्व है। तुम जो चाहे मर्ज़ी उसको कहो, God कहो, अल्लाह कहो, खुदा कहो, परमात्मा कहो, ईश्वर कहो जो मर्ज़ी नाम दो। मगर उसका एक नाम रखो और एक को ही मानो। यह नहीं कि आज यहाँ भागे, कल वहाँ भागे। कहते हैं लुढ़कते हुए पत्थर पर मिट्टी नहीं जमती। जो पत्थर एक जगह जम गया उस पर मिट्टी जमती है। ऐसे ही एक का सहारा लो। भगवान शिव को मानो, भगवान राम को मानो, भगवान श्रीकृष्ण को मानो, लेकिन उसको यह मत समझो राम दशरथ का बेटा था। भगवान् श्रीकृष्ण को यह मत मानो कि श्रीकृष्ण गोकुल में पैदा हुए और गोपियों के संग खेलते थे। उसको परम-तत्व मानो और एक को मानो।

उसका नाम रख लो, उसके नाम का सिमरन करो और उसका ध्यान करो कि वही सब कुछ है और कुछ भी नहीं है। जब तुम उसका ध्यान करोगे तुम्हारे अन्तर में तुम्हें उसके दर्शन हो जायेंगे। इसका मतलब यह नहीं कि वह आ गया। तुम्हारे मन ने उसे पैदा किया। जिस मन ने उसको पैदा किया फिर उसमें हर चीज़ को पैदा करने की शक्ति आ जाती है।

'जो-जो माँगे, सतगुरू अपने से सोई-सोई देवे'

परमदयाल जी महाराज कहा करते थे- सद्‌गुरू या इष्ट का ध्यान करने वाला कभी गरीब नहीं रह सकता। उसकी गरीबी दूर हो जायेगी, उसकी मनोकामनाएँ पूरी हो जायेंगे। अगर तुम दुनिया बनाना चाहते हो तो वह नुस्खा भी मेरे दाता ने तुम्हें दे दिया। तुम उस परम-पद को प्राप्त करना चाहते हो तो कबीर साहिब की वाणी व परमदयाल जी महाराज को साक्षात् मानकर तुम्हें बता दिया कि उसको प्राप्त करने का तरीका क्या है।

तुम्हारा भला हो। आप दूर-दूर से आते हैं। मेरे पास देने को तो कुछ नहीं है। मैं शुभकामना जरूर देता हूँ कि तुम्हारी सब मनोकामनाएँ पूरी हो। जिस इच्छा को लेकर आते हो, तुम्हारी वह इच्छा पूर्ण हो।

सबको राधास्वामी !

●

सूचना

सभीद ानीस ज नों,स त्संगियोंस`अ नुरोधह ै किज ोध ानराशि मानवता मन्दिर, होशियारपुर में भेजना चाहते हैं, उनकी सुविधा के लिए हम Punjab Natonal Bank, Hoshiarpur के दो Account Numbers दे रहे हैं। इच्छुक सत्संगी Faqir Library Charitable Trust A/c No.– 02060001000-57805, IFSC Code–PUNBoo20600 और Manavta Mandir Hoshiarpur A/c No. 0206000100209756, IFSC Code–PUNB0020600 में जमा करवा सकते हैं। कृपया जो भी राशि जमा करवायें उसकी रसीद की एक कॉपी अपने पत्र के साथ मंदिर कार्यालय में भेज दें अथवा सूचित कर दें, ताकि दानियों की सूची में उनका नाम प्रकाशित किया जा सके तथा रसीद भी भेजी जा सके।

सचिव

फ़कीर लाईब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट, होशियारपुर।

आभार प्रदर्शन

निम्नलिखित सज्जनों ने मानवता मन्दिर होशियारपुर में सहयोग राशि भेजी है। परमपूज्य परमदयाल जी की परमकृपा इन सज्जनों और इनके परिवारों पर सदैव बनी रहे। ट्रस्ट इनके प्रति अपना आभार प्रकट करता है। – सचिव

S. NO.	DONOR	AMOUNT
1.	HH. Dayal Kamal Ji Maharaj's Family Members	22700/–
2.	Sh. J. C. Gupta – U. K.	15,00,000/–
3.	Sh. Navdeep Maan – Australia	1,04,390/–
4.	Sh. Bansidhar Sharma – Ludhiana	1,01,111/–
5.	Sh. Ashwani Kumar – U.S.A.	50,610/–
6.	International Tractors Ltd. – Hoshiarpur	51,000/–
7.	Rana Bajran Bahadur Thakur–Canada	25,000/–
8.	Jarnail Singh – Malsian	20,000/–
9.	Sudesh Rai Bhatti – U. S. A.	20,000/–
10.	In memory of Late Smt. Shakuntla Mehta – Delhi	15,529/–
11.	Sanjeev Joshi S/o P. D. Joshi– Hoshiarpur	16,500/–
12.	Virendra Jeed – Adampur Doaba	12,000/–
13.	Dr. Rinki – U. S. A.	15,000/–
14.	Major Devinder Singh – Panchkula	11,000/–
15.	Rajesh K. Hirandani – Mumbai	11,111/–
16.	Babu Lal – Khairgaon (Nagpur)	11,000/–
17.	Prem Lata Gupta–Delhi	11,000/–
18.	Gurdyal Kaur – U. K.	11,000/–
19.	Lalit Bagga – Adampur Doaba	11,000/–
20.	Jagjeet Singh – U. S. A.	11,000/–
21.	Deepak Khurana – Alwar	11,000/–
22.	Chiman Lal Saneja – Sirsa	10,000/–
23.	Padma Sharma – Delhi	10,000/–
24.	Jagwant Devi – Khuniara (H. P.)	8000/–

25.	Ajit/ Romesh/ Ajay Kumar –U. S. A.	6204/–
26.	Ach. Chhote Lal Ji – New Delhi	5100/–
27.	Sarabjit Kaur/ Gurmail Singh – Tanda Urmar	5100/–
28.	Ach. Jyoti Rani – Hyderabad	5000/–
29.	Surinder Singh – Batala	5000/–
30.	Godavri Devi – Bhiwani	5000/–
31.	Sucha Singh – Batala	5000/–
32.	Om Tyagi – Noida	4500/–
33.	T. R. Sharma – Shimla	4000/–
34.	Gurmeet Singh – Adampur Doaba	3570/–
35.	Lalita Moudgil – Jaipur	3100/–
36.	Meetali Sharma – Ludhiana	3100/–
37.	Baldev Ram – Hoshiarpur	3100/–
38.	Nisha Bhatnagar – Hissar	3100/–
39.	Prem Paul/ Mohindri Devi – Adampur Doaba	3300/–
40.	Gayatri Medical Store – Modinagar	3100/–
41.	Gurdev Singh – Jhawan	3000/–
42.	Ex. Hav. Krishan Gopal – Shahdra	2600/–
43.	Ach. K. L. Aggarwal Ji – New Delhi	2500/–
44.	Anil Chaudhary – Billari	2500/–
45.	Kalu Ram – Sheikhupur	2500/–
46.	Devinder Kumar Garg – Noida	2500/–
47.	Yog Ram Sharma – Chandigarh	2700/–
48.	Sat Prakash Khullar – U. K.	2100/–
49.	Dasondha Singh Bhamra – U. K.	2100/–
50.	Jai Dayal Khurana – Alwar	2100/–
51.	A. N. Roy – Mumbai	2100/–
52.	Smt. Shama Devi – Hoshiarpur	2100/–
53.	Murti Devi – Meerut	2100/–
54.	Yudhvir Singh – Hissar	2100/–
55.	Phulwati–Sabherwal	2100/–
56.	Ach. Manoj Tyagi – Saharanpur	2100/–
57.	Vipan Kumar – Moradabad	2100/–
58.	Satwinder Singh – Hoshiarpur	2100/–
59.	Romeshwar Prasad – Batala	2100/–
60.	Deendayal – Bikaner	2000/–
61.	Tarsem Singh – Canada	2000/–
62.	Ganesh C. Kaushal – Adampur Doaba	2000/–
63.	Sarwan Kumar – Gagret	2000/–
64.	Satpal Goel – Zira	2000/–
65.	Surjit Kaur – Hoshiarpur	2000/–
66.	Satya Devi – Hoshiarpur	2000/–
67.	Virender Kumar / Kiran Sharma – Ludhiana	2000/–

68.	Nand Singh– Harchowal	1750/–
69.	Om Cloth House – Pallia	3000/–
70.	Birbal Kaundal – Bara (HP)	1500/–
71.	Khanna & Family – Naya Nangal	1500/–
72.	Surinder Kaur – Jaito Sarjan	1500/–
73.	Onkar – Dhareda (H. P.)	1500/–
74.	Amar Chand Bhatia – Amritsar	1200/–
75.	Geetanjali Gupta – Hoshiarpur	1111/–
76.	Anand Kakkar – Jalandhar	1100/–
77.	Gian Chand – Nawan Shahar	1100/–
78.	Ajit Singh Pathania – Lamin (H. P.)	1200/–
79.	Hardyal Singh	1100/–
80.	Gurmeet Kaur– Adampur Doaba	2200/–
81.	Kuldeep Sharma – Batala	1100/–
82.	Jagan Nath Khurana – Alwar	1100/–
83.	Ex.-Sub. Maj. Karam Singh– Passi Kandi	1100/–
84.	Yamuna Devi–Malmajara	1100/–
85.	Virendar Kumar – Kangra	1100/–
86.	Dr. Battu Singh – Alwar	1100/–
87.	Dr. Dilbagh Singh – Hoshiarpur	1100/–
88.	Ashish Kakkar – Jalandhar	1100/–
89.	Suresh K. Gularia – Bhin (H. P.)	1100/–
90.	R. K. Bhardwaj – Ludhiana	1100/–
91.	Babu Ram Thakur – Namhol	1100/–
92.	Vicky Thakur – Hoshiarpur	1100/–
93.	Vimal Nabh – Allahabad	1100/–
94.	Ram Bachan – Avsanpur	1100/–
95.	Ach. Niranjan L. Sharma Ji – New Delhi	1100/–
96.	Shakti Chand Sharma – Hamirpur	1100/–
97.	Bal Krishan Bhardwaj – Delhi	1100/–
98.	Ram Niwas Tanwar – Mohindergarh	1100/–
99.	Amar Singh Jakhar – Bikaner	1100/–
100.	Ravi – Sirsa	1100/–
101.	Ram Kumar Sharma – Chandigarh	1100/–
102.	Avtar Singh – Hoshiarpur	1100/–
103.	Dharam Pal – Teathera (H. P.)	1100/–
104.	Sharda Devi – Bajravel	1100/–
105.	Prem Dave Gandhi –Alwar	1100/–
106.	Ravi Engineers – Amritsar	1100/–
107.	Chadha & Family – Hoshiarpur	1100/–
108.	T. Aruna – Secunderabad	1100/–
109.	K. Chander Kant – Bodhan (A. P.)	1100/–
110.	Sunder Patale – Secunderabad	1100/–

111.	Keerti Rani – Nazamabad	1100/–
112.	Rajnish Rani – Bahadurgarh	1100/–
113.	Tarsem Chand – Naya Nangal	1100/–
114.	Hardyal Singh – Kathiari	1100/–
115.	Praveen Sareen – Jalandhar	1100/–
116.	Agam Jyoti Sethi – Ludhiana	1100/–
117.	Anandata – Hoshiarpur	1000/–
118.	Anand Singh – Lachowal	1000/–
119.	P. D. Joshi – Hoshiarpur	1000/–
120.	Tarlok Singh – Gwalior	1000/–
121.	Vipin Jain – Hoshiarpur	1000/–
122.	Gulshan Rai – Bhogpur	1000/–
123.	Lucky – Adampur Doaba	1000/–
124.	B. S. Sharma – Jwalamukhi	1000/–
125.	Raghuwar Dyal & Sons – Amritsar	1000/–
126.	Brahm Singh Kotwal – Meerut	1000/–
127.	Mata Lajwanti – Harchowal	1000/–
128.	Kailash K. Sharma – Hoshiarpur	1100/–
129.	Surjit Singh Kalhon – Kalhawan	1000/–
130.	Satpal Devgan – Chheherta	1000/–
131.	Bhura Ram – Nanak Shri	1000/–
132.	Amar Singh – Bikaner	1000/–
133.	Ashok Kumar – Sheikhupur	1000/–
134.	Babli Chaudhary – Billari	1000/–
135.	K. L. Sharma – Baroda	1000/–
136.	Bhura Mal – Nangal Sirohi	1000/–
137.	Ram Chander – Nangal Sirohi	1000/–
138.	C. K. Shradhanand – Secunderabad	1000/–
139.	S. K. Sethi – Jalandhar	1000/–
140.	Dr. R. K. Anand – Ahiyapur	1000/–
141.	Surinder Jaswal – U. S. A.	1000/–
142.	Shashi Bala – Modi Nagar	1051/–
143.	Sanjiv Kumar – maur	800/–
144.	Mukesh Kumar Sharma – Jalandhar	700/–
145.	Samdar Singh – Jaipur	700/–
146.	Smt. Amarjit Kaur– Gwalior	600/–
147.	Ramesh Chand Pal – Hoshiarpur	600/–
148.	Jagmail Singh Sandhu – Ghuman kalan	600/–
149.	Lal Bahadur – Aligarh	551/–
150.	Abhishek Kumar – Hoshiarpur	501/–
151.	Manish Negi – Chalet	501/–
152.	M. L. Sharma – Dharamshala	501/–
153.	Arjun – Mahilpur	511/–

154.	Smt. Kamlesh– Chandigarh	501/–
155.	Ritu Sharma – Chandigarh	501/–
156.	Mr. Chopra – Hoshiarpur	501/–
157.	Ravi Khanna – Hoshiarpur	501/–
158.	Mrs. Purva Anand	501/–
159.	Brahm Shanker Jimpa – Hoshiarpur	500/–
160.	Rajita – Mohali	500/–
161.	Harshita Sharma – Hoshiarpur	500/–
162.	Anupinder Kaur – Patiala	500/–
163.	Dr. A. S. Thind – Kharar	500/–
164.	Ashok Khetarpal – Panchkula	500/–
165.	Sadhu Singh – Ranjit Bagh	500/–
166.	Ram Chand Bhandari – Jalandhar	500/–
167.	Kuldeeo Singh – Bhoma	500/–
168.	Surjit Singh Kalhon – Kalhawan	500/–
169.	Harbhajan Singh – Bhed	500/–
170.	Surinder Singh – Chandigarh	500/–
171.	Jai Kishan Agarjeet– Sirmour	500/–
172.	Agam – Adampur Doaba	500/–
173.	Gurmeet Singh – Nakodar	500/–
174.	Sultan Singh Rehar – Jhunjhunu	500/–
175.	Dr. K. Gur Prasad – Etawah	500/–
176.	Ganesh Dutt Sharma – Sinohi Kothi (H. P.)	500/–
177.	Shali Ram	500/–
178.	A. C. Vandana – Bhagalpur	500/–
179.	Ashok Kumar – Hoshiarpur	500/–
180.	Onkar – Jhareda (H. P.)	500/–
181.	Basant Kumar – Jaipur	500/–
182.	Pat Ram – Delhi	500/–
183.	Vishwamitter – Jaladnhar	500/–
184.	Sub. Maj. Harpal Singh – Noida	500/–
185.	Geeta Ram Garg – Ghial (H. P.)	500/–
186.	Geeta Ram Thakur – Namhol (H. P.)	500/–
187.	Yuvraj Singh – Jaipur	500/–
188.	Brij Mohan Agnihotri– Naya Nangal	500/–
189.	Kamaldeep – Una	500/–
190.	Ach. Bai Ji Harbans Lal – Jalal	500/–
191.	Sahib saran Dhir – Jalal	500/–
192.	Binder Dhir – Jalal	500/–
193.	Vishal Dhir – Jalal	500/–
194.	Baiti Dhir – Jalal	500/–
195.	Anand Prakash Dhir – Jalal	500/–
196.	Mata Dalip Kaur & Family – Bhadaur	500/–

197.	Swati Dhiman – Bathinda	500/–
198.	Amrit Pal Singh Dhiman – Bathinda	500/–
199.	Kiran Veer Singh – Ghuman Kalan	500/–
200.	Rajinder Pal Mangla – Badhni Kalan	500/–
201.	Amar Singh Pathi – Bhadaur	500/–
202.	Prem Kumari Srivastava – Ballia	500/–
203.	Ach. Sehja Nand Ji – Ballia	500/–
204.	Kahan Singh – Jaipur	500/–
205.	Nand Ram – Jaipur	500/–
206.	Jai Singh – Jaipur	500/–
207.	Sokhan Singh – Sheikupur	500/–
208.	Suresh Kumar – Chabarwal	500/–
209.	Amin Lal – Sheikhupur	500/–
210.	Geeta Singh – Moradabad	500/–
211.	Tej Ram – Hoshiarpur	500/–
212.	K. Laxman Rao – Hyderabad	500/–
213.	Budhawaria – Budhawar	500/–
214.	Kishan Lal – Delhi	500/–
215.	Ram Chand Bhandari – Jalandhar	500/–
216.	Smt. Santosh Kundra – Kartarpur	500/–
217.	Sita Ram – Avsanpur	500/–
218.	Smt. Sukshma Sharma – Hamirpur	500/–
219.	Kalpna Chaudhary – Billari	500/–
220.	Ravi Agencies – Amritsar	500/–
221.	Ravi Enterprises – Amritsar	500/–
222.	Yogeshwar – Mainpuri	500/–
223.	Ach. T. Devendra Singh – Hanamkunda	500/–
224.	T. Mohan Singh – Hanamkunda	500/–
225.	T. Kender Singh – Hyderabad	500/–
226.	Anil K. Aima – Jammu	500/–
227.	Ashok Raina – Jammu	500/–
228.	H. K. Mattoo – Jammu	500/–
229.	Sanjay K. Khatri – Pathiar	500/–
230.	B. Ramesh Pal – Bhikhiwind	500/–
231.	Prabh Dayal Malhotra – Amritsar	500/–
232.	A. Rameshwar – Delhi	500/–
233.	B. S. Sharma – Jwalamukhi	500/–
234.	Daljit Singh	500/–
235.	Rohit Kumar – Amritsar	500/–
236.	Gulshan Kumar – Bhogpur	500/–

●